रहती है, ताप आता है। हिस्टीरिया की बीमारी हो गई है। तुम चि० कमला से उसके पास पत्र जरूर लिखा भेजना। तुम भी लिखना।

श्री राजकुमारी (ऋषभदास राका की पत्नी) की सभाल तुम रखोगी, यह जानकर सतोष हुआ। यह लडकी बहुत गरीब है। इसने बहुत कष्ट उठाया है। सो सब प्रकार से प्रेम-मदद करना अपना कर्तव्य है।

ऋषभदास का पत्र उसे दे देना।

जमनालाल का वदेमातरम्

६७

साबरमती, ५-४-२९

प्रिय जानकी,

जालधर मे सभा ठीक हुई थी। अगर तुम साथ आती, तो तुम्हे नई बातें देखने को मिलती व सतोष भी होता। इस भ्रमण मे दो काम महत्व के और भी हो गये, जिससे थोडा बोझ कम हो गया। एक तो श्री रामनारायणजी रूइया की लड़की चि० सुशीला की सगाई लाहौरवाले सर शादीलालजी, चीफ जस्टिस के बड़े लडके से कर दी गई और दूसरे पू० मगनलालभाई गाधी की लडकी चि० रुक्मिणी का सबध कल यहापर चि० बनारसीलाल बजाज के साथ हो गया। यह विवाह इस वर्ष नही तो अगले वर्ष होगा। कल यह सबध करके बापूजी आध्र के लिए बबई रवाना हो गये। वर्धा मे गरमी ज्यादा पडने लग गई होगी। बीमारी (प्लेग) की भी थोडी गडबड तो है ही। इसलिए पहले निश्चित हुए कार्यक्रम के मुताबिक रामनवमी के दूसरे दिन तुम लोग रवाना होकर बबई आ जाओ।

चि० मदालसा व चि० रामकृष्ण की तबीयत ठीक होगी। धूप का ख्याल रखना। चि० गगाबिसन का स्वास्थ्य भी ठीक नही बतलाते। अब ठीक हो गया होगा। चि० राधाकिसन का कहना था कि पूज्य मा की इच्छा बदरी-नारायण जाने की बहुत है और मेरे साथ जाना चाहती है। सो इस वर्ष तो मेरा जाना सभव नही। अगर तुम मा के साथ जाने का विचार कर सको तो तुम व चि० राधाकिसन, लक्ष्मण रसोइया, चि० रामकृष्ण, एक नौकर, बाई केसर या गुलाब जाना चाहे तो जा सकते हो। विचार करके लिखना।

मेरा आने का प्रोग्राम अभी निश्चित नही हुआ है। या तो थोडे दिन यहा

उमा की पढ़ाई की व्यवस्था संतोषजनक हो गई, यह जानकर चिंता कम हुई। तुम चाहोगी तो वर्धा में सब व्यवस्था पूर्ण संतोषप्रद हो सकेगी। चि० कमल की अंग्रेजी की पढ़ाई पू० विनोबा ने शुरू कर दी, सो ठीक है। इससे तुम सबों-का संतोष रहेगा। चि० रुक्मिणीबहन के बारे में मैंने पू० बापूजी को लिख दिया है। उनकी जैसी इच्छा होगी वैसा करेंगे। वर्धा भेजना होगा तो किसी-के साथ वर्धा भिजवा देंगे।

मेरा वर्धा ता० २० तक पहुंचना होगा। यहां खद्दर भंडार जो ता० ८ को खुलनेवाला था, वह राज्य के कारण ता० ११ को खुलना निश्चय हुआ है। थोड़ा घूम-फिरकर देखने का विचार भी कर लिया है। पू० बापूजी तो बहुत जोर देकर लिख रहे हैं कि मैं यहां ज्यादा दिन रहूं। परन्तु बिना काम के मन नहीं लगेगा और तुम सब लोगों और बालकों के बिना देखने में विशेष आनन्द तथा शांति नहीं मिलती।

जमनालाल का वंदेमातरम्

७० :

(वर्धा)

(जवाब दिया ५-७-२९ को

पूज्यश्री,

पत्र आपका आया। राधाकिसन से मैं बहुत दिनों से लिखवाने का विचार कर रही हूं, पर आलस्य में दिन चले जाते हैं। अब हमने साथ रहने का तो निश्चय कर लिया है। साथ रहने से दुर्गुण चले जाते हैं व आपकी सारी आशाएं पूरी हो सकती हैं। अबकी बार आप आओगे तब आपका जी राजी हो जायगा। लड़कियों की पढ़ाई तो पूरी संतोषकारक हो रही है। पर बाबू को चार पाली एकांतरा बुखार आ गया, जिससे दिन बरबाद हो गये। डाक्टर की दवाई है। दो पाली गई। अब ४-५ दिन में आश्रम आना-जाना शुरू हो जायगा। आप निश्चित रहें।

बाबू की चिंता मत करना। अबकी बार काढ़ा देकर बुखार की जड़ मिटा देने का विचार है। एक-दो मास बराबर देंगे। माजी[1] के घर में बैठे रहने

---

[1] जमनालालजी की जननी बिरधीबाई।

से घर का रूप कुछ और ही हो जाता है। एक-दो बरस साथ रहने का स्वाद आ गया तो सदा के लिए निश्चिंत हो जायंगे। उमा को तीसरी में पास करके चौथी में बिठाया है। मदु ने और मैंने अंग्रेजी शुरू कर दी है।

कमला की मां

: ७१ :

वर्धा,

(जवाब दिया, ३-९-२९ को)

प्राणेश,

आपके समाचार राधाकिसन के पास आते रहते हैं। राधाकिसन से मुझे बहुत शांति मिलती है। जो यह रोना था कि घर के आदमी बिना घर कैसा, सो अब सब ठीक हो गया। मन को १२ आना शांति तो अंदर से मिलने लगी है। हां, थोड़ी कोशिश और करनी है सो दिवाली बाद मैं मास-दो मास आपके साथ चल सकती हूं। तब सब ठीक हो ही जायगा। आपको आजतक बहुत दु:ख दिया है, सो अब आपकी इच्छा पूरी हो जायगी।

यहां सब राजी है। आप प्रसन्न रहना।

कमला की मा का प्रणाम

: ७२ :

साबरमती, ३-९-२९

प्रिय जानकी,

तुम्हारा बिना तारीख-मिती का पत्र आज मिला। पढ़कर संतोष हुआ। चि० राधाकिसन के प्रति तुम्हारा प्रेम और समाधान देखकर सुख हुआ। मेरा तो विश्वास है कि अगर तुम चाहो तो अब उन्नति और विकास करते हुए आदर्श जीवन बिताने लायक अपनेको जरूर बना सकती हो। तुमने मेरी जो की है और मेरे सामाजिक, राजनैतिक व क्रांतिकारक विचारों में सहा- , वह मैं भूल नहीं सकता। हां, इस बात का मुझे अवश्य दु:ख रहा है पास इतनी साधन-सामग्री होते हुए भी तुममें उसका पूरा लाभ जाता। परमात्मा ने किया तो यह चिंता व दु:ख, जो मेरी से तुम्हारी ही उन्नति का बाधक रहा है, अब शीघ्र ही मिट जायगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

७३

साबरमती-आश्रम, १५-२-३०

प्रिय जानकी,

नानू जाट पहुंचा। तुम्हारा पत्र मिला। चि० उमा के बारे मे मेरे विचार तो तुम भली प्रकार जानती ही हो। फिर भी तुम्हे जहातक सतोष न हो और उचित नही मालूम हो, वहातक क्या किया जाये? मै समझता हू, चि० उमा की व्यवस्था मेरे वहा आने के बाद ही निश्चित करना ठीक रहेगा।

पू० बापूजी ने आजकल खूब उत्साह व जोर से लडाई की तैयारी कर रखी है। यहा का वातावरण जोश और उत्साह से भरा हुआ है। छोटे-छोटे बच्चो ने भी जेल जाने की इच्छा कर रखी है। तुम इस समय यहा रहती, तो तुम्हे भी बड़ा लाभ मिलता। अगर तुम्हारा उत्साह और इच्छा होती तो पूज्य बापूजी तुम्हारा नाम भी जेल की फेहरिस्त मे लिखा देते।

जमनालाल का वदेमातरम्

७४

बबई, २८-३-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम अब मेरे साथ रहकर काम करो। उसमे तुम्हे अधिक सतोष रहेगा। पू० विनोबा की परवानगी ले लेना और बाई केसर को लेकर आ जाना। चि० कमल अब ठीक हो गया होगा। चि० शाति को कृष्णा की अकाल-मृत्यु पर समवेदना का पत्र दे दिया होगा।

जमनालाल का वदेमातरम्

७५

नासिक रोड सेट्रल जेल, कैदी नं २१८१,
२१-६-३०

प्रिय जानकी,

बृहस्पतिवार को बाई केसरबाई, गुलाब वगैरा मिल गये। तुम्हारी व अन्य बहनो की दो बार थोड़े समय की गिरफ्तारी की बात जानकर बड़ा विनोद मालूम हुआ। अगर स्त्रियो की गिरफ्तारी शुरू हो जायगी तो तुम्हारा

नंबर भी जल्दी आ जायगा। तुम तो सब तरह से तैयार हो ही। तुम्हें कुछ समय के लिए जेल की दुनिया का अनुभव भी मिल सकता है, जानकी को मिलेगी। साथ ही, जेल में भी विशेष जोर व जागृति आवेगी।

तुम्हें समय मिलता हो तो जेल के रहन-सहन आदि के नियमों के बारे में पू० बापूजी की यरवदा के अनुभव तथा काकासाहब व राजाजी की लिखी हुई किताबें पढ़ना और जिन्हें जेल का अनुभव हो उनसे जानने का यत्न करना। बीच में तुम्हारी तबीयत खराब हो गई थी। अब ठीक है, ऐसा सुना। जहां तक तुम लोगों को बराबर काम करना पड़ता है, जहां तक तबीयत न बिगड़ने पावे, इसका पूरा ध्यान रखकर खानपान की अनुकूल व्यवस्था, बिना संकोच के भी साथ [illegible] के साथ सलाह करके कर लेना।

ईश्वर की अपने ऊपर पूर्ण दया व पूज्य बापूजी का आशीर्वाद है। तभी हम लोगों की इस प्रकार की बुद्धि हुई और सेवा करने का यानी अपनी कमजोरी कम करने का मौका मिला। तुम्हारी बहादुरी व हिम्मत देखकर मन में खुश होता हूं। मेरे स्वभाव की अनुदारता के कारण तुम जब-जब मिलती हो तब-तब तुम्हारे मुंह पर प्रशंसा की बात न करके तुम्हें हमेशा ही टोकने की बातें या तुम्हें विशेष रूप से जागृत करने के लिए तुम्हारी कमजोरियों के बारे में ही तुमसे कहा करता हूं। पर तुम इसका यह मतलब मत समझना कि मैं तुम्हें अपने से ज्यादा कमजोर समझता हूं। मुझे तो तुम्हारे बारे में व पूरे कुटुंब के बारे में पूरा संतोष है। तुम सबपर मुझे अभिमान है। मेरी यह इच्छा अवश्य है कि इस प्रकार के धर्मयुद्ध में हम लोगों में से सबकी या जो सबसे ज्यादा प्रिय हो, उसकी आहुति पड़ जाय तो वह हमारे लिए परम संतोष व सुख की बात होगी। एक दिन मरना तो है ही। फिर जिससे देश, जाति व कुल की प्रतिष्ठा बढ़े, वैसी पवित्र मृत्यु मिले तो फिर क्या कहना। अब तो जेल की मन में नहीं रही। अगर इच्छा है तो ऐसी मृत्यु की ही है। खैर, जो भावी होनी होगी, सो होगी। चिंता करने का समय नहीं है। अभी तो बहुत-से खेल खेलने और देखने हैं, ऐसा लगता है। भविष्य बहुत ही उज्ज्वल दिखाई देता है।

अगर तुम गिरफ्तार न हो और काम में अड़चन न पड़े तो आगामी ३ जुलाई, बृहस्पतिवार, को या एक-दो रोज आगे-पीछे चि० कमलनयन

व चि० शांता को लेकर मिलने आ जाना। आने का निश्चित समय यहा सुपरिंटेंडेंट को पहले से लिखकर भिजवा देना, जिससे मुझे मालूम रहेगा। प्रिय बहन गोमतीदेवी को कहना कि इधर की बिलकुल चिंता न रखें। यहा आने के बाद हम लोगों का स्वास्थ्य और मन बहुत ठीक हैं। थाने की जेल के मुताबिक ही यहापर भी अधिकारी-वर्ग हम लोगों को बहुत ही प्रेम व सम्मान के साथ देखते हैं। यहा तो काफी आश्रम-निवासी हैं। सब बहुत मजे में हैं। हा, गत सोमवार से हम लोगों ने 'सी' वर्ग का खाना शुरू किया है। अभी तक तो स्वास्थ्य बहुत ठीक रहता है। मेरे कब्ज की शिकायत एकदम मिट गई है। अपना स्वास्थ्य जरूर सम्भाल कर रखना। मोह-माया व हम लोगों की चिंता से स्वास्थ्य खराब करने का तुम्हें बिलकुल अधिकार नहीं है। चि० शांता के पत्र से तुम्हें हमारी दिनचर्या मालूम हो जायगी।

जमनालाल का प्रेमपूर्वक आशीर्वाद

७६

विलेपार्ले-छावनी
(जवाब दिया, २७-६-३० को)

प्राणेश,

शांतिबाई ने आज छावनी में आकर पत्र दिये। शांतिबाई दो-चार दिन यहा रहने को आयेगी। छावनी से बीस कदम पर भाड़े से घर लिया है। राजकुमारी और मृदु भी वहा रहती है। रात को कभी मैं सोने चली जाती हूं। मेरा और रिषभदासजी का खाना छावनी में होता है। रिषभदासजी छावनी में ही सोते हैं। उन्होंने जवाबदारी भी अच्छी ले रखी है। शांति-बाई भी वहीं रह जायेगी। भाड़ा, खाना-खर्च अपना ही लिखाती हूं।

हमारी जरा देर की गिरफ्तारी और . की खबर आप जान गये। अभी औरतों को पकड़ना मुश्किल है। जेल के बारे में दोबारा भाई समझानेवाले हैं। मेरी तबियत अब ठीक है। मेरी स्वार्थ की भावना ही मन को दुःख देती है, पर अब ठीक हो जायगी। और बाजा में तो हिम्मत बढ़ती जाती है। खाने-पीने का अब ठीक कर लूंगी। यहा छावनी में अनुभव का लाभ भी बहुत है। अगर सूरत की तरफ के आश्रम में रहती तो मेरा

पर वजन एकदम कम हो जायगा और कमजोरी व खांसी-वगैरह का भी डर है। परन्तु आप लोग तो सभी बहुत ही हिम्मत दिखाते हो। आपको मर्जी के इच्छानुसार ही मिलती जा रही है पर भी प्रभु की कृपा ही है। अपने कुटुंब के लिए सचमुच मन में तो अभिमान आता है, पर व्यवहार में प्रमाण नहीं पाती हूं। मैं तो अपने-आपको धन्य मानती हूं कि इस युग में सेवा-काम मिला। सिर्फ शिक्षा पढ़े-लिखे लोगों से सरकार चलाने वाली है और स्वराज्य जनता के हाथ में आनेवाला है। मैं तो मानती हूं कि इनको चलाने वाली जनता होगी, न कि विद्वान-धनवान लोग। इसलिए आप चुप न बैठे रहें।

मुझे टोकने के बारे में तो आप निश्चिंत रहिये। जिनपर पूरा विश्वास और अधिकार हो, उन्हें ही टोका जा सकता है। मैं तो गुलाबबाई से मजाक करती रहती हूं कि अब मैं मिलने नहीं आऊंगी। मुझसे हमेशा लड़ते हैं। पर हम सब लड़ते-लड़ते ही मरेंगे। मरने के बारे में, समय आयेगा, तब देखेंगे कि हंसना आता है कि रोना। भावी अच्छा होगा तो अच्छी मृत्यु होगी। दूसरे की चिंता करने का समय नहीं है, यह बिलकुल ठीक है।

कमलनयन को, जहां पास लड़ाई का सामना हो, वहीं भेजें तो कर्तव्य किये का संतोष हो। पर बंबई में यहां छावनी के अन्दर जगह कम है। बरसात के दिनों में मलेरिया हो जाने का भय है। जो ताप आ जाय तो मुझे पास जाने की इच्छा हो जाय। उसका शरीर थोड़े दिन से ही तो खानपान से व्यवस्थित हो पाया है। वह और विद्यापीठवाले छोटी उमर के चार लड़के हैं बापू की टुकड़ी के। वे चाहे सो करें। चारों वहीं हैं। उनसे मैं कुछ भी नहीं कहती हूं। गोमतीबहन बहुत ही हिम्मत और जवाबदारी से काम करती हैं।

· सचाई से काम करने से ईश्वर सहायता देता है। घर में खुराक इतनी

भी नही ले सकते थे, पर यहा ठीक चलता है। आपके सब पत्र मैंने पढे हैं। दिनचर्या आपकी बहुत मस्त है। मैं तो इतना कुछ नही करती हू। शाम को ९ बजे से पहले सोने से नींद पूरी होती है। गोमतीबहन भी कहती थी, देखना कमजोरी आ जायगी। रूखी रोटी तो अपनेको अनुकूल आनी मुश्किल है।

धर्मानंदजी कौसाबी की पुस्तक देखेंगे। पर मुझसे और मुझ-जैसी स्त्रियो से पुस्तक मुश्किल से पूरी होती है। वह यही रहते है। समय हो तो मदू का आधा घटा वर्ग लेते है। आपको नमस्कार कहा है उन्होने। वह सुपरिन्टेंडेंट को पत्र भिजवा देंगे। गोमतीबहन को सब पत्र पढा दिये। दिनचर्या का पत्र प्रार्थना में पढेंगे। 'टाइम्स' में छावनी की खबर देनेवाले है।

मदू को नर्मदा के साथ वर्धा जाने को कहा तो वह बोली, मैं तो यही मरुगी। कमला को दिनचर्या की नकल भेज देंगे।

कमला की मा का प्रणाम

७७

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२७-६-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र आज मिला। पढकर सतोष हुआ। चि० कमला का पत्र तुम्हारे नाम का पढा। उसे जवाब भेजा है, तुम उसे भेज देना। मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। गत मगलवार से ८ रतल वजन कम होने पर, दो रतल दूध और ५ तोले गुड़ लेने के लिए यहा के अधिकारियो ने मजबूर किया है। तुम लोगो की बजाय कम-से-कम मेरे लिए, अधिकारी मेरी चिंता ज्यादा रखते है, ऐसा अनुभव होता जा रहा है। तुम व श्री गोमती बहन हम लोगो के स्वास्थ्य के सबध में किसी प्रकार की भी चिंता नही करोगी, ऐसी आशा है।

चि० शाता मिले तो उसे भी हिम्मत और प्रेम-भरी सात्वना दिया करना। उसके मन पर चि० कृष्णा का वियोग तथा अन्य चिंता रहती है। शान्ता जैसी लडकी पर सच्चा प्रेम बढाने से तुम्हारे प्रेम की माया भी बढ़ जायगी।

चाहिए सो भी पूछा। उसीके साथ पत्र की पहुंच का जवाब दे दिया।

लालजी गिडवानी एक साल के आराम में गये। सरोज को पत्र दे दिया है। गगाबहन को भी दे दूगी। मैं कमल व शातिबाई ता० २ को नासिक पहुचेगे।

आपके बारे में अधिकारी लोगो का व्यवहार देखते हुए कोई चिंता की बात नही। गोमतीबहन हिम्मत तो बहुत रखती है। शरीर से कुछ कमजोर होने से चिता रहती है। मुझे अपना मुख्य स्थान तो छावनी में ही रखना है। यहा रोज सभाओं का काम चलता ही है। आज थाना में स्त्रियो की सभा है। कल चेंबूर में थी। दूसरी जगह रहकर काम करने की तो बिलकुल इच्छा नही है। वर्धा की तरफ जाने की जरूरत तो है। लेकिन पुरुषो की सभा में बोलना हो तो ज्यादा काम हो। सो जरा मन हिचकता है। खैर, देखेंगे। जैसा यहावाले हुक्म देगे वैसा करेंगे। कौसाबीजी के लिए लिखा, सो ठीक है। आपको रिषभदास उस सबध मे जवाब देगा। मैं दो वक्त छावनी में जीमती हू। वहा अब रसोई अच्छी होती है। घर पर मैं आम और शक्कर छोडकर कुछ भी खा सकती हू। इतनी छूट मुझे बहुत है। घर के कारण बालको को बहुत आराम है। मुझे भी बहुत सुभीता हो गया। बडे घर की जरूरत नही है।

गोमतीबहन तो छावनी का प्राण है। बहुत कठोरता से रहती है। क्या करूं, मुझे सकोच तो होता है, पर इतनी छूट नही होती तो मैं ज्यादा दिन नही रह सकती थी। कमल आ गया है, आपकी इच्छा हो सो आज्ञा करें।

पद्मराजजी जैन की बेटी इंदुमती ने सरकारी नौकरी छोडने की सलाह देनेवाली एक पत्रिका छपाई। इस कारण उसे ९ मास की जेल मिली। उसके लिए कलकत्ते में हड़ताल हुई थी।

कमला की मा

: ७९ :

नासिक रोड जेल,
७-७-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारे मिलकर जाने के बाद आजतक मैंने अनाज न खाकर दूध,

काफी, काढा ही पिया। बदहजमी व कब्ज की शिकायत को जड़
खाड़ने के लिए यही उपाय ठीक लगा। मित्र और अधिकारी मेरी पूरी
आ रखते हैं, यह तुमने देख ही लिया। तुम बिल्कुल चिंता न करना।
क्या तुमने वादरा में कल चर्खा-वर्ग खोल दिया? वल्लभभाई का पार्ले
भाषण अभी पढ़ने को नहीं मिला। शायद कल मिल जाय। चि० कमल
की इच्छा हो तो वह एक बार १०-१५ रोज के लिए हटुंडी (अजमेर) जा
सकता है। इस समय वहा की आवहवा भी ठीक होगी। उसके जाने से वहा
थोड़ा उत्साह आ जायगा। उसे कहना वह जरा अधिक सभ्यता व नम्रता का
व्यवहार करने का ख्याल रखे, क्योंकि अब वह सत्याग्रह-दल में पू० बापूजी
की टुकड़ी का स्वयंसेवक है। उसपर ज्यादा जिम्मेदारी है। उसे मुह से
एक-एक बात सत्य व तौलकर निकालनी चाहिए, जिससे आगे चलकर
वह जिम्मेदारी के साथ काम कर सके। आज 'टाइम्स' में श्री वल्लभभाई
के साथ जलूस में चि० व्यंकटलाल वद्रा की माता को भी पैदल चंपाबाई के
साथ चलते देखकर खुशी हुई। अब तुम्हारा नंबर कब आता है? तुम्हें
मथुरादासभाई के बाद खजांची बनना है। तैयारी कर रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

८०.

विलेपार्ले
१३-७-३

प्राणेश्वर,

आपका ता० ७-७-३० का पत्र मिला। अभी तक अनाज नहीं लि
सो ठीक है। वजन तो इस हालत में कम होनेवाला ही है। 'सी' क्ला
१९ कैदियों को थाना से विसापुर ले गये थे। वहा पार्ले की ४० स्त्रिया,
की १० और आसपास की ६० के करीब होंगी। तीन दिन लाइसेंस के
का काम बहुत असरदार हुआ। वादरा की पुलिस ने भूल की, पर य
पुलिस ने समझदारी से काम लिया। दरवाजे पर झंडा, राष्ट्रीय गाय
कुछ चलने दिया। ७ बजे सुबह से शाम तक एक समान जुलूस देख
यही कहा कि स्त्रियों ने कमाल कर दिया।

आपने लिखा कि मेरा नंबर कब आयगा सो अगर हम आप

रत्नावली वरे तो आज जा सकते हैं। पर अब तो जेल जाना कामचोर होना है। पर यह बात भी सही है कि स्त्रियों को जेल जाने की जरूरत है और जो राजकीय कैदी छूट जाय तो फिर मेरे भाग्य में जेल कहा है। पर हम तो जब ले जायगे तब जायगे। अब्बास तैयबजी की ६५ बरस की माली चेबूर से गिरफ्तार हुई। घाटकोपर से कमला नाम की एक विधवा कल गई। पर इनको जोश दिलाने में कुछ भागीदार हम भी है। चर्खे का क्लास नटराजन के घर पर खोला था। उनकी बहन आज एक स्त्री को लेकर आई थी। गिरगाव पर प्रभु लोगो में इतवार को और खोलना है।

मजाची के बारे में लिखा, सो ठीक है। समय आने पर देखा जायगा। तैयारी तो क्या करूं? पटवेकर से बातचीत करने का मौका मिले तब आप ही अनुभव हो जायगा। इतना तो मैंने सोच लिया है और ज्यादा तैयारी करनी हो तो आप लिख दें।

कमल की मंशा मोटर का लाइसेंस लेकर चदनसिंह से मोटर चलाना सीखने की थी। पर अब वह कहता है कि १८ वर्ष की उम्र से पहले मोटर चलाने का लाइसेंस झूठ बोलकर लेना पडता है, सो नही लूगा।

छोटेबाबू को एक अच्छा २५-३० रुपये की तनख्वाह का मास्टर पढाता है। मुझे तो बहुत सतोष है। शरीर से भी अच्छा हो गया बताते है। मेरे डर से भी बच गया!

अबकी बार की मुलाकात में शायद मै और श्रीकृष्ण भी आवे। अगर गिनती पूरी हो जाय, क्योकि वर्धावाले तो ५-६ हो जावेगे, तो मै नही आऊ। ज्यादा इच्छा नही है पर वजन कम होने से देखने की जची है। मै ही सोच लूगी। कभी पकड़ी जाऊ, इसलिए भी एक बार मिल लेना है।)

(यह पत्र अधूरा मिला है।)

८१

नासिक रोड जेल
१९-७-३०

प्रिय जानकी,

मेरी तबियत तो अब बहुत ठीक है। आशा है, तुम अपने स्वास्थ्य का

, काफी, काढा ही पिया। बदहजमी व कब्ज की शिकायत को जड़
खाडने के लिए यही उपाय ठीक लगा। मित्र और अधिकारी मेरी पूरी
ता रखते हैं, यह तुमने देख ही लिया। तुम बिल्कुल चिंता न करना।

क्या तुमने बादरा में कल चर्खा-वर्ग खोल दिया? वल्लभभाई का पार्ले
ा भाषण अभी पढने को नही मिला। शायद कल मिल जाय। चि० कमल
ी इच्छा हो तो वह एक बार १०-१५ रोज के लिए हटुडी (अजमेर) जा
सकता है। इस समय वहां की आबहवा भी ठीक होगी। उसके जाने से वहा
थोडा उत्साह आ जायगा। उसे कहना वह जरा अधिक सभ्यता व नम्रता का
व्यवहार करने का ख्याल रखे, क्योंकि अब वह सत्याग्रह-दल में पू० बापूजी
की टुकडी का स्वयसेवक है। उसपर ज्यादा जिम्मेदारी है। उसे मुह से
एक-एक बात सत्य व तौलकर निकालनी चाहिए, जिससे आगे चलकर
वह जिम्मेदारी के साथ काम कर सके। आज 'टाइम्स' में श्री वल्लभभाई
के साथ जलूस में चि० व्यकटलाल चद्रा की माता को भी पैदल चंपाबाई के
साथ चलते देखकर खुशी हुई। अब तुम्हारा नबर कब आता है? तुम्हें
मथुरादासभाई के बाद खजाची बनना है। तैयारी कर रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ८० :

विलेपार्ले,
१३-७-३

प्राणेश्वर,

आपका ता० ७-७-३० का पत्र मिला। अभी तक अनाज नही लिय
सो ठीक है। वजन तो इस हालत में कम होनेवाला ही है। 'सी' क्लास
१९ कैदियो को थाना से विसापुर ले गये थे। वहां पार्ले को ४० स्त्रियां,
की १० और आसपास की ६० के करीब होगी। तीन दिन लाइसेंस के वि
का काम बहुत असरदार हुआ। बादरा की पुलिस ने भूल की, पर थाने
पुलिस ने समझदारी से काम लिया। दरवाजे पर झंडा, राष्ट्रीय गायन
कुछ चलने दिया। ७ बजे सुबह से शाम तक एक समान जुलूस देखकर
यही कहा कि स्त्रियो ने कमाल कर दिया।

आपने लिखा कि मेरा नंबर कब आयगा सो अगर हम आपक

दस्तखती करें तो आज जा सकते हैं। पर अब तो जेल जाना कमजोर होना है। पर यह बात भी नहीं है कि स्त्रियों को जेल जाने की जरूरत है और जो राजकीय कैदी छूट जाय तो फिर मेरे भाग्य में जेल कहां है। पर हम तो जब ले जायगे तब जायगे। अब्बास तैयबजी की ६५ वर्ष की नानी चेंबूर से गिरफ्तार हुई। घाटकोपर से कमला नाम की एक विधवा पकड़ गई। पर इनको जेल दिलाने में कुछ भागीदार हम भी हैं। चर्खे का वर्ग नटराजन के घर पर होता था। उनकी बहन आज एक स्त्री को लेकर आई थी। सिरगांव पर प्रभु लोगों में इनकार की और गोलना है।

खजाची के बारे में लिखा, सो ठीक है। समय आने पर देखा जायगा। तैयारी तो क्या करूं? पटवेकर से बातचीत करने का मौका मिले तब आप ही अनुभव हो जायगा। इतना तो मैंने सोच लिया है और ज्यादा तैयारी करनी हो तो आप लिख दें।

कमल की मंशा मोटर का लाइसेंस लेकर मदनसिंह से मोटर चलाना सीखने की थी। पर अब वह कहता है कि १८ वर्ष की उम्र से पहले मोटर चलाने का लाइसेंस झूठ बोलकर लेना पड़ता है, सो नहीं लूंगा।

छोटेबाबू को एक अच्छा २५-३० रुपये की तनख्वाह का मास्टर पढ़ाता है। मुझे तो बहुत संतोष है। शरीर से भी अच्छा हो गया बताते हैं। मेरे डर से भी बच गया!

अबकी बार की मुलाकात में शायद मैं और श्रीकृष्ण भी आवें। अगर गिनती पूरी हो जाय, क्योंकि वर्धावाले तो ५-६ हो जावेंगे, तो मैं नहीं आऊं। ज्यादा इच्छा नहीं है पर वजन कम होने से देखने की जची है। मैं ही सोच लूंगी। कभी पकड़ी जाऊं, इसलिए भी एक बार मिल लेना है।)

(यह पत्र अपूरा मिला है।)

८१

नासिक रोड जेल
१९-७-३०

प्रिय जानकी,

मेरी तबियत तो अब बहुत ठीक है। आशा है, तुम अपने स्वास्थ्य का

बराबर ख्याल रखती होगी। मुझे अब ऐसा लगता है कि तुम्हें कुछ समय के लिए शायद आराम व दूसरे प्रकार के जीवन का अनुभव प्राप्त हो। इसके लिए तुम्हारी तैयारी बहुत दिनों से है ही। वहां जाना पड़े तो किस प्रकार की व्यवस्था तथा रहन-सहन रखना चाहिए, इस संबंध में कुछ विचार लिखता हूं। संभव तो यही है कि तुम्हें 'ए' वर्ग मिलेगा, नहीं तो 'बी' वर्ग में तो कोई संदेह है ही नहीं। अपनी तैयारी तो 'सी' वर्ग तक की है ही। परन्तु तुम्हें जो वर्ग मिले, तुम उसी वर्ग के मुताबिक उसका लाभ उठाना। ऊंचे वर्ग में अकेले रहे, इसकी चिंता नहीं रखना। खान-पान तो 'ए' व 'बी' वर्ग का एक-सा ही है। बने जहांतक बाहर से दवा व पथ्य आदि की चीजें छोड़कर खाने का सामान अपने पैसे से नहीं मंगाना है।

१. तुम अपने साथ 'आश्रम भजनावली', डायरी, गीता, तकली, पूनी, अटेरन तो ले ही जाओगी। साथ में और भी २-४ हिन्दी व गुजराती की पुस्तकें, जो तुम्हारी रुचि की हों, साथ रखना। ओढ़ने-बिछाने तथा पहनने के जरूरी कपड़े ले लेना। साबुन, तेल आदि साथ ले सकती हो। लिखने के लिए २-३ कोरी कापियां, २-३ पेंसिल, रबर आदि ले लेना। अक्षर जमाने के लिए तथा मुलाकात के समय उपयोग करने के लिए स्लेट व पेंसिल साथ रखना ठीक होगा।

२. भोजन तो शुद्ध शाकाहारी का ख्याल व आग्रह तो रखना ही होगा। छुआछूत का विचार रखने से काम नहीं चलेगा।

३. तुम्हारे साथ में जो बहनें हों, उनसे खूब प्रेम करना व उनके ऊपर सुन्दर असर पड़े, इसका ख्याल रखना। श्री पेरीनबहन आदि की संगत मिल जाय तो बहुत लाभ हो सकता है। थाने में तो स्वामी आनंद है ही। यरवदा में भी बहुत बहनें हैं। कष्ट नहीं होगा, ऐसी आशा है। अगर जेल के अंदर के जीवन का तुम्हें मौका मिला तो यह भविष्य के लिए बहुत लाभकारी होगा। बाहर की चिंता-फिकर एकदम कम कर देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—अंदर जाना हो तो चि० मदालसा, श्री गोमतीबहन या चि० तारा के पास रह सकती है। और बालक अपने-अपने ठिकाने पर रह ही सकते हैं।

· ८२ ·

नासिक रोड सेन्ट्रल जेल,
२३-७-३०

प्रिय जानकी,

देखो, मैंने तो १४ रोज में ७ रतल वजन बढ़ा लिया और तुमने बाहर रहकर दस रतल कम कर लिया। इसपर से मालूम हो सकता है कि तबियत को कौन ज्यादा संभालता है। श्री किशोरलालभाई का वजन भी एक रतल बढ़ा है। तुम्हारे बारे में मैंने जितना विचार कर देखा तुम्हारे गये बाद भी, मुझे तो यही लगता है, तुम्हारे अंदर (जेल) जाने से तुम्हें तो लाभ है ही, साथ में देश को भी अधिक लाभ पहुंचेगा। लोगों में सुस्ती या कायरता आती होगी तो वह नहीं आयेगी और इसका परिणाम राजपूताना, मध्यप्रान्त तथा अन्य प्रान्तों में भी ठीक होना संभव है। मैं समझता हूं तुम गोमतीबहन को व रिषभदास को समझा सकोगी। इस समय दृष्टि बहुत दूर व बहुत आगे *का विचार करने की ओर लगाना जरूरी है। सफलता तो ईश्वर के हाथ है।* हम लोगों का तो यही धर्म है। सच्चाई के साथ थोड़ी कुरबानी व आहुति तुम दे सकोगी तो उसे ईश्वर का उपकार मानना चाहिए। इस समय ऐसी ही बहनों एवं भाइयों की देश को जरूरत है, नेताओं की नहीं। संत तुकाराम का उद्गार है—'बोले तैसा चाले त्याची वंदावी पाउलें' यानी "जैसा कहे वैसा करे, उसके चरणों की मैं वंदना करता हूं।' इतने पर भी तुम बाहर की हालत देखकर विचार कर सकती हो। पूज्य वल्लभभाई वहां हों तो मेरा पत्र उन्हें दिखा सकती हो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

८३

विलेपार्ले
जुलाई, ३०

प्राणेश्वर,

पत्र २३-७-३० का मिला। तबीयत के बारे में लिखा, सो आपकी होशियारी और ईश्वर की सहायता है। कुछ कमी थी, सो भी अब पूरी हो जायगी।

आपने अंदर आने का लिखा, सो ठीक है। पर सभाओं में बोलने के लिए इनके पास यहां कोई स्त्री इस समय नहीं है। लोगों पर असर पड़े, ऐसी स्त्री भी चाहिए। पर बात यह भी है कि इस वक्त जो जेल नहीं देखेगा, वह जिन्दगी-भर के लिए कोरा रह जायगा। मों लगता है कि बाहर उपयोग ठीक होता है। काम भी ज्यादा होता है। पर न्यौता आया तो जाना है ही। लेकिन छावनीवालों का जी दुखता है। वैसे भी छावनी में रहने से लोगों पर असर अच्छा पड़ता है। यों मेरे लिए तो बाहर-अंदर दोनों एक-सा है। गोपी-बहन ने कहा कि बाहर काम करने की ज्यादा जरूरत है। तब वल्लभभाई ने भी गरदन हिलाकर 'हां' कहा। पर फिर वह ही चेंबूर से पब्लिक मीटिंग में बोले—"सैकड़ों को जेल जाना चाहिए, वहां ज्यादा आदमी भेजना चाहिए।"

बापूजी से पूछने का मन होता है, पर उनसे पूछना भी ठीक नहीं। कावसजी जहांगीर हाल में पारसियों की सभा में बोलने की थोड़ी हिम्मत करनी पड़ी थी। पब्लिक में हिम्मत तो हो जाती है, लेकिन भूल होने का डर लगता है। बंबई की हद तक तथा गांवों में भी स्त्री-पुरुषों की सभा में काम चल रहा है। कुछ असर भी पड़ता दीखता है। अखबारों की ४-५ कतरनें भेजूंगी, जिससे आपको अंदाज हो जायगा कि किस तरह यहां का चल रहा है।

कमला की मां

: ८४

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
११-८-३०

प्रिय जानकी,

तुम मेरे कहने की कोई चिंता मत करना। मेरी तो आदत ही है कि जो काम करता हो, उसे टोकते ही रहना। 'अंदर' जाने से दूसरे प्रांत जैसे कि राजपूताना, मध्यप्रान्त आदि को लाभ पहुंच सकता है, किन्तु फिर भी कोई बात नहीं। बाहर जिस प्रकार की परिस्थिति हो और तुम्हारी आत्मा जिस प्रकार सेवा अधिक करने का कहती हो, वही करना इस समय धर्म है। यह सेवा-कार्य करते-करते तुम्हारे भीतर निश्चय करने की आदत पड़

जायगी। उससे बड़ा लाभ होगा। चि० रिषभदास का पत्र मिला। उसके काम से सन्तोष है। उसे यह देना।

श्री गोमतीबहन को वंदेमातरम् कहना। श्री किशोरलालभाई को इन दो दिनों में थोड़ी श्वास की तकलीफ है, एक दो रोज में मिट जायगी। चिंता करने की जरूरत नहीं। पूरी सभाल व व्यवस्था की जा रही है। अगर आज धूप निकल आई तो वह आज ही ठीक हो जायगे। बीच में, तेल खाने से थोड़ी गड़बड़ हो गई थी। चि० मदालसा, उमा आदि बालकों को इस बार पत्र अलग से नहीं भेजा है, तुमने सब कहा होगा। चर्खे मिल गए। लागत भिजवा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

८५

विलेपार्ले, १९-८-३०

पूज्य श्री

ता० ११ का पत्र मिला। आपने बहुतों से कहलाया, पर आपके कहने का मुझपर पूरा असर नहीं होता है। यह अपने सबके स्वभाव में है कि जब हम अपने आदमी को देखते हैं तो मन कुछ दूसरा ही हो जाता है। हम जो पूरे सच्चे हों, तो बन्धन से ही छूट जाय न !

मुझे आप पहले साथ रखने को कहते थे, पर मैं इन्कार कर देती थी। अब इच्छा हुई है, पर अब कौन जाने कितनी परीक्षा के बाद मौका आता है ? बड़ी परीक्षा यह भी तो है कि अपने स्वभाव में, कुछ अंश में, मुझे परिवर्तन भी करना पड़े। खैर, यह भी देख लेंगे। यह भी एक आनंद है।

जेल से बचे रहने की तो इच्छा नहीं है। पर जब काम ढीला पड़ा है तो किसीने पकड़ा नहीं। अब जब काम जोर से चलता है तब लोगों के कहने से सच लगता है कि जेल जाने के बजाय काम ही करना चाहिए। जैसे आप जेल गये तो आपकी यह जगह तो भरी नहीं। फिर बाहरवालों का कहना भी ठीक लगता है और मुझे भी समाधान है। पर अभी तो स्त्रियों से सरकार भी डरती है। पर जेल का प्रसंग आना मुश्किल नहीं है। कठिन प्रसंग आवेगा तो जेल जाना ही है और समझौता पसंद आने तो होगा नहीं,

ऐसा लगता है।[1] इतने में मैं स्वराज्य आया तो टिकेगा कैसे? इसमें न सरकार को लाभ, न हमें। यह कैसे सुलझ सकेगा, यह ईश्वर जाने। पर अभी सबकी दृष्टि इस-भी रही है। नया काम किसीको सूझता नहीं। वैसे जोश दिनोंदिन बढ़ना ही है। कमल का हटूंडी (अजमेर) जाना सब तरह से योग्य है।

आपका वजन कम हो तो हर्ज नहीं, पर चेहरे पर लाली नहीं है। बस तबियत ठीक है। ता० २३ को मथुरादासभाई की मीटिंग है, इसलिए ता० २२ को मुलाकात सुबह ९ बजे लेंगे, ताकि २ बजे की गाड़ी से वापस आ सकें।

मुझे छगनलालभाई दीवाबले जेल नहीं जाने देते। कहते हैं कि तुम्हें कीर्ति की बड़ी इच्छा है, काम करते हुए पकड़े लेंगे तो पकड़ लेंगे। मैं क्या करूं? परतु पहले मैं उनकी अकल से चलती थी, अब अपनी भी लगाऊंगी। जेल की मेरी पूरी तैयारी है। आपने चिट्ठियां भेजी सो मिल गई हैं। बापूजी की भी। सूठ के बारे में हम आवेंगे तब आप कहेंगे जैसी भेज देंगे। आपको कौनसी पसन्द आई, यह मालूम पड़ना चाहिए।

मेरा प्रणाम

: ८६ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
३१-८-३०

प्रिय जानकी,

ता० २९ का पत्र मिला। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। दोनों वक्त कम-से-कम चार मील घूमता और थोड़ा दौड़ता भी हूं। तुम चिंता मत करना। अब तो यहां खूब मन लग गया है। घूमने, अंग्रेजी पढने व कातने में बड़ा मन लगता है।

आचार्य पी० सी० राय आज मुझसे मिल गये हैं। तुम्हारे बारे में भी बात करते थे।

श्री मथुरादासभाई को भी वेलजी का नाम मैंने ही कहा था। अब भी

[1]इन दिनों श्री सप्रू व जयकर जेल में महात्मा गांधी और पं० मोतीलाल नेहरू से मिलकर समझौते की बातचीत कर रहे थे।

करने या दौरे में साथ चलने को कहते तो मुझे गुस्सा आ जाता। दिनों-दिन दोनों के बीच खींचातानी बढ़ने लगी। वह जानते थे कि यह खींचातानी क्यों है और उसका समाधान करने की कोशिश भी करते, लेकिन उनका जीवन तो पूरी तरह सार्वजनिक हो गया था। वह चाहकर भी उससे कैसे छूटते ! सार्वजनिक कार्य मुझे भी प्रिय थे, लेकिन मैं चाहती थी कि वह इसमें इतने लीन न हो जायं कि शरीर की भी सुध न रहे।

मेरी इस अति चिंता के कारण यदि मैं उनसे कुछ करने को कहती तो वह दुराग्रह की सीमा तक पहुंच जाता। इससे जमनालालजी को भी झुंझलाहट होती और वे कभी-कभी नाराज़ हो उठते।

धीरे-धीरे मेरी अशांति बढ़ती गई। छोटी-मोटी बातों को लेकर असंतोष भी बढ़ता गया और मैं चिड़चिड़ी बनती गई। मेरे स्वभाव को चिड़चिड़ा बनाने में नौकरों ने भी मदद की। जमनालालजी को खुश रखने के लिए तो वे बहुत दौड़-धूप करते, पर मेरी बात की अवहेलना की जाती। जमनालालजी हर तरह से नौकरों को खुश रखते थे और उनके साथ परिवार-जैसा व्यवहार करते थे। उनके प्रति किसी भी प्रकार के अन्याय को वह बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। इस तरह नौकरों के कारण भी मन को क्लेश रहता।

जमनालालजी के सेक्रेटरियों का ठाट तो और भी बढ़ा-चढ़ा रहता था। वह हमेशा नये-नये युवकों को सेक्रेटरी बनाने, व्यवहार की बातें सिखाते, उनकी ज़रूरतों का ख्याल रखते। जमनालालजी के मित्रों की मांग रहती कि

[illegible]

जमनालालजी का दिमाग़ खाली होता।

इस प्रकार कई सेक्रेटरी आए और गए। उनमें से कई तो आज बड़ी अच्छी-अच्छी जगहों पर हैं, और अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी आए, जिनसे बाद में जमनालालजी को और हम सबको बड़ी तकलीफ हुई। इन सेक्रेटरियों के बीच मुझे रहना पड़ता था। अपने स्वभाव के अनुसार कई सेक्रेटरियों से मेरी बनती कैसे ! जमनालालजी उनको बहुत स्वतन्त्रता देते थे, उनके गुणों को खोजकर उनसे काम ले लेते थे। लेकिन मेरे कारण उन पर [illegible] व्यवहार को लेकर कुछ कसावट आती थी। मुझे तो [illegible] ही दिखाई देती थी।

[illegible] इस व्यवहार से बहुत तकलीफ होती थी। वह [illegible] बदलूं। अक्सर इन बातों को लेकर वह मुझ

दो-तीन नाम दूसरे कह है, नहीं तो आखिर में तुम तो हो ही। मौका मिले तो श्री मथुरादासभाई की स्त्री से मिलकर उसे हिम्मत दे देना। मैंने भी पत्र लिखा है।

उस काम करना चाहो तो श्री छगनभाई को कह देना, जरूर कर सकती हो। अब तो तुम्हें काम करते हुए ही अदर जाना पड़े तो जाना ठीक रहेगा, क्योंकि अब तो दिल्ली में सब ठीक हो गया, अदर जाने की अपनी तरफ से विशेष कोशिश करने की ज्यादा जरूरत नहीं रही।

चि० कमल को अहमदाबाद से आने पर अवश्य मिलने भिजवा देना उसे पूरी हिम्मत बधाना व सब बातें समझा देना।

चि० मदालसा व उमा की पूनिया बहुत ही अच्छी निकली। चर्खे व तकली पर भी बहुत उम्दा सूत काता गया। मित्रों ने भी देखी तो उनको भी बहुत पसद आई। पूनिया खतम होने को आई है। वर्धा से नर्मदा भी थोड़ी भेजती है। चि० मदालसा व उमा को कहना कि ज्यादा पूनिया भेजा करे। अच्छी पूनी वहा तैयार होती हो तो उसमें से भी थोड़ी लेती आया करो।

जमनालाल का वदेमातरम्

पुनश्च—यहा सब आनद में है। देखें तुम अदर पहले आती हो या हम लोग बाहर। श्री गोमतीबहन से राखी नही भेजने का···

(यह पत्र अधूरा मिला है।)

. ८७

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२२-९-३०

प्रिय जानकी,

ता० १० का पत्र मिला। समाचार जाने।

अब मुझे भविष्य की कोई चिंता नही है। बाहर के काम पर ही भविष्य का आधार है। पहले तो बीच-बीच में, जल्दी बाहर आने और काम करने की इच्छा हो जाया करती थी। पर अब तो एक प्रकार से पूरी शाति व सुख से जीवन बीत रहा है। बाहर आने की प्राय: इच्छा मन में पैदा नही होती। कभी-कभी होती है तो बहुत ही कम।

सूत काता गया। सूत उतारने आदि का समय अलग। सुबह ३ बजे उठकर प्रार्थना करके लगा सो रात को १२ बजे निवृत्त हुआ। बीच-बीच में अन्य कार्य भी किये। पू० बापूजी पर छोटा-सा लेख भी लिखा। नरीमानजी को यहा से बिदा भी करना पड़ा। हजामत, स्नान, एक बार भोजन, प्रार्थना, भजन और सबके लेख आदि सुनाये गए। यहा हमारे वार्ड मे, कातने में मेरा प्रथम नंबर आया। यह सूत मैंने अलग रखा है।

आजकल यहा की आबहवा बहुत उत्तम हो गई है। पेट कम करने की एक कसरत एक मित्र ने बताई है। उससे बड़ा लाभ हो रहा है। आशा है, बहुत दिनो की जो मशा थी सो अब बिना दवाई के पूरी हो जायगी, जिसमे बाहर आकर ज्यादा स्फूर्ति व तेजी से काम कर सकूगा। अब तो मुझे काम भी ज्यादा करना पड़ेगा, क्योंकि आजतक तो लोग मेरे काम से तुम लोगों को पहचानते थे। परन्तु इधर तो तुमने इतना काम कर डाला है कि जिसमें बहुत-सी जगह, जहा तुमने काम किया है, वहा लोग मुझे 'यह जानकी देवी के पति हैं' इस प्रकार से पहचानेगे। यह तुम्हारे लिए ही गौरव व प्रशसा की बात नहीं है। मुझे भी इससे खूब सुख मिलेगा। परन्तु अपने वर्चस्व को कायम रखने की इच्छा, मनुष्य की महत्वाकाक्षा को मैं थोड़े ही कम होने दूगा। सो तुमसे ज्यादा काम कर सकू, इसकी जेल के अदर से ही तैयारी करके आऊगा। तुमको सावधान रहने के लिए यह लिखा है।

अब किशोरलालभाई पहले जैसे कमजोर बीमार होकर बाहर नहीं आयगे, मजबूत होकर आयगे और खूब काम करेगे तो तुम्हे भी मजबूत हो जाना चाहिए, नही तो परीक्षा में नापास हो जाओगी।

इस पत्र का उपयोग तुम श्री गोमतीबहन, चि० शान्ता, मदालसा, राधाकृष्ण आदि बालक व मित्रो को पढ़ाने में कर सकती हो। यहा सब खूब आनद में है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—श्री नरीमानजी व बबई के कार्यकर्ता तुम्हे आग्रहपूर्वक जवाबदारी का काम लेने को कहे और तुम्हारी तैयारी हो तो तुम कर सकती हो। श्री नरीमानजी ने मुझसे इस विषय में बात की थी। इसलिए लिख दिया है। वहां जरूरत हो तो घबराने या डरने का कारण नहीं।

: ८८ :

विले पार्ले,
२९-९-३०

प्राणेश,

आपका पत्र हाल में नहीं मिला। अबकी बार आपका चेहरा तो ठीक था, पर मच्छरों ने उसे बहुत खाया था। मच्छरों को खून क्यों पिलाना चाहिए ? अगर मच्छरदानी मिल सकती हो तो बांधने-खोलने की हो तो तकलीफ है।

मथुरादासभाई पकडे गये। आपने पहले मेरे लिए खजांची होने के बारे में लिखा था सो माटुंगा के वेलजी लखनसी नपू नियुक्त किये गए। वह ही ठीक है।

मुझे ये लोग कहते हैं कि जेल जाने की बात न करो। चार मास तो उग्र काम उठाओ और घर में बैठे पकड़े जाओ तो ना नहीं है। इसपर मैंने कहा कि काम तो करू, पर मुझे बाधते क्यो हो ? मुझपर ही सारी जवाबदारी क्यों डालते हो ? अभी मैं जवान तो नहीं देती हूं। पर काम तो होना ही अच्छा है। छगनभाई पकडे जाने की कोशिश तो नहीं करने देंगे, पर काम ऐसा तो हो कि सरकार को पकड़ना पडे। अब देखना है कि क्या होता है ?

कमला को आपका सदेशा भेज दिया था। वह अभी परीक्षा में बैठी है, सो मैंने चिट्ठी आदि भेजने के लिए मना कर दिया।

कमला की मा

: ८९ :

नासिक रोड जेल,
(सितम्बर, ३०)

प्रिय जानकी,

अगर तुम्हे व रिषभदास को, जैसी कि बात हुई है, छावनी के कार्यकर्ता, बाहर के प्रचार का काम जरूरी समझकर, परवानगी दे तो तुम रिषभदास को लेकर पहले वर्धा, नागपुर, चादा, गोंदिया की ओर; बाद में बरार, अकोला, अमरावती, खानदेश और फिर राजपूताना, कलकत्ता, बिहार, जा सकती हो। रिषभदास का छुटकारा नहीं हो सकता हो तो श्री धोत्रे को साथ ले

सकती हो। लड़कियों में, तुम्हारी व चि० मदालसा की इच्छा हो तो उन्हे ले सकती हो, नही तो वर्धा में या गोमतीबहन के पास, जिसके पास वे रहना चाहे, व जो उनकी जवाबदारी लेनेवाला हो, उसके पास उन्हे छोड सकती हो। मुसाफिरी मे खाने-पीने में छुआछूत का ज्यादा विचार मत रखना। अगर गाडी में बहुत भीड हो और काम ज्यादा जरूरत का हो तो सेकेंड का टिकट भी ले सकती हो और किसीको साथ लेना जरूरी समझो तो वैसी व्यवस्था कर लेना। इससे तुम्हारा आत्म-विश्वास भी काफी बढ़ जायगा और अनुभव भी खूब मिलेगा। अगर वही काम करने का निश्चय करना पडे तो फिर एक बार वर्धा ही १०-१२ रोज जाकर वापस आ सकती हो। पर इस सबध में अब तो तुम खुद ही निश्चय कर सको तो हमेशा के लिए ठीक रहेगा। मुसाफिरी में खर्चा आदि का बहुत ज्यादा सकोच मत करना। जिसके यहा उतरना हो, उसका प्रेम व श्रद्धा प्राप्त हो, भविष्य में और भी ज्यादा प्रेम का सबध बने इसका ख्याल रखना। किसीका अपमान न होने पावे, इसका सबसे ज्यादा ख्याल रखना। आठ दिन की भ्रमण की रिपोर्ट बबई भिजवा दिया करना, सो मुझे आने-जानेवाले के साथ मिल जाया करेगी या तुम मिलने आओ तब लिखकर साथ लेती आना। लिखी हुई बात का विचार करके जवाब देने मे ज्यादा सुभीता होता है। मुलाकात में ज्यादा बात होना कठिन रहता है। बहुत ज्यादा आदमी मुलाकात के समय न आए, इसका अब ख्याल रखना पडेगा। अधिकारियों के प्रेम का यो उपयोग करना ठीक नही मालूम पडता। इस बार तो तुम्हारे कारण ज्यादा नही आये। जिनके पत्र आये थे, उनमें से दो-तीन को मैंने स्वीकृति भिजवाई थी। श्री रामकृष्ण डालमिया का आया हुआ व जवाब दिया हुआ पत्र पढ़ लेना। बालकों को भी पढा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

. ९०

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१-१०-३०

प्रिय जानकी,

वर्धा से पट्टा आज आ गया है। निश्चित होने पर अपना प्रोग्राम

लिखना। मेरा स्वास्थ्य खूब अच्छा है। श्री मुंशीजी तुमसे मिलने आवेंगे। खूब अच्छी तरह इनसे मिलना और परिचय कर लेना। मेरा इनके साथ अच्छा प्रेम का संबंध हो गया है। श्री पेरीनबहन को मेरा 'वंदेमातरम्' कहना। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा। उन्हें फुरसत मिले तो जेल का अनुभव उनसे जान लेना। चि० कमल का क्या हुआ? उसे पत्र लिखने को लिखना। श्री गोमतीबहन को कहना कि हम सब लोग आनंद में है। श्री किशोरलाल-भाई को अधिकारी आग्रह करके एक रतल दूध देते हैं। आशा है, इससे उनको ताकत आवेगी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ९१ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
८-१०-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा बिना मिती-तारीख का पत्र मिला। पू० बापूजी द्वारा लिखा तुम्हारे नाम का पत्र पढ़कर सुख मिला। पत्र मेरे पास है। तुम आओगी, तब तुम्हें दे दिया जायगा। ये सब पत्र संभालकर रखना।

अब यरवदा जाने की इच्छा कम हो गई है। यहां मन भी लग गया है। आबहवा भी अनुकूल आ गई है, मित्र लोग भी हैं। अधिकारियों से भी प्रेम-मित्रता का संबंध हो गया है। दूसरे, मेरी इच्छा है कि पू० बापूजी के पास या तो प्यारेलाल चला जाय या देवदासभाई। मेरी यह इच्छा नारायणदास भाई की मार्फत पू० बापूजी को लिखवा देना। चाहे तुम ही इतना उतारकर भेज देना।

तुम मेरी चिंता बिल्कुल न करो। मैं यहांपर भी बाहर जितना ही आनंद प्राप्त करने का प्रयत्न करता रहता हूं तथा बहुत अंशों में मुझे सफलता भी मिल रही है। एक जगह रहने के अनुभव की आवश्यकता थी, वह भी पूरी हो जावेगी। इस बार की मुलाकात के समय, तुम्हारे मन पर मेरी बात-चीत का कुछ असर हुआ दिखता है। पर इस प्रकार का मोह व बाहर काम करने की इच्छा जब कोई मिलने आते है तब कम हो जाती है, अन्यथा समय व शांति से बीत रहा है। बाहर की चिंता प्रायः बहुत कम करता हूं।

'जामे जमशेद' में तुम्हारे बडी सभा मे सभापति होने की खबर व तुम्हारा भाषण पढकर हम सबोको आनंद हुआ। अब जिस प्रकार बोलने का अभ्यास बढ़ गया है, उसी प्रकार लिखने का अभ्यास भी बढ़ाने का ख्याल रखो। तुम्हारा आगे का कार्यक्रम बना हो तो भिजवा देना। चि० मदालसा और उमा की पढाई की, उन्हे सतोष हो वैसी, व्यवस्था वर्धा मे जरूर करा देना। साथ में थोडा काम भी किया करेगी।

तुमने पू० बापूजी को मेरे बारे मे पत्र नही भेजा, यह बहुत ठीक किया। इस दौरे मे राजपूताना जाना होगा या दूसरी बार मे? पू० मा को कह देना कि उसे मेरे जन्म-दिन के रोज याने कार्तिक सुदी १२ (३ नवम्बर) को उसका आशीर्वाद लेने बुलाना है। पू० विनोबाजी नही आवेंगे। उनके पास से आशीर्वाद का पत्र भिजवा सको तो मा के साथ भिजवा देना। अकोला में सब काम ठीक हो गया होगा। चि० तारा ठीक काम करती होती। क्या वह तुम्हारे साथ भ्रमण में नही रह सकती?

श्री नथमलजी चोरडिया, जो अजमेर-जेल मे है, उनका बडा लडका एकाएक गुजर गया। बडा होशियार और होनहार था।

चि० कमल के पत्र मिले। मैने उसे पत्र दिया है। उसके साथ भी किसी जवाबदार आदमी की जरूरत तो है। चि० गुलाबचद सुगमता से जा सकता हो तो जाने का लिखना।

जमनालाल का वदेमातरम्

९२

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१८-१०-३०

प्रिय जानकी,

आखिर तुम रह गई। बहन गोमतीदेवी को तो आराम मिल ही गया। उन्हे जरूरत भी थी। तुम्हारे भ्रमण की रिपोर्ट, आता है, रिषभदास भेजता ही रहेगा। अकोला वगैरा की खबर, जो अखबार वगैरा मुझे मिलते है, उनमें तो आई नही। पू० बापूजी का पत्र वापस भेजा है, सभालकर रखना।

क्या अब विलेपार्ले तुम्हे जाना पडेगा? वहा जाकर काम हो सकेगा? एक बार वहा जाकर, वहा काम होना सभव हो तो उसकी व्यवस्था करना

ठीक रहेगा। आशा है वहां के स्त्री-पुरुषों में पूरा उत्साह होगा। विद्यालय जैसे रचनात्मक काम की भी उन्होंने व्यवस्था की ही होगी।

श्री किशोरलालभाई का जन्म-दिन जेल में मनाया गया। मेरा भी २० दिन बाद यहीं जेल में ही आयेगा। आशा है, तुम्हें अपना जन्म-दिन, जो माघ बदी ५ को आता है, जेल-महल में बिताने का सौभाग्य प्राप्त होगा। तुम्हें आशा है न?

सुभीता हो तो पू० मां और उस रोज तुम भी आ जाना, पर खास तौर कर नहीं। चि० मदालसा और उमा की पढ़ाई की ठीक व्यवस्था हो गई होगी।

जमनालाल का वन्देमातरम्

९३

नासिक रोड जेल,
२३-१०-३०

प्रिय जानकी,

नाम भी अच्छी बात है। पढने का तो बढेगा ही। मेरी तथा चि० कमल व बालकों आदि की फिकर करना छोड देना। ईश्वर सब ठीक करेगा।

तुम्हारे लिए मन में स्थान तो पहले ही अच्छा था, पर इस बार की तुम्हारी हिम्मत सेवा और योग्यता का विचार करके जो सुख व सन्तोष मुझे मिलता है वह शब्दों में कैसे लिखूं? हम लोग बहुत ही पुण्यशाली हैं। ईश्वर व पू० बापूजी की दया और आशीर्वाद से अपने जितने सच्चे सुखी संसार में शायद बहुत कम लोग होंगे। आशा है जेल में से हम लोग और भी अधिक लायक व योग्य बनकर निकलेंगे। मैं आजकल पांच बजे बराबर प्रार्थना करके 'रघुपति राघव राजा राम' कहते हुए चर्खा चलाता हूं। बडी शांति व आनंद मिलता है। रात को भी बहुत बार भजन चलता है। कल नये दिन से पींजन सीखना शुरू किया है। खूब आनन्द आता है।

श्री सौभाग्यवती व चि० शांता का उत्साह और हिम्मत बढाना और अन्य बहनों से भी मिल लेना। चि० राधाकिसन के नाम मैंने पत्र लिखा है, वह अच्छी तरह पढ लेना। जन्म-दिन के रोज ऐसा निश्चय करने का विचार है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

९८

(३ दिसंबर १९३०)

प्रिय जानकी,

छपरा से लिखा हुआ ता० १३ का पत्र व गोरखपुर से दिया हुआ तार पढा। भाई श्री बनारसीप्रसादजी से तुम्हारे काम की बातें कीं। इससे सुख मिला और इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि मनुष्य में शक्ति व बल तो रहता है, परन्तु वह खुद नहीं जानता। समय पडने पर ही उसका पता लगता है। अब तो तुम वकील बैरिस्टरों से भी बाजी मारने लग गई हो।

भाई सूरजमलजी रूइया आज आये थे। वह कहते थे कि कम-से-कम बातों में तो, तुम मेरे से भी बढ गई हो। श्री महाबीरप्रसादजी पोद्दार का सर्टिफिकेट भी एक प्रकार से पहुंच गया। यह सब जानकर किसे खुशी नहीं होगी। मेरी राय में तो जो हालत तुमने लिखी है व जो भाई बनारसीप्रसादजी

ने बतलाई, उसपर से देहातों में फिरना ज्यादा लाभकारी व परिणामकारक होगा, क्योंकि वहां प्रभावशाली लोग बहुत कम पहुंच पाते है।

वर्तमान हालत में व भविष्य में भी बाहरवाले अगर कलकत्ता से माल ही नही मगावेंगे तो उन्हें लाचार होना ही पडेगा। कलकत्ते के लिए जितनी मडिया लगती है उन सबोमें पूरी तौर से घूमना हो जाय तो अच्छा है। बीच में या बाद में कुछ रोज कलकत्ते में भी काम करके देखना चाहिए। देहातो के बाद वहां जाने से ज्यादा सफलता की आशा है। उपवास और धरना देने की बात ध्यान मे बराबर नही बैठती। इसमें कोई नैतिक दोष तो नही है, परन्तु इस प्रकार उसका उपयोग न किया जाय तो ठीक है। अगर कोई उपाय बाकी न रहे और यही एकमात्र उपाय रह जाय और वह फलप्रद दिखाई दे तो मृत्यु तक की बाजी लगाने की तैयारी व विश्वास हो तो ही उपवास करने का विचार किया जा सकता है।

तुम जिस तरीके से रचनात्मक और स्थायी काम कर रही हो, उससे तो शायद उधर तुम्हे जेल न जाना पडे। अगर उधर भी इस प्रकार काम करने का मौका आ जाय तो सुन्दर व उत्साह देनेवाला ही होगा। उससे बचने का प्रयत्न करने की, मेरी राय से, बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। आखिर तो जो कुछ परमात्मा की इच्छा है वही होता है। सच्चाई के साथ बिना डर रखे, प्रयत्न करते रहना ही अपना धर्म व कर्तव्य है। यह बात यहा मैंने इसलिए लिख दी कि तुम तो मेरे विचार जानती हो ही, मित्र लोग भी जान लेवें। खुद होकर कोशिश नही करना, यह उचित है। पर जब काम करते-करते खूब थक जाओ और आराम लेने की पूरी इच्छा हो जाय तो बंबई तो तुम्हे वरमाला पहनाने (जेल भेजने) व डिक्टेटर बनाने के लिए एकमत से तैयार है ही। श्रीनरीमान मेरे पास आगये। वह कहते थे कि हो सके तो बबई या विलेपारले से आराम महल में (जेल में) जाना ज्यादा अच्छा है। बाकी जहां का अनुभव मिलना होगा, वहीं का मिलेगा। दूसरी जगह से गिरफ्तार होना पडे तो भी विचार करने की जरूरत नही। ईश्वर सब व्यवस्था आप ही करा देगा। मित्र लोग तो प्रायः सब ही जगह है। वे संभाल लिया करेगे। परन्तु ज्यादा संभाल की जरूरत ही क्या रहेगी? ऐसा मौका आ जाय तो चि० कमला, मदालसा भी, हिम्मत हो और तुम उचित सम

तो, तुम्हारा काम चालू रख सकती है, अथवा व वर्धा या माटूगा पहुचा दी जा सकती है।

मेरा स्वास्थ्य व मन बहुत उत्तम व उत्साह में है। तुम्हारे काम की रिपोर्ट बराबर मिलती रहे, इसकी व्यवस्था कर देना। तुम्हारे काम के बारे में अखबार में कुछ छपे तो उसकी कटिंग काटकर भी बबई भिजवा देना या चि० रामेश्वर को लिख देना। संभव हुआ तो वह भी देख लिया करूंगा। गोरखपुर में भाई हनुमानप्रसादजी पोद्दार ही होगे। क्या महाबीरजी की स्त्री भी काम करती है? पू० राजेन्द्रबाबू के स्वास्थ्य के कारण थोडी चिंता है। उनके घरवालो से मिलने का फिर मौका मिले तो मेरा प्रणाम व वदेमातरम् कहना।

कलकत्ते में रहने आदि के बारे में मै सोचता हू कि जहा बिल्कुल सकोच नही हो और जिनकी सहानुभूति इस काम की ओर हो वहा या काम की दृष्टि से स्वतंत्र ठहरना शायद ज्यादा ठीक हो। श्री महाबीरजी व बनारसीप्रसादजी जैसा कहे वैसा करना।

जमनालाल का वदेमातरम

: ९५ :

(कलकत्ता)

(जवाब दिया, १०-१२-३०)

श्रीयुत,

दिसम्बर ३ का पत्र आपका मिला। पहला पत्र, जन्मदिन का, डालमिया-जी के नौकर ने टोकरी के कचरे में मिलाकर जला दिया। समाचार तो महादेवजी ने कह दिया था। महादेवजी को वल्लभभाई से मिलने इलाहाबाद भेजा था कि पहले कलकत्ते जाय या देहातो में घूमें। सभव है, वह कुछ और भी सलाह देते और कार्यक्रम में फेरफार बताते, पर वह इलाहाबाद से बबई निकल गये थे।

आपसे मिलने की तो अभी मेरी भी इच्छा नही है। कारण, आपकी तबियत ठीक है और समाचार मिल ही जाते है। फिर एक-दूसरे के विचार हम जानते ही है। नजदीक रहे और कोई काम न हो तो यह कोई बात नही। पहले मिलने आया ही करती थी। मै वकील-बैरिस्टरो से बात कर लेती

हूं—आपने यह जो लिखा, सो नई बात नही है । निर्भयता व लज्जा में तो 'पास' थी ही । बापूजी के सत्संग और उनके काम लेते रहने व उनके विचारो को जान लेने से काम चल रहा है। और फिर काम को काम भी तो सिखा देता है। एक बात है। आप बाहर आ जावें तो हमारी इतनी कीमत भी न रहे और हमारे से उतना काम भी न हो।

डायरी लिखने की इच्छा तो बहुत करते हैं, पर आलस्य के कारण रोज नही लिख पाते । कभी दो-चार दिन की लिख लेते हैं। गांवो की रिपोर्ट बना ली है । अब डायरी लिखने की भी कोशिश करेंगे ।

कमल को यहां बुला लिया है । उसको अच्छी संगत में ही रखते हैं। पर यहां उसका कुछ उपयोग होता दिखता नही है। यहा अगर उपयोग नही हुआ तो हम कदाचित्त एक बार वर्धा ही जावें । यहां का काम तो ठंडा पड़ा हुआ है। नेताओ में भी फूट है। कृष्णदासजी (बापूजी के सेक्रेटरी) इस फूट को मिटाने की कोशिश कर रहे हैं । इनकी फूट अगर मिट जाय तो कुछ काम हो ।

आपको बाहर का विचार नही करना है । समय पाकर सब ठीक हो जायगा । सच्चा काम तो देहातों में ही होगा । उधर आसाम और बंगाल का पानी भी खराब है । वैसे अभी घूमकर आई हूं, जिससे कही जाने का मन कम है ।

देहातो में तो बहुत अच्छा काम हो रहा है । नरीमानजी आपके पास फिर आ गये, यह बड़ा अच्छा हुआ । बाहर तो वह रह नही सकते थे । तो फिर आपके पास ही अच्छे है । राजेन्द्रप्रसादजी का वजन तो बढ गया था । अभी कुछ दमे की शिकायत सुनी थी । पर अब ४-८ दिन में वे छूट जायंगे । उन्होने जेल में काम ले लिया था, जिससे कुछ रोज माफ हो गये । परन्तु लंबी सजा-वालो को बिना इच्छा काम करने की तकलीफ क्यो उठानी चाहिए । ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिए ।

राजेन्द्रबाबू से मिलना था । लेकिन काम तो कुछ है नही और एक रोज क्यो गंवाया जाय ? इतने में दो गावो में काम करेंगे, यह सोचकर छोड़ दिया । उस वक्त उनकी तबीयत भी अच्छी थी । कमला, मदु व मेरे पकड़े जाने के बारे में लिखा सो सब ठीक है । मदु की हिम्मत है । पर उसे अकेली

नहीं छोड़ सकते। कमला को उसकी सास नहीं छोड़ेगी। तो समय पर जैसी शक्ति होगी किया जायगा। अभी मेरी काम करने की इच्छा है। उपवास वगैरा का पूरी तौर से सोचे बिना कुछ नहीं होगा। और खाने-पीने में सभाल रखोगे ही। रोटी बनाने का झगड़ा तो है ही, लेकिन दूसरा साहसी हो तो अनुभव ले सकते हो।

राजेन्द्रबाबूजी की पत्नी को पत्र देना है। वह मेरे साथ एक रोज महेन्द्रप्रसादजी के कहने से रहीं। अब वह कुछ काम तो करेंगी, पर कमजोर है। आपको प्रणाम लिख देंगे। महावीरप्रसादजी के पिताजी उनको कुछ भी नहीं करने देते। हनुमानप्रसादजी से मैंने कहा कि आप आसाम जाओ और एक लाख की खादी बेचो, 'कल्याण' को छोड़ो। वह प्रेम तो बहुत दिखाते है, पर कबूल कुछ नही करते। थोड़े लोग दृढ़ निश्चयी नहीं बन सके। विद्वान पर्दे के बारे में रूढ़ि छोड़ने के लिए राजी नहीं है। बहुत-सी स्त्रियों से गावों में पर्दा छुड़ाया, यह देखकर पुरुष आश्चर्य में पड़ गये। हर गाव में छोटा-बड़ा जुलूस भी निकाला गया, जैसा आजतक नहीं निकला। चंदाबाई के गाव में बरसात में भी जुलूस निकला। पर उन्होंने खुद पर्दा नहीं छोड़ा, जिससे कुछ अड़चन आई। पर स्त्रिया निकल ही गई। लेकिन अब पुरुषों के सहयोग न देने से शायद फिर बैठ जायगी। आपने नियम बनाया था कि दो स्त्रियों का घूघट खोलूगा। सो मैंने तो कइयों का खोल दिया है।

वर्धा में हिन्दी का एक मास्टर छ घटे के लिए घर पर रख दिया है। बाबू, नर्मदा, उमा, पद्मा, केसरबाई के लिए। कमल ने पुष्कर के मेले में काम भी अच्छा किया और मार भी खाई। अखबारों में खबर छपने पर वर्धा के तार आये। मुझे बिहार में मालूम नहीं हुआ। एक कतरन भेजती हू।

जानकी का प्रणाम

९६

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१०-१२-३०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। चि० मदालसा, कमलनयन और महादेवलालजी के भी। समाचार जानकर सतोष व सुख मिला। मेरी भी यही राय है कि

वर्धा जाने की जल्दी नही करनी चाहिए। हो सके तो आसाम, उड़ीसा और बंगाल के देहातो में अच्छी तरह घूम लेना ज्यादा लाभकारी व सुपरिणाम-कारक होगा। मुसाफिरी में आनंद व अमूल्य अनुभवो के साथ कई जगह, जैसे गया, दुमका के अनुभव (चि० मदालसा ने चि० रामेश्वर के नाम के पत्र में जो लिखा वह पढकर खुशी हुई) मिलना भी संभव है। ऐसा एक जमाना १५ वर्ष पहले का था, जिसमें पूज्य व प्रसिद्ध नेताओ को भी नदी के किनारे सोने या ढाबे में या वहा से लाकर खाने का सुअवसर प्राप्त हुआ था। उस समय से तो अब हालत में जमीन-आसमान का फर्क दिखाई देता है। सब ही जगह मानपत्र, जुलूस व बड़ी-बडी सभाए होती रहे तो फिर उसमें कोई विशेषता नही रहती। बीच-बीच में गया और दुमका जैसी जगह का अनुभव तो भोजन को स्वादिष्ट बनाने में मिठाई के साथ नमकीन का काम देता है। दुमका में तो भाई श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका के घरवाले रहते है। संभव है, उन्हे मालूम नही पडा हो या उन्होने भी समाज या राजनैतिक कारण से उदासीन रहना पसंद किया हो।

चि० कमलनयन को वर्धा भेज देना उचित मालूम होता है। फिर तुम्हारी व उसकी जैसी इच्छा हो वैसा करना। चि० कमला मुसाफिरी से थक जाय तो उसे भी वर्धा और वहा से बंबई भिजवा देना। न थकी हो तो तुम्हारे साथ घूमती ही है। उसको सासूजी की उसको परवानगी भी मिल गई है। मुसाफिरी में फल व सूखा मेवा आदि खाने का ज्यादा अभ्यास व ख्याल रखना। नोंध के लिए डायरी तो साथ रखनी ही चाहिए। जिनसे विशेष परिचय हो उनका पता-ठिकाना भी बराबर लिख रखना चाहिए। यह काम कमला और मदालसा ठीक कर सकती है।

श्री कृष्णदासजी को वंदेमातरम् कहना। अगर उन्हे फुरसत मिले तो वहा की हालत का एक पत्र बंबई की मार्फत लिखकर भेजने को कहना। पू० सतीशबाबू की पत्नी से मिली होगी, उन्हे मेरा प्रणाम कहना। वह भी बडी बहादुर व एक प्रकार से आदर्श देवी है। आशा है, तुम्हें सेतानो के घर [illegible] व पर्दा दूर करने में सफलता मिली होगी। बड़ो को मेरा [illegible], बराबरीवालों को वंदेमातरम् और छोटो को आशीर्वाद कहना। कई दिनों से पत्र लिखने का विचार कर रहा हू। अब तो कुछ समय

बाद ही लिखूगा। तुम सबसे ठीक परिचय कर लेना। यह घर भी मुझे सदा अपने कुटुंबी घर की तरह ही लगता रहा है और आगे भी लगता रहेगा। तुम तो दो ही बातो में, खादी-प्रचार (विदेशी वस्त्र-बहिष्कार) व पर्दा दूर कराने में, अपनी पूरी बुद्धि, ताकत व सच्चाई का उपयोग करती रहना। बाकी बाते तो आप-ही-आप होती रहेगी। मेरा मन व स्वास्थ्य बहुत ठीक है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

९७

कलकत्ता,
१३-१२-३०

पूज्यश्री,

अबकी बार आपका पत्र भी बिना तारीख और वार का मिला।

मेरा विचार कलकत्ता रहकर ही काम करने का है। यहा पिकेटिंग भी शुरु हो गई। स्त्रियो को निकालने का काम मैने ले रखा है। सभा में समझाने और यहा रहने मे परिणाम में उतना ही काम होगा जितना बाहर फिरने से। दूसरे यहा थोडे दिन आराम भी मिल जायगा। बिहार मे एक मास घूमने का असर यहा बहुत अच्छा पडा है। अब अगर यहा के लोग मुझे बगाल में भेजेंगे तो देख लूगी, नहीं तो यही महीने-डेढ महीने रहूगी।

मदु और लालू मेरे साथ रहेगे। परसो १५ दिसम्बर को घनश्यामदासजी आयेगे। अभी बृजमोहन बिडला और लक्ष्मीनिवास की पत्निया आई थीं। जीमने के लिए कई बार कह गई है। मैने कहा कि घनश्यामदासजी आयेंगे तब शाम को उनमे मिलना-जीमना सब होगा। अब अपने काम को मै खुद समझ लूगी। आप ज्यादा विचार मत करना। महादेवलालजी व बनारसी-प्रसादजी भागलपुर गये। महादेवजी का यहा काम नही था। जरूरत पडेगी तो बुला लेगे।

यहा के बडे नेताओ, सुभाष बोस व सेनगुप्ता में फूट थी, सो ईश्वर की दया से आज रात को समझौता हो गया। ऊपर मे तो सब बाते कबूल कर ली गई। अब सब कार्य में लग जावें तो ठीक। कृष्णदासजी ने बहुत मेहनत की, बीच में दो रोज अनशन भी किया था। एक बार मानकर फिर से मुकर गये थे। पैसे की भी कलकत्ता में तगी है। बबई में लोगो को बहुत

सहानुभूति है। मैं सुभाषबाबू के पास दो बार गई। वह भी एक बार खेतानों के यहा मुझसे मिलने आये थे।

मोतीलालजी नेहरु के पास अभी तक नही गई हूं। स्वरूपरानी यही है। मुझसे कहती थी कि मोतीलालजी की तबीयत बहुत दवाइयों के बावजूद ठिकाने नही आती। हमेशा बुखार वगैरहा की ही सुनते हैं।

आप अपने वजन का ख्याल रखना, और क्या खाते हो कितना वजन है, यह लिखना। यहा स्त्रियो के लिए मोटर वगैरा का इंतजाम कर लेगे। पैसे के लिए नही डरेगे, चाहे ५-४ हजार अपने लग जायं। जब काम जोरो से चलेगा तो पैसा अपने-आप आ ही जाता है। काम शुरू होना चाहिए। अभी अनशन का विचार नही है। बहुत सोच-समझ के ही होता दीखेगा तब ही विचार होगा। पहले और तैयारिया हो जायं। घनश्यामदासजी से बात करके उनकी सलाह से भी विचार करेगे।

कमला की मा का प्रणाम

९८.

कलकत्ता, १३-१२-३०

पूज्य श्री,

आपका पत्र एकादशी का मिला। घनश्यामदासजी ने आपको पहले ही प्रणाम लिखवाया है। रामकुमारजी भी आज छूट गये, पर फिर से जाने की तैयारी कम दीखती है। पद्मराजजी जैन का तो मत ही निराला है। विरोधी की तरह लेख लिखते हैं। पर आजकल की हवा में, कुछ व्यापारियों के सिवाय औरो पर तो असर होने से रहा। खेतानों के यहां पाच-चार जनो को आपके समाचार बचा दिये। कालीदासजी बहुत खुश हुए। उनके घर में खादी ने प्रवेश तो खूब किया, पर कुंती के सिवाय और किसीनें प्रतिज्ञा नहीं ली।

घनश्यामदासजी द्वारा खादी की प्रतिज्ञा लेने पर बृजमोहनजी व लक्ष्मीनिवास की पत्नी ने भी झट प्रतिज्ञा ले ली। मुझे तो जाति में पुरुष ही कमजोर नज़र आये। जानकीबाई खेतान परसो की मीटिंग में अध्यक्ष हुई थी। दौरे में जाने के बारे में कहती थी, कोशिश करेंगे। बर्दवान, रानीगंज जा आईं। मारवाड़ी स्कूल में शायद सन् १९-२० में लिखा हुआ आपका

सदेश पड़ा था। मुझमें भी लिखानेवाले थे। पर भूल गये। वहा कुछ माल जाना शुरू हो गया था। व्यापारियो की कमेटी बना दी, अब नहीं जायगा। पर उस रोज का गया हुआ नहीं मिला। धरना देने से तो तुरत मिल जाना दीखता, पर पुराने झगड़े पैदा होते। आर्डर दिये हुए में से दूसरे दिन एक कमेटी का आदमी आर्डर केंसल कराने के लिए आया। एक पुलिंदा चढ़ गया, अब देखें वह वापस हो सकता है कि नहीं।

२७ दिसम्बर से झरिया की तरफ चार-पाच दिन के लिए जाना है। नियमितता में तो मैं थी जैसी ही हू। जब कार्यक्रम होता है तो बिना घड़ी के भी पाच बजे नहा-कर तैयार हो जाती हू। पर जब काम न हो तो मजे से ही उठना-नहाना चलता है। और बातो में तो बहुत-सा परिवर्तन मालूम होता है। काम की कीमत होने से दवा वगैरा कम हो गई है। निश्चय करना भी आ गया है। किसी जगह महात्माजी की बातें, किसी जगह आपकी बाते अपने-आप काम करवा लेती है। जैसे बनता है वैसे दीर्घ दृष्टि, उदारता से काम चला रही हू। अनुभव तो मिलता ही है। आपके साथ घूमने का मौका मिलता तो और ज्यादा फायदा होता।

आप वजन नहीं बढ़ावें, यह ठीक है, लेकिन कमजोरी नहीं होनी चाहिए। बाहर आने पर वजन तो बढ़ेगा ही, फिर जेल में जितना होता है होने दो।

कमला की मा

९९

पौ० ब० एकादशी (१६-१२-३०)
(जवाब दिया, २३-१२-३० को)

प्रिय जानकी,

समाचार सब जाने। श्री कृष्णदासजी को मेरी ओर से मुबारकबादी देना। ईश्वर ने किया तो सब ठीक होगा।

पूज्य मोतीलालजी से मिलने जाओ तो मेरा प्रणाम कह देना। मुझे उनके स्वास्थ्य की पूरी चिंता है। परमात्मा ठीक करेगा। मेरा स्वास्थ्य व मन बहुत ठीक है। खूब उत्साह और फुर्ती मालूम होती है। आजकल की आबहवा भी उत्तम है। मित्रो की संगति भी ठीक है। प्राय सवेरे पाच बजे से

रात के नौ या कभी-कभी दस बजे तक संतोषकारक कार्यक्रम चलता रहता है। दिन-रात बड़ी जल्दी बीतते जाते हैं। बाहर की अपेक्षा जेल के दिन जल्दी बीतते हैं।

सब मित्र आनंद में हैं। श्री गोमतीबहन वगैरा सब साथी जल्दी ही छूट जायंगे—हाईकोर्ट के फैसले के कारण।

जमनालाल का वन्देमातरम्।

पुनश्च—खेतानो और श्री घनश्यामदासजी के यहां सब मित्रों को मैं याद किया करता हूं, तुम कह देना। सबको वन्देमातरम् कहना। श्री सुभाषबाबू मिले तो उन्हे भी वन्देमातरम् कहना।

: १०० :

नासिक रोड जेल,
पौष सुदी १४, सवत् १९८७
(३-१-३१)

प्रिय जानकी,

तुम्हारा, श्री कृष्णदासजी, व चि० मदालसा के पत्र पढ़कर खुशी हुई।

अगर श्री सीतारामजी को फसाने का सौभाग्य मुझे ही है तो मुझे उसके लिए सुख व सतोष है। परन्तु भाई सीतारामजी में सेवावृत्ति बहुत पहले से जागृत थी। वही अब काम आ रही है। मैंने तो इनसे बड़ी आशाएं बाध रखी है।

परदे के बारे में तुमने लिखा सो ठीक है। फैशन, नाटक, तमाशे, पहाड़ों पर या दूसरे मुल्कों में जाकर लोग पर्दा नही करते। याने पर्दा करना लोग नहीं चाहते हैं, परन्तु समाज के मिथ्या डर व सेवावृत्ति की कमी के कारण उन्हे पर्दा करना पड़ता है।

परदे के रिवाज से देश की बड़ी भयकर हानि हुई है। जिसके हृदय में न्याय व सत्य के साथ सेवावृत्ति है, वह तो इस राक्षसी प्रथा को जड़ से ही नष्ट करने का प्रयत्न करेगा। लोगों को यह डर है कि परदा चले जाने से आज की शर्म व मर्यादा भी चली जायगी। सो मुझे तो इसका डर कम है। अगर वह एक बार चली भी जाय व थोड़ी हानि भी पहुंचे तो भी अत में तो परिणाम उत्तम ही होगा। सो तुम इस समझाकर जोर देकर

व्याख्यानों के सिवाय खानगी बातचीत में भी उपयोग करते रहना।

रानीगंज में सुन्दर काम हुआ। और भी देहातों में श्री महावीरप्रसादजी व कृष्णदासजी के साथ जाना पड़े तो जरूर जाओ। वहां भी अच्छा परिणाम आना संभव है। अगर बंगाल में प्रतिष्ठावाले व प्रामाणिक थोड़े लोग भी जी तोड़कर इस काम के पीछे पड़ जाय, तो बहुत लाभ पहुंचे। आज तो विदेशी वस्त्र का पूर्ण बहिष्कार होने पर ही भारत को सच्चा स्वराज्य प्राप्त होना व टिकना संभव दिखाई देता है। बंगाल में तुम्हे दो-चार मास भी रहना पड़े तो जरूर रहना। चि० मदालसा को बराबर समझा देना।

तुमने लिखा कि अनुभव खूब मिल रहा है, सो यह अनुभव तो जिंदगी-भर काम आयेगा व बाद में मेरे साथ घूमने में भी खूब मदद देगा। घर को ठीक तौर से सगठित करने में भी इससे सहायता मिलेगी। मेरी बहुत वर्षों से यह इच्छा थी कि तुम व बालकों की कद्र मेरे कारण न होकर अपने पवित्र सेवा-कार्य के कारण हो, क्योंकि उसमें तुम्हारा व बालकों का ही नहीं, मेरा भी श्रेय व गौरव है। इस इच्छा की पूर्ति अब जल्दी ही परमात्मा की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से देखने को मिल रही है।

केसर ने चि० प्रह्लाद को दूसरी बार भी हिम्मत से जेल भेज दिया, यह देखकर आनन्द होता है। अपने घर में अब सब छोटे-बड़े कम-ज्यादा प्रमाण में सेवा-कार्य करनेवाले निकलेंगे, ऐसा विश्वास होता जा रहा है। सेवाधर्म में जो अलौकिक आनन्द व सुख मिलता है, वह संसार की किसी अनमोल वस्तु, मान-सम्मान या वैभव से प्राप्त नहीं हो सकता। थोड़े समय के लिए चाहे वह अपने को मोह-माया के कारण सुखी समझने लग जाय परन्तु यह बनावटी सुख ज्यादा टिक नहीं सकता। परमात्मा हमें सच्ची सेवावृत्ति बनाये रखने की सद्बुद्धि प्रदान करे यही प्रार्थना हम सबको हमेशा करते रहना चाहिए। दूसरी प्रार्थना की आवश्यकता ही नहीं।

मदालसा के पढ़ाने की व्यवस्था कर दी सो ठीक किया। श्री महावीरजी व सीतारामजी ने शिक्षकों का पसंद किया है तो वे अवश्य ही चरित्रवान होंगे। मेरा यह मानना है कि चरित्रवान की संगत से जो लाभ बालकों को हो सकता है, वह केवल विद्वान की संगत से नहीं हो सकता। उल्टे बहुत बार उससे हानि का ही डर रहता है।

आज मुझे पू० राजेन्द्रबाबू मिल गये। आनन्द हुआ। तुमसे वह ता० ८ या ९ जनवरी को कलकत्ता में मिलेंगे।

ता० १५ जनवरी को चि० कमला और उसकी सास मिलने आनेवाली हैं। अभी इसी २७ तारीख को बिड़ला-परिवार, जो बंबई में था, सब-छोटे-बड़े सहित मुझसे मिल गया है। आनन्द आया। बाजरे की रोटी और दही सबोंने दो रोज खूब खाया। और भी कई चीजें उनके प्रेम के कारण खाईं।

प्रिय कृष्णदासजी से यह देना कि उनका पत्र पढ़कर मुझे सुख मिला। ईश्वर अवश्य सफलता देगा। तुमको वह चाहे तबतक कलकत्ता रख सकते हैं। श्री बैजनाथजी केडिया को जेल में मेरा नाम लेकर कहलाने से शायद कुछ फायदा पहुंचे। उन्हें बहका दिया गया होगा कि मारवाड़ियों के हाथ से रोज-गार निकलकर मुसलमानों के हाथ चला जायगा। उन्हें समझाना चाहिए कि मान लो ऐसा ही होगा तो इतना अपवित्र धंधा वे लोग करना चाहे तो करें। मारवाडी जाति तो उस घोर पाप से बच जायगी, जो उसने जानकर या अनजान में किया है। खूब जोर से काम होने से बंबई के माफिक रास्ता बैठ जायगा।

मेरा पत्र प्रेस में न छपे व ऐसे लोगों के हाथ में न जाने पावे, जिससे दुरुपयोग किया जाय। मुझे बीच-बीच में बंबई द्वारा खबर भेजते रहे, यह भी कह देना।

मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। अभी तो बड़ा उत्साह व ताकत मालूम देती है। श्री नरीमानजी को तो मैंने भगाते हुए, पाव में मोच पड़ने से, दो-चार रोज के लिए लंगड़ा भी कर दिया है।

भाई सीतारामजी! तुम्हे मैं क्या लिखू। तुम्हारी व पन्ना की माता की सेवावृत्ति व चेहरा जब-जब याद आता है, बड़ा सुख मिलता है। अभी तो पूरी ताकत मेरी समझ से विदेशी बहिष्कार पर ही लगानी उचित होगी। इसमें किसीके प्रति दया या उदारता दिखलाने का हमें हक नहीं है। जितना ज्यादा परिचय व प्रेम-संबंध हो उतना ही ज्यादा जोर अहिंसावृत्ति पर कायम रहना चाहिए।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०१ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
९-१-३१

प्रिय जानकी,

आज तुम्हारे जन्मदिन का एकाएक ख्याल आया तो परमात्मा से

समीप आते जा रहे हैं, उसी प्रकार हमारा सच्चा व पवित्र प्रेम भी बढ़ता जा रहा है। हम एक-दूसरे के विशेष नजदीक आते जा रहे हैं। हमारे परस्पर गुणो और योग्यता का हमें विशेष परिचय होता जा रहा है। परमात्मा की कृपा व पू० बापूजी के आशीर्वाद से हम लोगो का अपने जीवन के आदर्श मे सफल होना बहुत संभव दिखाई देता है। अगर हम अपनी कमजोरियों को बराबर पहचानते रहे और उन्हे निकालने का जी-तोड़ प्रयत्न करे, तो हम अपने जीवन को पूरी तौर से नहीं तो कुछ अश में तो अवश्य ही सार्थक बना सकेगे। आज तुम्हारे जन्म-दिन की खुशी के निमित्त जेल में आने के बाद प्रथम बार मैंने पापड़ खाया। उसका पूरा इतिहास तो जब तुम मिलने आओगी या मैं जेल से बाहर आऊंगा तभी सुनाने में आनन्द आवेगा। उबालकर तैयार किये हुए ३-४ सिंघाड़े भी खाये। याने हम लोगों ने तो तुम्हारा जन्म-दिन मना लिया। तुम्हे तो पता भी नही पड़ा होगा।

श्री नरीमानजी को तुम्हारे पत्र का, उनके सबध का प्रसग, पढ़कर सुना दिया। उन्हे आनन्द हुआ। नरीमानजी की तुम्हारे प्रति श्रद्धा व पूज्य भावना है। इन्होंने व उसमान सोबानी (उमर सोबानी के छोटे भाई) ने तुम्हे प्रणाम व वदेमातरम् लिखवाया है। श्री उसमान तो मुझे बड़े भाई के स्थान पर मानता है। इनके यहा आ जाने से हम दोनो को ही खूब सुख मिल रहा है। महल में (जेल में) तुम्हारी इच्छा हो तो वही से काम करते हुए (न कि जबरदस्ती आगे बढ़कर) आराम लेने चले जाना।

मारवाड़ी समाज के लिए तो कलकत्ता में जेल जाने का मौका मिले तो भी

अच्छा ही परिणाम आ सकेगा। बाकी बबई, कलकत्ता, वर्धा, अजमेर, सभी स्थान अपनी-अपनी जगह महत्व के है।

मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। तुम्हारा ठीक रहता है, यह जानकर सतोष हुआ। तुम भाई श्री कृष्णदासजी को लेकर एक बार सर जे० सी० बोस व लेडी बोस से मिल लेना। उनसे मेरा प्रणाम कह देना। उनका ता० ३० दिसबर का पत्र ही मुझे मिला, पहला पत्र नही मिला। श्री कृष्णदासजी के साथ रहने से तुम्हे व उन्हे बगला मे भली प्रकार बातचीत समझा देंगे। उनकी सस्था भी तुम देख लेना। चि० मदालसा को भी साथ ले जाना। श्री कृष्णदासजी को पढने के लिए सर जे० सी० बोस के पत्र की नकल नीचे देता हू।[1] पत्र मे तुम्हारा भी उल्लेख है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०२ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
१५-१-३१

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। ता० ९ को तुम्हारे जन्मदिन के रोज पत्र भेजा था। वह तुम्हे मिल गया होगा। चि० मदु की तबियत सुधर गई, यह जानकर खुशी

---

[1]श्री जे० सी० बोस के पत्र का हिन्दी-अनुवाद इस प्रकार है—

कलकत्ता

जमनालाल,

आशीर्वाद। अपने जन्मदिन पर तुमने जो पत्र लिखा वह मुझे मिल गया था। मैंने तुरंत ही तुम्हें एक लंबा पत्र लिखा था, जिसमें तुम्हें और तुम्हारे कुटुंबी जनों को हमने अपने स्नेह व शुभकामनाएं भेजी थीं। मुझे नहीं पता कि वह पत्र तुम्हें मिला या नहीं। तुम्हारा, तुम्हारी पत्नी और बच्चों का हमेशा ख्याल बना रहता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि तुम्हें उसका आशीर्वाद व मिलता रहे और तुम्हारा जीवन पवित्र आदर्शों से प्रेरित होता रहे।

तुम्हारा शुभेच्छु
जे० सी० बोस

हुई। तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक रहता होगा। मेरा मन, स्वास्थ्य दोनों ठीक हैं। आज चि० कमला, उसकी सास, चि० कमलनयन, रामेश्वर, राजकुमारी आदि आये हैं। कमला व उसकी मामू मे खाने की हैं। खाने का बहुत सामान वे ले आये हैं—दही, बाजरे की रोटी, बडे आदि। आगे से तो मना कर दिया है।

तुम्हारा कार्यक्रम निश्चित हो जाय तो लिख भेजना। श्री नरीमानजी छूट गये हैं। तुम्हे पत्र लिखनेवाले हैं। श्री सत्यदेवजी का आज पत्र मिला। तुम उन दोनो को मेरी प्रसन्नता के समाचार, बधाई तथा उनके प्रति हमारे प्रेम का सदेश भिजवा देना।

उनके (नरीमानजी के) पिता का देहान्त हो गया, जानकर चिंता हुई, पर कोई उपाय नही।

चि० मदालसा को कहना उसका पत्र बहुत छोटा आता है। विगत प्राय नही रहती है। सो रोज डायरी की तरह पत्र लिखने की आदत डालनी चाहिए। चि० पद्मा की माता को बालक हुआ होगा। लडकी हो तो भी मेरी ओर से बधाई देना। वर्तमान समय में लडको की जगह लडकियो की ज्यादा आवश्यकता है। उनकी इज्जत व उनके प्रति प्रेम जरूरी है। लडकी के रहने से मन में उदारता और परोपकार की वृत्ति बढती है। पुत्र के कारण स्वार्थ की वृत्ति बढ़ती है, यह भी कह देना। चि० लक्ष्मण रसोइया को वदेमातरम् कहना, खूब प्रेम से। पद्मा की माता व कुटुबियो की सेवा करने को कह देना।

जमनालाल का वदेमातरम्

१०३

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२८-१-३१

प्रिय जानकी,

इस बार तुम्हारा पत्र नहीं मिला। आशा है, तुम्हारा व चि० मदालसा का स्वास्थ्य ठीक होगा। आजकल फिर छूटने की गड़बड़ शुरू हुई है। सभव है, तुम्हारे जेल में जाने के पहले हम लोगो को ही बाहर आना पड जाय। अगर छूट गये तो शान्तिमय जीवन छोड़कर फिर तूफानी समुद्र में आना पड़ेगा। तुम्हे तो सब खबरें अखबारो के द्वारा मिलती ही होगी। छूटेंगे या नहीं, उसका

फैसला बहुत-कुछ इस महीने के आखिर तक हो जाता दिखता है। सब राज नैतिक मित्र शायद अभी न भी छूटें। फिर भी पुरानी वर्किंग कमेटी के सदस्य का छूटना ज्यादा संभव दीखता है।

तुम्हारा क्या प्रोग्राम है? श्री कृष्णदासजी ने तो आखिर फिर थोड़े रो के लिए आराम लेने का विचार कर लिया। आज अखबारों में पढ़ा।

मेरा स्वास्थ्य व मन बहुत ठीक रहता है। आजकल ये खबरें पढ़कर अ कार्यक्रम शान्तिपूर्वक चल रहा था, उसमें थोड़ी गड़बड़ी हुई है। तुम्हारे कार्य क्रम में कितने रोज कलकत्ता रहना आवश्यक है, जरूर लिख भेजना।

जमनालाल का वंदेमातर

: १०४ :

बबई
२७-१-३

प्रिय जानकी,

आखिर कल एक बार तो जेल छोड़ना ही पड़ा। आज सुबह यहां अ गया। पू० बापूजी के साथ आज रात को प्रयाग जा रहा हूं। वहा से अगर हं सका तो एक रोज कलकत्ता आने का प्रयत्न करूंगा या तुम्हें वहां बुलाने की जरूरत समझूंगा तो बुला लूंगा।

चि० कमल मेरे साथ है। चि० कमला मेरे साथ पू० बापूजी से मिलती है जेल में से जितना लंबा-चौड़ा पत्र लिख सकता था, उतना बाहर से लिखना कठिन है। मेरा स्वास्थ्य जेल में जितना ठीक रहता है, उतना बाहर रहेगा या नहीं, यह देखना है, क्योंकि इतनी शांति बाहर नहीं मिल सकेगी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १०५

प्रयाग (चालू रेल में),
१४-२-३१

प्रिय जानकी,

मिला। पू० बापूजी रफल देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने और चला सकूंगा। तुम्हारे लिखे हुए समाचार उन्हें हुई पूनी उन्होंने आज कातकर देखी। उन्होंने वहां

कि रूई तो अच्छी है, परन्तु पूनी ठीक नही बनी। लबी ज्यादा है व पोली भी है। आगे से बहुत अच्छी पूनी बना सको तो थोडी बापूजी को भेजने का प्रबंध करेंगे।

मै आज पटना जा रहा हू। वहा से ता० १९ तक कलकत्ता ठहरकर वर्धा आने का विचार है। अगर दिल्ली वगैरा न जाना पडा तो ता० २१ तक वर्धा पहुच जाऊगा। पू० स्वरूपरानी तुम्हे याद करती थी। मै सब घरवालो से प्रायः भली प्रकार से बातें कर सका, उसका मुझे संतोष है। चि० प्रहलाद व कमल के बारे में पू० काकासाहब को, जो मुझे समझाकर कहना था, सो कह दिया है।

१५-३-२१

आज सुबह यहा दानापुर (पटना) श्री रामकृष्णजी डालमिया के पास पहुच गया हू। दोपहर को व कल बिहार के नेता व कार्यकर्ताओं से बात करके कल रात को कलकत्ता जाने का विचार है। चि० रमा पाच बजे सुबह मोटर लेकर स्टेशन आई थी। उसीकी मोटर में घर आये। लडकी बहादुर मालूम होती है। अगर कुछ समय आश्रम में या अच्छे वातावरण में रह जाय तो उसे अवश्य फायदा पहुचे।

जमनालाल

१०६

वर्धा, १३-४-३१

प्रिय जानकी,

डा० रजबअली व चि० राधाकिसन आज यहा आये। श्री बालकोबा को उन्होंने देखा। उन्हे यही रखकर इलाज करने का कहा है। अच्छा हो जाने की आशा बताते है। तुम्हारे बारे में डाक्टर से व राधाकिसन से बातें हुई। डाक्टर को तो वर्धा ज्यादा पसद पडा। परन्तु यहाकी गरमी दिन-ब-दिन बढेगी, वह तुम अभी सहन नही कर सकोगी। अगर सासवने में ठीक प्रबध हो गया हो, तो ठीक है, नही तो मै आऊ तबतक बालकेश्वर भाग्यवती बहन के पास बिना सकोच के ठहरना। मेरे वहा आने पर बदोबस्त कर लिया जायगा। हो सकेगा तो चि० राधाकिसन को २-३ रोज के लिए भेजने का प्रबध करूगा। तुम्हे किसी प्रकार की फिकर, चिता व क्रोध न करके जिस प्रकार मन को शाति मिले वैसे

स्टेशन निकल गया। तुमको साथ नहीं लाया, इसका मेरे मन में थोड़ा विचार तो रहा, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में तुम्हारा वर्धा रहकर ही काम करना उचित था। इसलिए ऐसा कठोर काम करना पड़ा। बंबई पहुंचने पर पू० मालवीयजी से मिलने पर जो प्रोग्राम निश्चित होगा, तुम्हें लिखूंगा। मेरी इच्छा तो जल्दी ही वापस वर्धा आने की है। तुम मन में किसी प्रकार की घबराहट मत रखो। *परमात्मा जो कुछ करता है, वह ठीक ही करता है।* मुझे तो पूरा विश्वास व आशा है कि परिणाम ठीक निकलेगा। इस सत्याग्रह में अपनेको तो बहुत ही उत्साह और हिम्मत से काम करना है। ईश्वर से प्रार्थना करना कि वह अपनेको सद्बुद्धि प्रदान करता रहे और सच्ची सेवा करने की ताकत देता रहे। घबराहट को बिल्कुल निकाल देने से ही काम ठीक होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१०९

भायखला हाउस आफ करेक्शन,
१७।१८-१-३२

प्रिय जानकी,

आखिर बंबई की ही जेल मिली। यहां काफी मित्र हैं। सब बड़ा ही प्रेम तथा सम्मान करते हैं। मुझे तकलीफ न हो, इसका पूरा ख्याल रखते हैं। अभी तो मुझे एक दुमंजिले हाल में रखा है। हवा-पानी आदि का सुख है। तीन अन्य मित्र मेरे साथ रहते हैं। मेरे कान का इलाज बराबर हो सकेगा, ऐसा मालूम होता है। तुम चिंता बिल्कुल मत करना। अभी तो सप्ताह में एक बार पत्र लिखने और एक बार मुलाकात लेने का हक है। सजा होने के बाद जिस वर्ग में रखेंगे, वह नियम लागू होगा। मित्रों का कहना है कि मुझे यहां नहीं रखेंगे, दूसरी जगह भेज देंगे—नासिक या यरवदा। संभव है, नागपुर भी भेज दें। जहां उनकी इच्छा हो वहां भेज सकते हैं। सब ही जगह आनन्द मिलेगा।

मैं चि० शांति, गोमतीबहन, किशोरलालभाई आदि से थाना-जेल में मिल लिया था और चि० कमला से माटुंगा में। पकड़े जाने के समय तो *तुम्हारी याद आई, बाकी सोचने से यही ठीक लगा कि तुम्हारा वर्धा रहना*

ही इस समय ठीक रहा। बालकों को, नौकरवालों को, सबों को कह देना कि मेरी चिंता बिल्कुल न करें। मैं अपना पूरा ख्याल रखूंगा। दो दिन से तो खेलकूद में तथा सोने में ही ज्यादातर समय बीत रहा है। खूब आराम है व सिर भी हल्का मालूम देता है। तीन मित्र नीचे जमीन पर सोते हैं। मुझे जबरदस्ती पलंग पर सुलाते हैं। मेरा सौभाग्य है कि जहां जाता हूं, वहां घर का-सा स्नेह-संबंध एवं मित्रता हो जाती है। ईश्वर की दया है। तुम भी अपनी जरूरत के मुताबिक पहले से जेल की तैयारी कर रखना, जिससे सुभीता रहे। मुझे जिस सामान की जरूरत थी, वह लिखकर मंगा लिया है। अबकी बार मुलाकात और पत्र-व्यवहार कम रखने का विचार है। इसमें सुभीता रहेगा। जहांतक बंबई में हूं, वहांतक बंबईवाले तो मिल ही जाया करेंगे।

इतवार के पहले एक बार ११ से १ बजे के बीच में श्री जानकी व उनके साथ कोई आवे तो मिलने भेज देना। मैं खूब आनन्द में हूं।

जमनालाल का वन्देमातरम्

११०

भायखला हाउस आफ करेक्शन,

: १११ :

भायखला-जेल,
११-३-३२

प्रिय जानकी,

कल की मुलाकात में यह जानकर चिंता हो रही है कि तुम्हारा स्वास्थ्य नागपुर-जेल में ठीक नही रहता । मुझे बतलाया गया है कि तुम्हारी दवा, वगैरा की व्यवस्था बराबर हो गई है और जेल-अधिकारी भी पूरा ध्यान रखते है । यह जानकर संतोष है । सतरे वगैरा तुम्हे जो अनुकूल हो, खाने का बराबर साधन रखना । मै तो यह उम्मीद करता था कि तुम्हारा स्वास्थ्य वहा आराम और शाति मिलने से सुधर जायगा । परन्तु समझ मे नही आता कि तुम्हारी तबीयत क्यो बिगड गई ? सविस्तर पत्र लिखकर बबई-दूकान के पते पर मुझे भेजना, क्योकि अब मै इस जेल में तो १५ तारीख के बाद नही रह सकूगा । दूकान पर पत्र पहुचने पर मै जहा व जिस जेल मे रहूगा, वहा दुकानवाले पत्र भिजवा देगे ।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम है । मैं खाने-पीने में बराबर सभाल और ख्याल रखता हू । खूब खेलता हू, आनन्द करता हू व औरो को भी आनन्द में रखने का प्रयत्न रखता हू । यहा के अधिकारी तथा मित्र बड़े प्रेम का व्यवहार रखते है। तुम मेरी या चि० कमल की कोई चिंता मत करना । तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम हो जाय और तुम सब तरह से ठीक होकर वापस घर आओ, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है । वहा की बहनो को मेरी ओर से प्रणाम व वदेमातरम् कहना । सबके साथ खूब प्रेम और कौटुम्बिक सबध बढे व भविष्य में अपने स्थायी काम, समाज-सुधार, पर्दा-निवारण, अस्पृश्यता-निवारण आदि में बहनों की पूरी सहायता मिले, इसलिए भी उनसे अच्छा परिचय हो जाना चाहिए । मुझे तो जेल में भी हमेशा नये मित्रो से परिचय करने का ईश्वर की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से मौका मिल ही जाता है, जिससे मुझे बडा सतोष मिलता है।

जमनालाल का वदेमातरम्

रायबहादुर
सेठ जमनालाल बजाज

श्रीमती
जानकीदेवी बजाज

: १११ :

भायखला-जेल,
११-३-३२

प्रिय जानकी,

कल की मुलाकात में यह जानकर चिंता हो रही है कि तुम्हारा स्वास्थ्य नागपुर-जेल में ठीक नही रहता। मुझे बतलाया गया है कि तुम्हारी दवा, वगैरा की व्यवस्था बराबर हो गई है और जेल-अधिकारी भी पूरा ध्यान रखते है। यह जानकर सतोष है। संतरे वगैरा तुम्हे जो अनुकूल हो, खाने का बराबर साधन रखना। मै तो यह उम्मीद करता था कि तुम्हारा स्वास्थ्य वहा आराम और शाति मिलने से सुधर जायगा। परन्तु समझ में नही आता कि तुम्हारी तबीयत क्यो बिगड गई? सविस्तर पत्र लिखकर बबई-दूकान के पते पर मुझे भेजना, क्योकि अब मैं इस जेल में तो १५ तारीख के बाद नहीं रह सकूगा। दूकान पर पत्र पहुचने पर मै जहा व जिस जेल में रहूगा, वहा दुकानवाले पत्र भिजवा देंगे।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। मैं खाने-पीने में बराबर सभाल और ख्याल रखता हू। खूब खेलता हू, आनन्द करता हू व औरो को भी आनन्द में रखने का प्रयत्न रखता हूं। यहा के अधिकारी तथा मित्र बडे प्रेम का व्यवहार रखते हैं। तुम मेरी या चि० कमल की कोई चिंता मत करना। तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम हो जाय और तुम सब तरह से ठीक होकर वापस घर आओ, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना है। वहा की बहनो को मेरी ओर से प्रणाम व वंदेमातरम् कहना। सबके साथ खूब प्रेम और कौटुम्बिक सबध बढ़े व भविष्य में अपने स्थायी काम, समाज-सुधार, पर्दा-निवारण, अस्पृश्यता-निवारण आदि में बहनों की पूरी सहायता मिले, इसलिए भी उनसे अच्छा परिचय हो जाना चाहिए। मुझे तो जेल में भी हमेशा नये मित्रों से परिचय करने का ईश्वर की दया से व पूज्य बापू के आशीर्वाद से मौका मिल ही जाता है, जिससे मुझे बडा सतोष मिलता है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

ता० ११ को तार मिलते ही मैंने पत्र दिया था। सुना है, आपको मिल गया है।

आपके कान में अब पीप नहीं आती सो महात्माजी की कृपा से आशा है कान ठीक हो जायगा। विनोबा को प्रणाम मालूम हो। आपको विनोबा का साथ हो गया, यह परमात्मा की दया है। यह तो सोने में सुगंध है।

कमल को पत्र लिख दिया है। दो-चार दिन रामेश्वर के पास रहकर वर्धा ही आने का विचार रखे। मैं लिवर की शिकायत व छाती की धड़कन के के लिए जल-चिकित्सा का प्रयोग करती हूं। ५-३० बजे उठकर सबके साथ प्रार्थना। ७ से ७-३० टब में ३० मिनट बैठना। ३० मिनट व्यायाम और बरामदे में घूमना। उसीमें छाती धड़कती है, मगर १०-१५ मिनट में शांत हो जाती है। गीता-पाठ व साथ ही दो-तीन पूनी तकली। १०-३० बजे भोजन में मोटे आटे की १ रोटी, ताजा साग, आधा सेर मट्ठा। फिर वाचना, और वाचते-वाचते सोना। १०-१२ सतरे मिलते हैं। शाम को पाव भर दूध। शाम को चौक में खेलना, रामायण सुनना वगैरा। प्रत्येक का अलग-अलग ज्ञानोपदेश। फिर खुले में मच्छरदानी लगे पलगों की लाइन में सोना, जैसे इद्रभवन लगा हो, प्रभु की माया है। मैं हिन्दी का वाचन करती हू। मेरे स्वभाव में अस्थिरता है, जिससे शांति ज़रा कम रहती है। परन्तु यहा शांति मिलेगी और टब से फायदा होगा। मन में श्रद्धा है।

वजन तो १४० का १३० हुआ है, पर स्वास्थ्य ठीक है। वह वजन जाड़े का था, सो गया। घी, शक्कर, अनाज कम खाने से वजन चाहे न बढ़े, पर लीवर ठीक हो जायगा। राधाकिसन को बच्चो के लिए सदेशा भेजा था तो उसने मुझे धमकाया कि तुम अब बाहर की दुनिया भूल क्यो नहीं जाती। तुम्हारी तरफ से हम मर गये, हमारी तरफ से तुम मर गये। तबसे मैं इस वाक्य का पाठ की तरह याद किया ही करती हू। सदेशे भी कम कर दिए हैं। खैर, आप मेरी चिंता न करे। यहा हमारा कंपू (साथ) बहुत उत्तम

जुड़ा है। सब कुटुंब-भाव मे रहते हैं। जाति, अछूत-सुधार में आपकी इच्छानुसार फायदा होगा।

जानकी का प्रणाम

: ११४ :

धुलिया-मंदिर (जेल),
(रामनवमी) १५-४-३२

प्रिय जानकी,

चि० राधाकिसन ने, गिरफ्तार हुआ उस रोज, याने ता० ३१-३ को, तुमसे मिलने के बाद, तुम्हारे स्वास्थ्य की खबर भेजी थी। तुम घर की थोड़ी चिंता रखती हो, ऐसा राधाकिसन ने लिखा था। सो जेल जाने के बाद भी चिंता रहा करेगी तो फिर जेल का क्या फायदा मिल सकता है? मेरी तरह बाहर की सब चिंता छोड़ देनी चाहिए और खूब आनन्द में हँसते-खेलते, विनोद करते व दूसरी बहनों को हिम्मत देते हुए समय बिताना चाहिए। आशा है, तुम अब ऐसा ही करोगी। सब बहनों को मेरा प्रणाम, वंदेमातरम् कहना। चि० तारा को आशीर्वाद। मेरा मन व स्वास्थ्य बहुत ही ठीक रहता है। पू० विनोबा की संगति, खेलने-कूदने व कातने में खूब आनन्द से समय बीतता है।

मुझे 'सी' में से 'बी' में रखने का हुक्म आया है। मैंने अभी स्वीकार नहीं किया है। मेरा वजन अब भी १९६ रतल है, याने बहुत ज्यादा है। इसपर से भी तुम मेरे मन की स्थिति जान सकती हो। मन का असर शरीर पर अवश्य पड़ता है। इसलिए मन को खूब आनन्द में रखना चाहिए। मेरी तो यहा भी थाना, नासिक आदि की तरह ही अधिकारी खूब प्रतिष्ठा करते हैं। जेल में सुधार भी होता जाता है। प्राय: जवाबदारी का काम एक प्रकार से अपने लोगों के ही सिपुर्द है। मैं सुबह ४ बजे व रात को ८ बजे विनोबा के साथ बराबर नियम से प्रार्थना करता हू। मुझे व विनोबाजी को नासिक से भी बड़ी और स्वतन्त्र कोठरी दी गई है। तुम मेरी, चि० कमल की व घर की चिंता न करना, जिससे यह कहने का मौका न रहे कि स्त्रिया बिना कारण चिंता किया करती हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ११३ :

नागपुर-जेल
२३-५-३२

श्री जमनालालजी,

यह है पू० बापूजी का कार्ड, २४-४-३२ का लिखा हुआ—

चि० जानकी बहेन,

मने कागळ लखजो। तमारी तबीयत केम खराब रहे छे? शुं खाओ छो? फळ बराबर लेवा जोइये। जमनालालजी के कमलनयननी के बीजा कोईनी फिकर करवानी होय नही। कंई वांचवानु छे के? साथ कोनो छे? अमे त्रणेय मजामा छीये। तमने घणीवार संभारिये छीये।[1]

बापुना आशीर्वाद

मैंने इसका जवाब दे दिया है।

दस मनटे रोज पोद्दारों के यहां से आते हैं। मुनक्का अदरख चाहिए तो वह भी मंगा लेती हूं। हिन्दी का वाचन खूब चलता है। सबके साथ खेलकूद, आनन्द रहता है। चारों ने प्रणाम कहा है। आप धुले में सोने लगे होंगे। कमल के सिवाय और तो कोई विचार का कारण है नहीं। अब तो कमल का भी कोई विचार नहीं है। वैसे तो होशियार है ही। आप मेरी तरफ से निश्चित रहिए। अब मुझे आनन्द लेना भी आने लगा है।

विनोबाजी व कमल साथ ही आयेंगे सो कमल की इच्छानुसार पढ़ाई का काम उनको ही लेना पड़ेगा। घड़ी साथ ही रहती है। नियमितता का खूब

---

१. पत्र का हिन्दी-अनुवाद इस प्रकार है—

चि० जानकीबहन

मुझे पत्र लिखना। तबीयत क्यों खराब रहती है? क्या खाती हो? फल ठीक से लेने चाहिए। जमनालालजी या कमलनयन की या किसी दूसरे की फिक्र नहीं करनी है। कुछ पढ़ना होता है? साथ किसका है? हम तीनों मजे में हैं। तुमको बहुत बार याद करते हैं।

—बापू के आशीर्वाद

फायदा मिलता है। पांच बजे उठना, प्रार्थना-वंदन, ६ बजे टब बाथ-३० मिनट, ३० मिनट घूमना, आराम, पाठ, कातना। १० बजे भोजन, गपशप, १२ से वाचन करते-करते सोना। २-३० बजे उठकर नीबू का पानी पीना। थोड़ा लिखना भी दो-तीन रोज से शुरू किया है। ४-३० बजे बाहर निकलकर वापस खोली मे। संतरे खा-पीकर ६ बजे से मौज, गरबा, वगैरा। डायरी लिखना। ७ बजे स्नान, दूध पीकर, राम की जगह 'बाम-नाम' की माला फेरते हुए पलग पर पड़ना। कीर्तन वगैरा चलते रहते हैं। जाप में बापू के 'बा' और राम के 'म' इस तरह 'बाम-नाम' की रोज ३॥ माला फेरी जावे तो एक मास में सवा लाख नाम का जाप हो जाता है। फिरते-फिरते भी माला फेर लेते हैं। माला गले मे या हाथ में ही रहती है। सब हँसते जाते हैं।

जानकी का प्रणाम

: ११६ :

धुलिया-जेल,
१-६-३२

प्रिय जानकी,

तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार जानकर संतोष हुआ। मेरा मन और स्वास्थ्य ठीक है। मेरा वजन पच्चीस रतल कम हुआ है। परन्तु उससे तो मुझे सुख ही मिल रहा है। ३५ रतल से ज्यादा कम होने लगेगा तब अवश्य खान-पान में फरक करूंगा। जेल-अधिकारी मुझे तो खुशी से फरक करने देंगे। तुम बिल्कुल चिंता मत करना। मुझे तो आशा है कि मैं बाहर आने पर पहले से ज्यादा शारीरिक परिश्रम कर सकूंगा। विनोबाजी की संगति व प्रवचन से बडा लाभ एवं सुख-शाति मिल रही है, जो आजीवन काम आयगी। आशा है, तुम भी सब प्रकार से मजबूत होकर बाहर आओगी। चि० कमल-नयन छूटने पर मुझसे मिल जायगा। इमली-गुड़ के शरबत का आनन्द तुम्हारे नसीब में कहां है। टाल्स्टाय की कहानियों की किताब भिजवाई है, वह चि० तारा से सुनना। किताब उत्तम है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ११७ :

धुलिया-जेल,
१४-७-३२

प्रिय जानकी,

विनोबा की जबानी तुम्हें यहा की सब हकीकत मिलेगी। इस मास के आखिर तक तुम छूट जाओगी। चि० कमल भी छूट जायगा। बाद में मुझसे एक बार मिलने यहा आ जाना।

पू० विनोबा की सगति से बहुत सुख, शांति और लाभ मिला है। चि० कमल, मदालसा, रामकृष्ण आदि की पढ़ाई और रहन-सहन की व्यवस्था के बारे में विनोबा से बहुत चर्चा हुई है। हम दोनो एकमत हो गये हैं। आशा है, तुम भी उसे स्वीकार करोगी। विनोबाजी ने कमल को साथ रखने की उसे उत्तम अंग्रेजी पढ़ाने की जिम्मेदारी लेना स्वीकार कर लिया है। चि० रामकृष्ण को नाना कुलकर्णी के ही अधीन करना है, नही तो उसे बहुत हानि पहुचने का डर है। चि० मदालसा की इच्छा बालकोबा के पास पढने की है, तो वह भी व्यवस्था विनोबाजी उत्तम प्रकार से कर देंगे। अगर विनोबा का बाहर रहना हुआ तो जैसे तुम्हें सतोष हो उस प्रकार से उनके साथ चर्चा करके अपना समाधान कर लेना।

मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। अब मैंने दूध, दही और गेहू लेना शुरू कर दिया दिया है, जिससे वजन १७१ रतल वजन हुआ, याने घटने के बदले १॥ रतल वजन बढा है। अब वजन घटने का डर नहीं रहा। मुझे पहले से ज्यादा ताकत, उत्साह व हलकापन मालूम देता है। आशा तो होती है कि स्वास्थ्य ठीक सुधर जाने पर बाहर आना होगा। बिना दवा-दारू के इस बार 'सी' वर्ग की खुराक ने ३५॥ रतल वजन कम करके बहुत लाभ पहुचाया है। मेरा वजन जरूरत से ज्यादा हो गया था। आजकल मेरी खुराक है—गेहूं की रोटी—इच्छा हो तो ज्वार की रोटी, दोनो वक्त हरा साग, एक वक्त थोड़ी दाल, एक रतल दूध अथवा आधा रतल दूध और आधा रतल दही, एक नीबू और ६ केले। और दिनचर्या है—सुबह ४ बजे उठना, प्रार्थना के बाद ठडा पानी पीना, थोडी देर बाद निवृत्त होना। 'मनाचे श्लोक', तुकाराम के अभग और विनोबा की 'गीताई' का पाठ—बाद में पाच जने मिलकर कुएं में से ६०

डोल पानी निकालना। चर्खा ५०० बार अंदाजन। कभी ज्यादा भी। भोजन, आराम, उत्तम पुस्तकें पढ़ना। शाम को थोड़ा खेलकूद। इस प्रकार आनन्द से दिनचर्या खतम होती है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ११८ :

यरवदा-मंदिर, १२-१-३३

प्रिय जानकी,

मै तुम लोगो के पत्र की राह आज तक देखता रहा। मुझे सविस्तर पत्र ता० ९-१ को या देर-से-देर १०-१ का अवश्य मिल जाना चाहिए था। खैर, तुम लोगो की प्रसन्नता के समाचार तो पूज्य बापू से सुन ही लिया करता हू।

यहा आने पर स्वास्थ्य मुझे तो बहुत ठीक मालूम देता है। जेल के बडे डाक्टर मेजर मेहता प्राय हर रोज ही जाच कर लिया करते है। तबियत बहुत हल्की और उत्साह से भरी मालूम देती है। भूख खूब लगती है। मुझे वजन की ज्यादा परवा नही है। मुझे आजतक खुराक इस प्रकार मिलती है—दूध २॥ रतल, मक्खन २॥ तोला, एक पपीता, गुड़ ५ तोला और साग दोनो समय पेट भरकर। साग मेरे लिए अलग बनकर आता है। तुम सब लोग मिलकर जितना साग खाते होगे उतना मै अकेला खा लेता हू। साग मे फूलगोभी, बैंगन, लौकी वगैरा मुख्य रहती है। दो नीबू और ४ टमाटर भी मिलते है। रोटी चोकर की (ब्राउनब्रेड), एक रतल वजन की, जो यहा जेल में ताजा बनती है, लेता हू। पू० बापू की सलाह मूजब उसका टोस्ट बनाकर दोनो वक्त खाता हू। इस रोटी में भूसी ज्यादा होती है, आटा कम। पचने में यह ठीक रहती है। मेरा भोजन यहां सुबह ९॥ बजे व शाम को ३॥ बजे होता है। इस प्रकार का निश्चित समय घर में निभना कठिन है। चावल तो पहले ही नही खाता था। दाल भी प्राय: दो-अढाई महीने से नही खाता हूं।

मेरी दिनचर्या अच्छी चलती है। पू० बापूजी से मिलने की तो बबई सरकार से परवानगी आ ही गई है। अभी तक मै उनसे सात बार मिल चुका हूं। पत्र-व्यवहार भी यहा-का-यहा होता रहता है। अस्पृश्यता-निवारण के कागज एवं पत्र-व्यवहार की फाइले मेरे पास आती रहती है। मै अब पूर्णतया

इस कार्य से परिचित रहता हूं। मुझे जो उचित मालूम होता है, बापू को लिखकर या उनसे मिलने पर कहा करता हूं। प्राय: रोज में पाच-छः घंटे हरिजनो के काम, उससे सम्बन्धित विचार, अध्ययन आदि में बिताता हूं। इससे मन को खूब सुख व सतोष रहता है। सुबह ४ बजे उठने की आदत पक्की हो गई। इससे भी खूब लाभ व सतोष रहता है।

दिनभर में मेरे पाच से छः घटे हरिजन-सबधी काम में, तीन घटे करीब घूमने व व्यायाम मे, दो घटे दो बार के भोजन में (मैं दो बार ही खाता हू), दो घटे निपटने, स्नान व तेल लगाने आदि में, एक घटा चर्खा, एक घटा प्रार्थना, एक-दो घटे दूसरी पुस्तके पढने, गपशप में या किसी दिन आराम या बापू से भेंट आदि में निकलता है। याने सुबह ४ से रात को ९ बजे तक का ठीक कार्य सतोषकारक चलता है। दिन-रात बहुत ही जल्दी जाते-आते दिखाई देते हैं। यहा की हवा, जल, दृश्य वगैरा सभी उत्तम है। मुझे सब प्रकार से शांति और आराम मिल रहा है। इतना आराम मुझे बाहर मिलना कठिन था।

तुम्हे इस ता० १६, याने माघ वदी पचमी सोमवार को बराबर ४० वर्ष पूरे होकर इकतालीसवा वर्ष चालू होता है। उस रोज मैं भी परमात्मा से प्रार्थना करूगा कि तुम्हें सद्‌बुद्धि प्रदान करे और तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम रखते हुए तुम्हारे शरीर और मन मे सेवा-कार्य, खासकर बापूजी के बताये मुताबिक हरिजन-कार्य, करने की योग्यता प्रदान करे। तुम्हारे जन्म-दिन के निमित्त मेरा प्रेमसहित आशीर्वाद स्वीकार करना। तुम भी परमात्मा से सद्‌बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करना। उस रोज पू० विनोबा के पास नालवाडी में भी कुछ समय बिताना। विनोबा की राय से अपने भावी जीवन का कार्यक्रम निश्चित करने का प्रयत्न करना।

माघ सुदी ५ को भेरू का विवाह करना है ही। मेरे विचार तो तुम जानती ही हो। मैंने चि० गगाबिसन व पूनमचद को भी कह दिया था। कोई आडबर तो करना है ही नही। तुम सब या केसर वगैरा रहो। बालकों की जरूरत नही। फिर तुम लोगों की इच्छा। सेलू जाना। रसोई सादी कच्ची तो जरूर हो। हो सके वहातक सेलू में एक बार खाने का रखना। लडकी घूघट तो निकाल ही नहीं सकती। साथ में लडकी व लड़का अपनी-अपनी

प्रतिज्ञा पढ़ने से ही खूब अच्छी तरह समझकर पाठ कर लें और उनके मुंह से ही पाठ करवाने का ख्याल करना। इसमें गलती न होने पावे। मेरी ओर से गुप्त लक्ष्मी व भेरू को आशीर्वाद व उपदेश देना। मैं इस संबंध में अलग पत्र नहीं लिख सकूंगा। चि० कमल को ता० १ फरवरी, यानी माघ शुक्ला ७ बुधवार को १८ वर्ष पूरे होकर उन्नीसवां वर्ष लगेगा। परमात्मा उसे सद्बुद्धि प्रदान करे व ऐसी शक्ति दे कि वह अपना जीवन पवित्रता के साथ सेवा-कार्य में लगा सके व अपना जीवन सफल बना सके। चिरंजीव हो, ऐसी मैं भी प्रार्थना करूंगा ही। मेरी ओर से भी तुम इसे आशीर्वाद देना। यह भी जन्म-दिन के रोज अपने भविष्य जीवन का विचार कर कुछ निश्चय करना चाहे तो पू० विनोबा व तुम्हारी व चि० राधाकिसन की राय से कर सकता है। जिस प्रकार उसे सुख मिले वैसा ही वह विचार करे। उसे भी मैं अलग पत्र नहीं लिख सकूंगा।

चि० रामकृष्ण के स्वास्थ्य, पढ़ाई आदि की संतोषकारक व्यवस्था चि० राधाकिसन व श्री नाना आठवले की राय मंजिब हो सके तो जरूर कर देना। उसे भविष्य में असंतोष न रहे, उसका ख्याल अभी से रखना। इसका गला, नाक कैसा रहता है? व्यायाम आदि कराते रहना चाहिए। मोह कम करके इसका सब प्रकार से कल्याण हो, तुम्हें उसी मार्ग का ख्याल करते रहना चाहिए।

चि० मदालसा के पत्र के हाल पू० बापूजी ने मुझे कहे थे। वह और तुम भी कभी-कभी नालवाडी विनोबा के पास जाया करती हो, यह ठीक है। चि० मदालसा, नर्मदा, रामकृष्ण, केसर वगैरा की तबीयत ठीक रहनी होगी। अबकी बार तो मैंने भी थोड़ा डाक्टरी, वैद्यकी व खानपान, सूर्य-स्नान आदि का साधारण अनुभव प्राप्त किया है, वह आगे काम आवेगा।

चि० कमला, गुलाब, भाग्यवती, शांता, सुशीला (लंदन में) वगैरा को मदालसा या नर्मदा के द्वारा मेरी राजी-खुशी की व आशीर्वाद की सूचना भिजवा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—१६ जनवरी को तुम्हारा जन्मदिन आता है। गये साल इसी तारीख को मुझे जेल हुई थी। गये साल माघ बदी ५ को मैं भायखला-जेल से

गोकुलदास तेजपाल अस्पताल ले जाया गया था। वजन २०४ रतल हुआ था। इस माल वजन १६६ है। मुझे तो लाभ ही हुआ है।

११९

वर्धा, २८-६-३३

प्रिय जानकीदेवी,

मैं यहा कल आ गया। यहा आने से तबियत में कुछ शांति मालूम देती है। मैंने ऐसा विचार कर लिया है कि सिवाय अनिवार्य अपवाद के, मैं ता० २२ जुलाई तक मोटर या रेल में नहीं बैठूगा। इससे कुछ ज्यादा शांति मिलने की आशा है। तुम मेरी चिंता न करना। डा० मेहता ने चोकड़ के आटे की रोटी, फल इत्यादि खाने को बताया था। उसके माफिक बहुत-कुछ आज से खाना शुरू कर दिया है। चोकड़ के आटे की रोटी खाने में अच्छी लगती है।

आज मैंने काकासाहब को पत्र लिखा है। वह तुमसे सलाह करके चि० कमला को डा० मेहता को दिखा देंगे तो ठीक होगा। मेरी गैरहाजरी में उसका इलाज शुरू हो जाय तो उसकी तरफ की थोड़ी चिंता कम हो जाय।

लक्ष्मण की तबियत अब ठीक होगी। जबतक उसकी तबियत बिल्कुल ठीक न हो जाय तबतक नानू को यहा भेजने की जरूरत नहीं है।

अधिक समय तो मैं मुकदमे के काम में ही लगाना चाहता हू। दूसरे कामों को एकाध घंटा दूंगा।

चि० मदालसा के साथ आज घूमते हुए नालवाड़ी गया था। उसे पू० विनोबा के शिक्षण आदि में पूर्ण संतोष है। उसके स्वास्थ्य में भी लाभ है। मुझे भी उससे बातें करके सुख मिला। वर्तमान हालत में मेरे खाने-पीने तथा अन्य बातों की व्यवस्था जितनी अच्छी यहा हो सकेगी, उतनी और कहीं होना कठिन है। यहा कल रात को ८ घंटे सोया, आज दिन को तेल की मालिश हुई व दो घंटे सोने को मिला। इतना और कहा मिल सकता है।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—फुरसत मिले तो पत्र देना। पू० काकासाहब का पत्र पढ़कर उन्हें दे देना।

: १२० :

वर्धा, ३०-८-३३

प्रिय जानकीदेवी,

पू० बापूजी ने तुमको वहीं (पूना में) रहने को कहा है, सो एक तरह ठीक ही है। अगर तुम उनके कहने से वहीं बनी रहीं और सुदा-नमास्ता प्लेग की शिकार हो गईं तो मुझे तो संतोष रहेगा। ऐसी हालत में तुम्हें पू० बापूजी का आशीर्वाद मिल जायगा और उसके साथ-ही-साथ स्वर्ग भी मिल जायगा। इससे अब मुझे तुम्हारी चिंता तो कम है।

मेरी तबियत ठीक है। उसकी चिंता न करना। मरते वक्त तो चिंता बिल्कुल ही न करना, नहीं तो फिर संसार में वापस आना पड़ेगा। जो डरता है, उसे ही प्लेग दबोचता है। डरनेवाले के शरीर-तंतु कमजोर हो जाते हैं और कमजोरी में हो बाहरी बीमारियों को मौका मिल जाता है। इसलिए अगर मरना नहीं चाहती हो तो डरना मत। तुम अबकी बार बच गईं तो कम-से-कम प्लेग का डर तो तुम्हारा चला ही जायगा। खूब उत्साह और आनंद में रहना। दूसरे कोई घबरावें तो उनकी घबराहट दूर करते रहना। विनोद में लिखा है।

मेरी गवाही बहुत करके ता० ५ तक हो जायगी, ऐसी आशा है। पूना आऊं क्या? या तुम बापूजी को यहा ला सकती हो? अब तो तुम रामेश्वर से सेक्रेटरी का काम ले सकती हो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१२१ ·

पटना,
२९-६-३४

प्रिय जानकी,

आशा है कि तुम सब आनद से वर्धा पहुच गये होगे। मेरे साथ भागीरथीबहन व चि० अनसूया (जाजूजी की लड़की) हैं। मेरे खान-पान आदि का ये दोनों बहुत ख्याल रखती हैं। सबोंका वजन कितना बढा यह लिखना। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

पू० राजेन्द्रबाबू के बड़े भाई का देहान्त हो जाने से घर की सारी

जिम्मेदारी उन्हींपर आ पड़ी है। मैं उसका प्रबंध कर रहा हूं। आशा है कि ऐसी व्यवस्था हो सकेगी, जिससे कि उनका पूरा समय कांग्रेस व देश के काम में लगता रहे।

पूना की दुर्घटना[1] में पू० बापूजी तो बचे ही, साथ में चि० ओम् वगैरा भी बच गईं। जिसको ईश्वर बचानेवाला हो उसे कौन मार सकता है? इस प्रकार की घटनाओं से ईश्वर की शक्ति व अस्तित्व में विश्वास बढ़ता है।

मेरा वर्धा आना अगस्त की १० तारीख तक होना संभव है। चि० कमल का स्वास्थ्य ठीक होगा। चि० सुशील को याद आया करती है। रामकृष्ण की पढ़ाई का इंतजाम भी ठीक तौर से होना जरूरी है। चि० कमलनयन, राधाकिसन व लोढेजी की सलाह से प्रबंध करना ठीक होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१२२

अल्मोड़ा,
(जुलाई ३४)

हे भगवान्,

सेठजी को पत्र एक साथ दूसरों से लिखवाने का विचार था, इसलिए यह भगवान के नाम से लिखाती हूं।

अबकी बार यहां हमेशा जितनी ही वर्षा कई दिनों से नहीं आई है। कोठियों का पानी खत्म होने तक शायद आ जाय। कल जरा बादल आये थे। गुलाब के फूल अबकी बार नहीं दिखाई देते, पानी तथा ठंडा न होने का ही कारण होगा।

रोग तो यहां किसीको भी नहीं है। यह तो निश्चिंतता हो समझिये।

जिस कमरे में आबिद अली सोते थे, उस कमरे में हम रहते हैं और उसी कमरे में से रास्ता है। छोटी कोठी में, जिसमें प्रभुताई सोते थे, उसमें कोयले की सिगड़ी पर रोटी बनाते हैं, जिससे मकान काला नहीं हो सकता है। आज सब का तोल करा लिया। मास्टरजी कमल, कमला, सबकी पढ़ाई ठीक

---

[1] हरिजन-यात्रा में एक मोटर में जाते हुए पूना में किसीने गांधीजी पर बम फेंका था, जिसमें वे और उनके साथी बाल-बाल बच गये थे।

जमा रहे हैं। मैं भी रस तो लेती हूं। घूमना-फिरना अब जम जायगा। कमल तो घोड़ा ढूढ़ता है। फिर खूब फायदा हो जायगा। विसरवाले घोड़े को बेचकर नया घोड़ा लिया है। आप कुछ भी फिकर न करना।

नमस्कार! कार्यक्रम पीछे लिखेंगे।

जानकी का प्रणाम

: १२३ :

बंबई, १२-१-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। भागीरथीबहन का हुकम काम में लिया सो ठीक किया। मेरा दूध, अखरोट, सेव, प्रून्स का सेवन बराबर चल रहा है। रात को सोते समय बदाम के तेल की मालिश सिर में मानू किया करता है। रात-दिन मिलकर नौ घंटे सोने में जाते हैं। यहा आने के बाद बोलना बहुत कम होता है।

परीक्षा के बारे में तुम्हे जिस प्रकार संतोष हो या चि० कमला जैसा कहे वैसा करना। तुम्हारे पास होने की तो कोई आशा है नहीं, फिर भी तुम्हारी इच्छा। साहित्य सम्मेलन की परीक्षा कब से कबतक है, लिखना। जिस प्रकार यहा मुझे शाति मिल रही है उस प्रकार बहुत ज्यादा दिन मिलेगी तो शायद शाति से थकावट आ जाय। खैर, अभी तो ठीक चल रहा है।

अब रोज चिट्ठी नहीं देने का विचार है, सबको कह देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२४

बंबई, १९-१-३४

प्रिय जानकीदेवी,

तुम्हारी तो अभी परीक्षा की जोरो से तैयारी चल रही होगी। इसीसे तुम्हे इन दिनो में पत्र नहीं लिखा। मेरा गाडा ठीक लुढ़कता जा रहा है। किसी बात की चिंता नहीं करना। खूब पैसे कमाने की योजना सामने आ [illegible], एक-एक धंधे में दो-दो लाख का नफा बताया जाता है। खेल-कूद [illegible] हो रहा है। परीक्षा देने के बाद पूरा हाल लिखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १२५ :

बबई, २१-९-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला, समाचार मालूम हुआ। तुम परीक्षा में अवश्य बैठना। फेल होने से घबराने का कोई कारण नही। तुम लोगो की परीक्षा होने के बाद ही मेरा वहा आना ठीक रहेगा। तब तुम सब चिंताओ से मुक्त रहो। मेरा वहा आना अभी १२-१३ रोज तो होता नही दिखता।

जमनालाल का वदेमातरम्

: १२६ :

बबई,
२९-९-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र आज मिला। मिल खरीदने का विचार तुम सबोको पसद नहीं आया, जानकर खुशी होती है।[1] खैर, अभी तो मिल लेने का विचार छोड़ दिया है।

कमल का अग्रेजी का पर्चा ठीक गया होगा, लिखना। चि० कमला को कहना, पर्चा ठीक नही हुआ हो तो चिंता न करे। दूसरी बार परीक्षा दे सकेगी। मन पर असर नही होना चाहिए। तुम तो इस बारे मे पक्की हो ही। तुम्हारे पत्र का हाल मैंने आज डाक्टर शाह को कह दिया है। उन्हे यह भी कह दिया है कि उन्हे पूरा सतोष हो तब ही वह मुझे छुट्टी देवे। पू० वल्लभ-भाई आज आ गये है। मिलना हुआ था।

बीच में तो तुम्हे परीक्षा के बाद कुछ रोज यहा बुलाने की इच्छा हुई थी। कुछ बाते भी करनी थी। खैर, वहा जल्दी आना नही हुआ तो फिर विचार किया जायगा।

जमनालाल का वदेमातरम्

पुनश्च—पू० मा को कहना कि आनद स्वामी ने उनका सदेश भेरू की सगाई का दिया है। मेरे ख्याल में है। वह चिंता न करें।

[1] देखिए 'बापू के पत्र', पृष्ठ ११६।

रहे है। मैं भी रस तो लेती हूं। घूमना-फिरना अब जम जायगा। कमल
पांड़ा बूढ़ता है। फिर खूब फायदा हो जायगा। विसरवाले घोड़े को बेचकर
पाडा लिया है। आप कुछ भी फिक्र न करना।
नमस्कार! कार्यक्रम पीछे लिखेंगे।

जानकी का प्रणाम

१२३ · बबई, १२-९-३४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। भागीरथीवहन का हुकम काम में लिया सो ठीक किया। मेरा दूध, अखरोट, सेब, प्रून्स का सेवन बराबर चल रहा है। रात को सोते समय बदाम के तेल की मालिश सिर में नानू किया करता है। रात-दिन मिलकर नौ घंटे सोने में जाते है। यहा आने के बाद बोलना बहुत कम होता है।

परीक्षा के बारे मे तुम्हे जिस प्रकार संतोष हो या वि० कमला जैसा कहे वैसा करना। तुम्हारे पास होने की तो कोई आशा है नही, फिर भी तुम्हारी इच्छा। साहित्य सम्मेलन की परीक्षा कब से कबतक है, लिखना। जिस प्रकार यहा मुझे शाति मिल रही है उस प्रकार बहुत ज्यादा दिन मिलेगी तो शायद शाति से थकावट आ जाय। खैर, अभी तो ठीक चल रहा है।

अब रोज चिट्ठी नही देने का विचार है, सबको कह देना।

जमनालाल का वदेमातरम्

· १२४ · बंबई, १९-९-३४

प्रिय जानकीदेवी,

तुम्हारी तो अभी परीक्षा की जोरो से तैयारी चल रही होगी। इसीसे तुम्हे इन दिनो में पत्र नही लिखा। मेरा गाड़ा ठीक लुढ़कता जा रहा है। किसी बात की चिंता नही करना। खूब पैसे कमाने की योजना सामने आ रही है, एक-एक धधे में दो-दो लाख का नफा बताया जाता है। खेल-कूद, आराम, विनोद सब हो रहा है। परीक्षा देने के बाद पूरा हाल लिखना।

जमनालाल का वदेमातरम

पुनश्च—चि० मदालसा, उमा, रामकृष्ण, नर्मदा, राम वगैरा को आशीर्वाद कहना। पू० मां को प्रणाम कहना। केसर-गुलाब वगैरा को वंदे। खासाहब, काका साहब, किशोरलालभाई, जाजूजी वगैरा को भी प्रणाम कहना। अलग पत्र नहीं लिखता।

: १२९

बंबई, २१-१२-३४

प्रिय जानकी,

चि० दामोदर ने अपने साहित्यिक व कवि के स्वभाव के कारण आज का वर्णन बढ़ाकर लिखा है। हां, यह बात ठीक है कि आज सब मिलकर १॥ घंटा आपरेशन टेबल पर रहना पड़ा होगा। बीच में थोड़ी देर तो मैंने नींद भी ले ली थी। उस समय तो एक प्रकार से बिल्कुल ही तकलीफ नहीं हुई। अभी भी बहुत कम तकलीफ है, चींटी काटने-जैसी। मैं तो कहता हूं कि रात को माटुंगा में कमला के यहां मच्छर काटने से जो तकलीफ होती रही, उससे भी कम तकलीफ हो रही है। तुम बिल्कुल चिंता नहीं करना। १०-१२ रोज में ठीक हो जाने की आशा है। खूब आराम ले रहा हूं। अबकी बार मेरे कड़कपने का माप मालूम हो जायगा कि जरूरत पड़ने पर मैं खुद कितना कड़क हो सकता हूं।

चि० लाली तो माटुंगा में कमला व सुशील से इतना हिल-मिल गया है कि वह तो दूसरी जगह चलने का नाम भी नहीं सुनना चाहता। आज तो कहता था, आप दूसरी जगह जायगे या मुझे भेजेंगे तो मैं वर्धा चला जाऊंगा। रोया भी। सुशील से बहुत प्यार हो गया है। अच्छा लड़का है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—डा० साहब, डकनभाई, किशोरलालभाई, गोमतीबहन की संभाल बराबर रहे, इस बारे में वल्लभ और राधाकिसन को कह देना। चि० मदालसा का हाल लिखना।

: १३० :

बंबई, १२-१-३५

प्रिय जानकी,

मेरे कान में ठीक लाभ हो रहा है। धीरे-धीरे चमड़ी आ रही है। आराम,

नियमित होता जा रहा है। डा० खानसाहब और-उनका लड़का
खा दिल्ली से व उनकी अंग्रेज पत्नी व उसकी लडकी विलायत से
है। चि० लाली तो यहापर था ही। ये लोग तुमसे मिलने के लिए एक
के लिए वर्धा आ रहे थे। मैंने डाक्टरसाहब को समझाकर कहा है कि
कष्ट करने की जरूरत नही, मैं जब वहा रहू तभी ५-१० रोज के
आना ठीक रहेगा। वह मान गये है। इनका इतना प्रेम है। ऐसे मित्र
ज के जमाने में मिलना कठिन है। मुझे तो इनसे बहुत सुख और सतोष
ल रहा है।

जमनालाल का वंदेमातरम

: १३१ :

वर्धा, १५-१-३५

पूज्यश्री,

पत्र आपका कल मिला। खानसाहब सचमुच अद्भुत मनुष्य है। परंतु आपने उन्हे एक रोज के बदले दस रोज रखकर अपने प्रेम व उदारता को हद तक पहुचा दिया। उनके लिए आपका बबई में ही रहना, दिल्ली न जाना वगैरा सभी आपके प्रेम को प्रकट करता है। अच्छा है, एक बार डाक्टरो को पूरा समय दे दिया जाय, जिससे सबको सतोष रहे।

मदू का सब ठीक है। उसका वजन तो बापूजी के आने पर वह आप ही देख लेंगे। अभी विचार करना फिजूल है। खून मे सफाई काफी होत दिखती है तो वजन बढ़ते देर भी न लगेगी।

जानकी का प्रणाम

१३२

वर्धा, १६-१-३५

पूज्यश्री,

पत्र कल भी दिया था। बापूजी ने डाक्टरो को कड़क पत्र दिया है और मुझसे पूछा है कि तुम जाओ तो उमा को ले जाओगी? मैंने कहा, 'नहीं'। उमा का तो कार्यक्रम अच्छा जमा है। दिनभर सोने का मौका नहीं मिलता, रात को १० बजे सोती है, ५॥-६ बजे उठती है। बबई में उसे फायदा नहीं। तब बोले, तुम्हे जाने का मोह छोड़ देना चाहिए। सो मुझे तो जच गई। य

भी बोले कि चक्कर तो रोज थोडे ही आते है। यह तो, जैसे सांप आया और सरसर करके निकल गया, उसी प्रकार का है। बापूजी की बाते सुनकर मुर्दों में जीवन आ जाय, सो मैं तो मनुष्य हू। सचमुच रात को मुझे पूरी शांति रही। मदु बापूजी को छोडना पसंद नही करेगी। मेरा तो नुकसान नही होगा। बापूजी पर मेरी श्रद्धा तो है ही पूरी, पर आप उनका समय ज्यादा लेंगे। आप डर नही मानें तो मुझे यहा भी शांति है। बापूजीको देखकर विचार आता है कि अपनी तबियत सुधारनेवाला सुखी होकर दूसरो का काम कर सकता है, नही तो कइयो को चिंतित करता है। कमल का बर्ताव तो बडा ही संतोषकारक होता है।

अब मैं या तो कमल के साथ या बापूजी कहेंगे तब अपने आप आ जाऊंगी या आप बुलायेंगे तब। पर मेरा विचार नही करें। अंबालाल साराभाई आपसे मिलेंगे। कहते थे कि विलायत भेजो। और जर्मनी के डाक्टर आये हैं, उन्हे जरूर बताना। डा० शाह से पूछकर बतावें कि उसमें क्या है? यह तो मेरी भी इच्छा है।

जानकी का प्रणाम

. १३३

बबई, २९-१-३५

प्रिय जानकी,

तुम बीमार क्यो हुई? क्या ओम् के साथ चक्की पीसने का प्रकार है या अधिक चिंता के कारण? कौन ज्योतिषी आया था, जिसने चि० रामकृष्ण को १२ ता० को कष्ट आने की बात कही थी? उसे कुछ दिया तो नहीं ना? मैंने सुना कि ज्योतिषी ने केसरबाई से प्रह्लाद को कष्ट आने की बात भी कही। उसने डरकर उसे कुछ दिया भी। कितनी अज्ञानता अभी तक अपने घरों में भी विराजमान है! क्या तुम उस आदमी को पहचानती हो? उसे पुलिस में दे देना चाहिए।

आज मैं डा० शाह के अस्पताल में ड्रेसिंग के लिए गया था। डाक्टर ने कहा, पन्द्रह दिन में बिलकुल ठीक हो जाना संभव है। तुम्हारी इच्छा हो तो तुम आ सकती हो। यहा अगर बिना चक्की हो तो उससे तो यहां आ जाना ठीक रहेगा। चि० दामोदर, नानू तो खूब सेवा और ख्याल रखते हो

है, साथ में श्री सुव्रताबहन, चि० शान्ता, भाग्यवतीबहन भी आया
है। सुव्रताबहन व शाता तो भजन-चौपाई वगैरा दो रोज तक सुनातं
चि० सफिया का संबंध तो बहुत ठीक हुआ न ? मुझे तो पू० बापू ने
प्रमाणपत्र (सर्टिफिकेट) भेजा है। तुम भी इस प्रकार के कामों में
करो तो कितना ठीक हो।

जमनालाल का वंदेम

: १३४ :

वर्धा, २९-

पूज्यश्री,

आपका तार आया। इधर से मैंने लिखाया, उधर से आपका अ
अरस-परस का संबंध कैसा जुड़ जाता है ! मैंने एक रोज घी का भारी
उठा लिया, उससे छाती पर कुछ असर हुआ। पीछे उमा के साथ आटा
बैठ गई। उस समय तो मालूम नहीं पड़ा। पर पीछे धड़कन शुरू हो
मेरा मन तो वर्धा छोड़ने का नहीं है। बच्चों की पढ़ाई वगैरा की जमत
व्यवस्था में यहीं रहना अच्छा लगता है। मगर अब यह भी लगता
आपके पास थोड़ा लड़ाई-झगड़ा कर आऊं और देख आऊं तो दोनों के म
शांति ही होगी। बंबई से आने में ज्यादा दिन लगने का डर है। कम
साथ आने का विचार करती हू। बापूजी से मिलकर और आपको ज
हो तो कल भी निकलकर हम आ सकते हैं। उमा तो इतनी मेरे हा
आ गई है कि आठ आना, मन जानकर चलती है। और बालकों को
पूरा संतोष हो रहा है।

(यह पत्र अधूरा मिला है

: १३५ :

वर्धा, ३०-१-

पूज्यश्री,

पत्र आपका आज भी मिला। कल मैंने सविस्तर पत्र दिया है।
बापूजी के पास आने-जाने से मुझे यही शांति हो जायगी। कल से आज
हल्का है। आपका यहां आना जल्दी नहीं होगा। इसलिए इसी समय बा
कुछ रहने से आदि फल वगैरा खिलाने आदि की कुछ सेवा हो ज

इसीलिए आना है। बाकी ४-६ रोज में वापस आ नहीं सकूगी। बापूजी ने आज आने से रोक दिया। कल आपका पत्र आवे और आपको मुझसे कुछ मदद मिले तो आऊं। मेरी तबीयत में तो बापूजी की बातो से और उनकी हिम्मत देखकर चेतनता आ रही है। मैं आऊ तो उमा बापू की सलाह से कन्याशाला या बगीचे में रहेगी। नाना के पास या बालकोबा के पास भी रह सकती है।

जानकी

: १३६ .

क्वेटा सेंट्रल रिलीफ कमेटी, कराची[1],
५-७-३५

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २८ का पत्र मिला। कल शाम को एक तार भी मिला। तार से मालूम होता है कि तुम लोगो ने खाली (अल्मोडा) में रहना निश्चित किया है। मैंने तो इस बात को अब तुम्हारी इच्छा व वहा के वातावरण पर ही छोड़ा है। कल भोगीलालजी को श्री आर० एस० पडित को लिखे पत्र की नकल भी भेजी है। उसका उत्तर आने से उनके दिल के भाव भी मालूम हो जायंगे।

चि० कमल का पत्र आया है। तुम चाहो तो आगामी गरमी में कोलबो जा सकती हो। इस समय वहा नही जा सकोगी, क्योकि उसकी व्यवस्था अभी बराबर नही जमी है।

मैं तुम्हारे बारे में कोई खास चिंता नही करता हू।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३७ .

कराची-अहमदाबाद ट्रेन में
(मीरपुर खास), ७-७-३५

प्रिय जानकी,

ता० २ का पत्र मिला। तुमने खाली में रहना पसंद किया तथा अब

---

[1] क्वेटा में भयानक भूकंप हुआ था। उस समय की ब्रिटिश सरकार ने सार्वजनिक कार्यकर्ताओ को सेवा कार्य के लिए क्वेटा जाने पर रोक लगा

वहां रहने में कोई आपत्ति नहीं नजर आती यह लिखा, सो ठीक। तुम्हें व चि० मदालसा को जिस प्रकार संतोष मिले, उसमें मुझे खुशी है। जप शुरू किया सो ठीक किया। मैंने जप का कागज देखकर तुम्हारी इच्छा मुताबिक फाड़ डाला। ईश्वर से हमेशा सद्बुद्धि की प्रार्थना किया करना।

क्वेटा में लोगों की बहुत बुरी दशा हुई है। एक महीने बाद कराची फिर आना पड़ेगा।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: १३७ :

मुर्गी कुटीर (अल्मोड़ा),
३०-७-३५

पूज्यश्री,

पत्र बहुत आने-जाने लगे हैं। उमा का पत्र बड़ा व सुन्दर मिला। कमल के भी पत्र आते हैं। पर हमें तो काम नहीं है, इससे लिखते हैं। आपको सबके जवाब देने की जरूरत नहीं है। जाते वक्त पंडितजी[1] निश्चिंत होकर गए। वैसे आदमी अच्छे हैं। पर हमारी मुगलाई और उनके कायदे। कुछ भेद तो हरेक में होता ही है। बाद में वह हमारी सरलता और ढिलाई जान गये होंगे। यहां रहने में कुछ तो जेल के समान घबराहट होनी ही थी, पर मैं तो पक्की ही रही।

एक दिन वह हमसे कहने लगे—"बगीचे में किनारे की जमीन का टुकड़ा सपाट और सुंदर है। वहां से हिमालय तो चौथाई ही दिखेगा। पर मेरे बंगले के बजाय यहां जमीन ऊंची है। आपके लिए नल और बिजलीदार एक छोटा मकान बना दूंगा। दो वर्ष में यहांतक मोटर का रास्ता भी हो जायगा।"

ही थी। तब कांग्रेस ने कराची में एक रिलीफ कमेटी बनाई थी। जमनालालजी उसके संगठन के निमित्त कराची गये हुए थे।

[1]मदालसा का स्वास्थ्य बहुत चिंताजनक हो गया था। माताजी (देवी) उन्हें लेकर खाली (अल्मोड़ा) में रही थीं। जिस ठहरे थे, वह श्री रणजीत पंडित के मकान का आउट ( ) था।

इसी तरह के कई हवाई किले बाधते रहते हैं। पर हमें यहां काफी सीखने को भी मिला है।

मैंने कहा—"आपके २० हजार रुपये और लग जायंगे तब आपका मगज ठंडा हो जायगा।" वह जरा देर चुप-से रहे। फिर बोले—"अब लोग देखेंगे मैं खाली को कैसी बनाकर बताता हू। अजब-अजब फूल-फल लगेंगे। लोग जैसे आज रहते हैं, वैसे पशुओं की भाति थोडे ही रहेंगे। इनके सब मकान तोडकर फिर नये बनाऊंगा। . वहा एक बगीचा बनेगा। सब अपनी-अपनी खेती करके राजा के समान रहेंगे।"

एक दिन वह नीचे के झरने को नाप रहे थे। बोले—"पानी सब ऊपर ले आऊगा।"

पक्षी उडानेवाले लोग खेतों मे, जैसे मचान पर बैठते हैं वैसे ही, मदु एक पटिया खिडकी के पास रखकर बैठती है, वही सोती भी है। दिन में तीनो उसपर चढ जाती है, स्वरूपजी (विजयलक्ष्मी पडित) भी कुछ-कुछ हमारे जैसी ही लगी। अब १५ सितबर तक तो हम यही रहेंगे।

जानकी का प्रणाम

१३८

खाली (अल्मोडा),
१७-८-३५

पूज्यश्री,

अढाई सौ रुपये आ गये है। आपने तो रक्षाबधन का अच्छा फायदा ले लिया। हमें तो सुबह याद था। गाय के बछडे के गले मे राखी बाधी। फिर सोचा कि पीछे कोई आयगा तो देखेंगे। उसके बाद याद ही नहीं आई। और फिर त्योहार तो सब साथ ही का होता है। सासूजी, केसरबाई भाभीजी गुलाबबाई को 'राखी का पाव लगना' कहना। कल ता० १६ का आपकी चिट्ठी मिली। यहा सबका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। हाथ-पाव भी चमकने है। मदू बेटी से बेटा दिखने लगी है। अब तो वजन लेंगे तब १०० पौंड हो ही जाना चाहिए।

आप अभीसे प्रोग्राम मागकर ललचाते हो, बडे चालाक हो। प्रह्लाद का ब्याह होगा तब तो केसरबाई से खुशामद करानी थी। पर पन्ना का ब्याह

होगा तब तो आना ही है। राम परीक्षा के बाद मदू के पास आ सकता है।

आप कानपुर से यहा मेरे मेहमान बनकर आ जाओ। आपको आराम मिलेगा। साली में भी आ सको तो जगह की तकलीफ नही पड़ेगी। एक कमरा बंगले का भी खुला तो छोड़ा है। पर उसकी भी जरूरत नही पड़ेगी। पंडितजी को खबर दे सकते हो या १५ सितंबर तक हम शाति कुटीर चले जायगे। सो आपको ऊपर नहीं जाना हो तो शाति-कुटीर हम पहले आ जायगे। पडितजी ने तो कहा है कि चाहो तो १५ दिन और भी रह सकते हो। मैंने ही कहा कि क्या जरूरत है। आजकल वाचन ज्यादा करती हूं। मन लगता है, मगज ठिकाने आ रहा है। आपको देखकर बिगड जाय तो पता नही।

जानकी का प्रणाम

: १३९ :

वर्धा, २०-१०-३५

प्रिय जानकी,

आज भैया-दूज के शुभ अवसर पर चि० राधाकिसन का संबंध पू० जाजूजी की लडकी चि० अनसूया से होना निश्चित हुआ है। शाम को ६ बजे पू० बापूजी, बा इत्यादि सब लोगो के सामने सगाई की विधि हो जायगी। पू० मा को इस संबंध से संतोष है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४० :

बिंसर, अल्मोड़ा,
२३-१०-३५

पूज्यश्री,

आप सबोके पत्र बराबर सविस्तर मिल जाते हैं। ओम् को भी ठीक अनुभव हो जायगा। राम ही अबके शरीर ठीक लेकर आया है। अब आप इसकी व्यवस्था अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

भगवानजी भाई साबरमती से आराम लेने को आये हैं। तबियत अच्छी है। महादेवभाई का पत्र आया था।

राधाकिसन का (अनसूया से) चमत्कारिक योग ही मिला, जिससे कि डर के बदले सुख-शांति की ही आशा चारों तरफ दिखाई देने लगी है। मुझे मार्जी वगैरा की कभी कुछ-कुछ याद आ तो जाती है, पर सब जनो की राजी-खुशी की खबर आ जाने पर मुझे एकान्त में ही अच्छा लगता है। प्रहलाद के ब्याह के सिवाय हमारा कार्य-क्रम पूरा माघ महीने तक यहीं रहने का है। आपको भी एक वर्ष यहां रहना जरूरी है। साथ हो जाता तो अच्छा था, तथा नेताओं के लिए शरीर व घर-सम्बन्धी सोचने की अक्ल भगवान ने ही नहीं दी।

बरफ गिरने में अब १॥ मास बताते है। बरफ देखकर जी चाहे तब उतर जावेंगे। हमारे ऊपर किसीका दबाव तो है नहीं। आनद से रहते है, आप जरा भी विचार न कीजिये।

बालकोबाजी को क्षय की शंका के कारण डाक्टरों के पास ले गये है। विनोबाजी ने पहला स्टेज बताया है। मुझे विचार आया की उनको दवा-इंजेक्शनों के झगड़े में पटकने की बजाय यहां फायदा मिलेगा।

राधाकिसन, गुलाबचद, प्रहलाद, कमलनयन, चारों लड़कों का एक साथ विवाह हो तो कैसा रहे ?

जानकी के प्रणाम

: १४१ :

विन्सर,
(रात ९॥ बजे)
३०-१०-३५

पूज्यश्री,

आपका पत्र ता० २३ व २९ को बराबर मिल गया। उमा का ठीक हुआ। राम इस वक्त अच्छी तबियत लेकर आया है। अब इसे अकेले रहने लायक होशियारी भी आ गई है। अब आप इसकी पढाई को देख सकते है। सुव्रतादेवीजी आवें और मैं न मिलूं, इसमे बुरा तो लगता है, पर खैर। मदू की उन्नति कल्पना के बाहर हो रही है। पर उसको दशहरे तक यहां रखना जरूरी है। एक वर्ष आपको भी यहां रहना जरूरी है। कब पार पड़े वह तो भगवान जाने; अगर अभी साथ-साथ हो जाता तो अच्छा रहता।

: १४३ :

श्रीनगर,
९-११-३८

पूज्यश्री,

अभी ४ बजने आये हैं। धूप निकली है। बापू (रामकृष्ण) आया, जबसे घर पर नहाया ही नहीं है। झरने पर कभी दादा (धर्माधिकारी) के साथ व कभी भगवानभाई के साथ नहाता है।

परसों परसों शाम को १० मिनट तक ज्वारी की फुली-जैसे ओले पडे। मैं, मद्दू व भगवानजी तो गरम पानी से घर पर नहा लेते हैं। लेकिन बापू तो कहता है कि मैं घर पर गरम पानी से नहीं नहाऊगा। एक तो वह जानता है कि घर पर 'ऐसे नहाओ', 'वैसे तेल लगाओ', यह खटपट वह खटपट। और वहा ठण्डा पानी और पहिने कपडे। वैसे हिम्मत हो तो घर के बजाय झरने पर ही नहाना अच्छा है। मैं आपकी बडी, बरसाती कोट, मोजा रात को भी पहने रहती हू। हवा चलती है तो किवाड बद कर आग की शरण में बैठ जाते हैं। धूप निकलती है तो बडी तेज निकलती है। भगवानजीभाई कल चार घटे पलंग पर ही 'आत्मकथा' बाचते रहे।

अभी ४॥ बजे होंगे। मद्दू सोई है। भगवानजीभाई और मैं सिगडी के पास चिट्ठी-पत्री लिख रहे हैं। बापू व भुवन पानी लेने गए हैं। तेज हवा की आवाज आ रही है, पर धूप अच्छी लगती है। शुक्रवार है, डाकिये के इतजार में चिट्ठिया बढ रही है। डाकिया रात को आवेगा या कल सुबह। पूरे गाव में फिरता है।

मेरा मन लग रहा है। मद्दू गरम कपडे पहनना कठिनाई से ही शुरू करेगी। पीछे आदत पड जावेगी। मुझे तो यहा का हवा-पानी जच गया। मन लगता है। जाडा यहीं निकालने का विचार है। यहा का सोच मत करना। यहा से मन उचटा तो कॅटोन्मेंट में चले जायगे। ये आगये बापू वगैरा पानी लेकर। १ घटा लगा।

जानकी का प्रणाम

: १४४ :

वर्धा, १०-११-३५

प्रिय जानकी,

मैंने कल पत्र दिया, वह मिला ही होगा। राधाकिसन के संबंध से यहां माजी तथा अन्य सबको ही संतोष है। यहां आने के बारे में मैंने कल के पत्र में लिखा ही है। तुमने पूछा है कि "चारों लड़कों का एक साथ ब्याह हो तो कैसा?" सो तीनों का तो शायद एक मास में हो भी जायगा। चि० मदालसा कमल जैसी बढ़ रही है, सो ठीक है। उसको यदि कष्ट सहन नहीं होते हों तो अधिक कष्ट करना भी नहीं चाहिए। शक्ति के बाहर मोह रखना नहीं चाहिए।

मुझे वहां वर्ष-भर रहना जरूरी है लिखा, सो ठीक। चि० राधाकिसन का विवाह बहुत करके १६ दिसंबर सोमवार को होना संभव है। तुम्हें तो आना ही चाहिए। चि० मदालसा को भी एक बार ले आओ, सबोंसे मिल लेगी।

बापूजी भी दिसंबर के बाद गुजरात व दिल्ली जायंगे। विनोबा भी दौरा करनेवाले हैं। यहां भी गुलाबबाई, भगवानदेई वगैरा आवेंगे। तुम कब पहुंचोगी, सो लिखना। मेरा दिसंबर तक यहीं रहने का विचार है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४५ :

वर्धा, २२-११-३५

प्रिय जानकी,

चि० राधाकिसन का विवाह ता० २८ जनवरी, १९३६ का निश्चित हुआ है, यह तो मैंने तुमको इसके पहले भी लिख दिया है। अतः अब तुम लोग यहां ता० २२ दिसबर को आ सको तो ठीक है, जिससे 'फेलोशिप' की सभा में भी सम्मिलित हो सको। चि० मदालसा का हिमाचल-वर्णन पं० माखनलालजी को सुन्दर प्रतीत हुआ है तथा उन्होंने उसे अपने पास रख लिया है। मदालसा इस प्रकार अपनी सात्विक साहित्यिक अभिरुचि का विकास करेगी तो अच्छा ही होगा।

अगर तुम लोगों की इच्छा दिसंबर के आखिर तक वहां रहकर ही आने की हो तो फिर ता० ३ जनवरी तक यहां आ सकती हो। चि० प्रहलाद का

पुनश्च—कमला को हमारी तरफ से बहुत-बहुत प्यार करना। कही देने में व खर्च करने में संकोच मत करना। मेरे अक्षर बराबर पढे गये होगे। जानकारी देना।

: ३ :

वर्धा, ३१-७-१३

सिद्ध श्री वर्धा शुभ स्थान श्रीयुत आप जोग लिखी जावरा से जानकी का प्रणाम बंचना, बहुत आदर के साथ। कृपा-पत्र आपका आया, बाचकर बहुत आनंद हुआ। कारण, आपके हाथ के पत्र का मुझे चाव तो बहुत दिनों से था, पर डरती थी, कहती नही थी। आपने लिखा कि पत्र दूकान के तथा डालू के नाम से बराबर देते हैं, सो ठीक है।

कमला को गोदी में ज्यादा रखने की मनाही लिखी, सो आपका पत्र आये बाद से उसे गोदी में ज्यादा लेते-देते नही हूं। बालको में बिठा देते है, सो खेलती फिरती है। हाथ और जीभ बहुत चलाती है। पाव-पाव तो अभी जरा देर से ही चलेगी। कोई भी बालक बैठा हो तो उसे मारकर भगा देती है। डेढ-दो बरस के बालको को तो पास ही नही आने देती।

आपका सर्दी-जुकाम मिट गया, पर सोलह आने शरीर बराबर होगा, ऐसी खातरी नही होती।

आपने लिखा कि कमला की याद आने पर मन नही लगता, सो बाचकर एक बार तो मन में सोच हुआ। बाकी इधर भी जी उलझता है। बार-बार आना होता नही। आपने राखी पर बुलाने को लिखा, सो राखी पर तो आने देंगे नही। राखी के बाद भेज देंगे। माजी तो कहती है कि अभी तो आई हुई-सी लगती ही नही है। भादवा बदी अमावस तक चली जाना। श्राद्ध पर तो गये बिना चलेगा नही। अगर आपका मन नही लगता हो, तो ताकीद कर देना। राखी के एक-दो दिन बाद भेज देंगे, नही तो ५-७ दिन बाद आना होगा। डालू को या और किसीको तकलीफ न देने की लिखी, सो ठीक है।

नंदा के साथ १५०) रुपये की गिन्नी भेजी, सो पहुंची। रुपया निधड़क खरचने के लिए लिखा, सो ठीक है। पुस्तके और खिलौने भेजे, सो पहुंचे।

विवाह कलकत्ते में होगा। शायद ५ जनवरी को हो। तुम्हे तो चलना ही पड़ेगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४६ :

वर्धा, ९-१२-३५

प्रिय जानकी,

आज चि० रामकृष्ण का पत्र आया। समाचार मालूम हुए। इन दिनो पू० बापू का स्वास्थ्य कुछ नरम रहा है। बबई से डा० जीवराज मेहता भी कल आ गये। ब्लड-प्रेशर बढ़ गया था। अब तबियत साधारणत सुधर रही है। आराम की जरूरत है। इस समय भी राजकुमारी अमृतकौर परिचर्या कर रही है। परन्तु वह ता० १७ तक रह सकेगी। आगे की परिचर्या का सवाल उपस्थित हुआ तब तीन नाम सामने आये थे। मेरा, राधाकिसन का व तुम्हारा। अभी कुछ निश्चित नही हो पाया है। अच्छा हो, यदि तुम भी इस बीच यहा आ सको। चि० मदालसा की इच्छा वहा रहने की हो तो उसके रहने का प्रबध करके आ सकती हो। रामकृष्ण तुम्हारे साथ आवेगा ही। तुमको अपने निश्चित प्रोग्राम से केवल ५-६ रोज पहले आना पड़ेगा। यहा पहुचने का तार भेज देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४७ :

प्रयाग, ४-४-३६

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र आज मिला। तुम्हारे साथ चि० पार्वती (गगाबिसन की लड़की) आना चाहती हो तो लेती आना। उसकी सगाई भी करनी है। यहा बापूजी के साथ कांग्रेस[1] से करीब ३॥-४ मील दूर पर रहना होता है। अबकी बार की प्रदर्शिनी देखने योग्य है। तुम आ जाओगी तो एक-दो लड़किया भी देख ली जावेंगी। मैं तो खूब काम में रहूगा। तुम किस गाड़ी से पहुचोगी, लिख भेजना। ता० ८ को पहुचना ठीक रहेगा। मैं भी ता० ८ को ही पहुचूगा।

---

[1] यहां लखनऊ में होनेवाली कांग्रेस का जिक्र है।

उसी रोज शाम को जवाहरलालजी का प्रोसेशन (जुलूस) निकलनेवाला है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४८ :

वर्धा, २७-८-३६

प्रिय जानकी,

मैं कल यहा सकुशल पहुचा। आज से चर्खा-संघ की बैठक शुरू है। कल गो-सेवा-संघ की, और ३० को महिला-मंडल की।

आज पू० बापूजी सेगाव से आये हैं। बैठक अपने यहा बीच के कमरे में हुई है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १४९ :

वर्धा, १७-९-३६

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला था। आज तुम्हारा तार भी मिला। मैंने तार करवा दिया था, सो मिला होगा।

पूज्य बापूजी का स्वास्थ्य अच्छा है। चिंता की कोई बात नही है। तुमको दूध पचने लगा है, यह जानकर खुशी हुई। कल मैं सेगाव गया था। पूज्य बापू ने तुम्हारे बारे मे पूछा था। मैंने उनको दूध के बारे में नहीं कहा। फिर जब आज या कल जाऊगा तो कहूगा। तुम्हारी कमजोरी तो दूर हो जायगी।

आज श्री नायडू भोजन करने आये थे। सरदार वल्लभभाई यहा १९ को आ रहे हैं। मैं ता० २५ तक बंबई आने का विचार कर रहा हूं। चिरंजीव उमा प्रसन्न होगी।

इस तरह की भविष्यवाणी[1] या ज्योतिष के परिणामो से घबराना नही चाहिए। ईश्वर पर भरोसा व श्रद्धा रखना आवश्यक है। मैं तो तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हुआ तभी समझूगा जब मुझे दीखने लगेगा कि तुम्हारी श्रद्धा व विश्वास बढ़ रहा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

---

[1] एक ज्योतिषी ने गांधीजी की मृत्यु की भविष्यवाणी की थी।

: १५० :

वर्धा, १८-९-३६

प्रिय जानकी,

मेरा पत्र व दोनो तार मिले होंगे। पू० बापू के बारे मे (मृत्यु की) भविष्यवाणी, जैसी आशा थी, पूरी तरह से झूठ साबित हुई। कल ता० १७ को शाम को सिविल सर्जन को ले जाकर उनकी भली प्रकार से जाच करवा ली थी। ब्लड प्रेशर आदि सब ठीक थे। बापू खूब विनोद करते थे। आज सुबह स्नान करके मैं तो चि० अनसूया के साथ दही, बाजरे की रोटी व फल खाकर गया था। वहा से २ बजे बाद रवाना होकर आया हू। पू० बापू को मैंने अकेले में ९॥। बजे करीब यह बात कही तो उन्होंने तो खूब विनोद किया। औरो से ज्यादा चर्चा नही की। सरदार कल आ जायगे। घनश्यामदासजी आज आ रहे हैं। दो-तीन दिन थोडा-बहुत विनोद रहेगा। अब आगे से भविष्यवाणियो पर ज्यादा विश्वास नही रखना। तुम क्यो आना चाहती थी और आकर क्या करनेवाली थी? अब तो तुम्हे इस प्रकार की मिथ्या चिंता छोडकर व श्रद्धा रखकर अपना स्वास्थ्य खूब उत्तम बना लेना चाहिए। चि० राधाकिसन का पत्र मिला। उसने तुम्हे उचित ही सलाह दी।

जमनालाल का वदेमातरम्

: १५१

बनारस, २३-१०-३६

प्रिय जानकी,

आज सुबह मैं यहा पहुचा तो वर्धा का तार मिला कि चि० विनय कल ता० २२ को सुबह चल बसा। थोडा दुःख तो हुआ, परन्तु विचार करके देखने से व कमला की वर्तमान शारीरिक स्थिति देखते हुए ईश्वर ने जो कुछ किया, वह ठीक ही किया। विनय तो कई झझटो से मुक्त हुआ। वह जिदा रहता तो भी शारीरिक सुख का लाभ तो उठा नही सकता था। मैंने चि० कमला को तार व पत्र दिया ही है। तुम चि० रामेश्वर की मा को समझाना। रामेश्वर को भी लिख देना।

तुम अपना स्वास्थ्य बिना कारण मत बिगाडना। तुम्हारा प्रयोग

बराबर चलते रहने देना। मैं वर्धा ता० ४ तक पहुंच सकूंगा। बाद में कमला की जैसी इच्छा होगी, वैसा किया जायगा। कुछ समय तक तो उसे मेरे साथ रखने की इच्छा है, जिससे वह चिंता करना छोड़ दे। शायद कल पू० बापूजी भी यहां आयेंगे। लक्ष्मणप्रसादजी, सावित्री भी शायद आ जाय। उन्होंने इच्छा प्रकट की है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५२ :

बनारस, २६-१०-३६

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २३-१० का पत्र कल २५ को मिला। विनय के बारे में बापू ने सब स्थिति कही। दवा, इंजेक्शन, कमला की बहादुरी, दान वगैरा का हाल मालूम हुआ। चि० विनय तो मुक्त हुआ, इसमें जरा भी संदेह नहीं। कमला भी विचार कर देखेगी तो कई चिंताओं से मुक्त हुई है। ईश्वर की दया ही समझनी चाहिए। तुम्हारा वजन बढ़ रहा है, जानकर सुख मिला। चि० सावित्री नहीं आ सकी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५३ :

वर्धा, ६-११-३६

प्रिय जानकी,

मैं कल यहां सकुशल पहुंच गया। रास्ते में गाड़ी में भुसावल से भीड़ हो गई थी, दो-तीन घंटे ताश खेलकर समय निकाला गया। यहां आ जाना बहुत अच्छा हुआ। कल बापू से मिल आया। यहां विद्यालय का उत्सव है, सभाएं हैं।

पू० मां की तबियत अब ठीक है। तुमसे आते समय विशेष बात नहीं हो सकी, थोड़ा विचार रहा। कोई बात नहीं। तुम्हारा स्वास्थ्य उत्तम हो जायगा तो मन पर भी उसका ठीक परिणाम होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५४ :

वर्धा १६-११-३६

प्रिय जानकी,

चि० रामेश्वर व श्री मोतीलालजी एलिचपुर से आज प्रात यहां आये है। अभी चार बजे चि० शान्ता की सगाई चि० रामेश्वर के साथ आज यहा पू० माजी व अन्य गु जनों की उपस्थिति मे करने का निश्चित किया है।

श्री एड्रूज अभी यही हैं। आज श्री राजेन्द्रबाबू तो आ गये है; जवाहर-लालजी शाम की गाड़ी से आयगे। मै कल मेल या एक्सप्रेस से बबई आ रहा हूं। किसी भी हालत में परसो तो बबई पहुचना ही है।

जमनालाल का वदेमातरम्

पुनश्च—चि० शांति गगाबिसन की लड़की की सगाई चि० रामेश्वर एलिचपुरवाले से आज कर दी गई है। एक चिंता कम हुई। तुम्हारी झोंपड़ी बन रही होगी।

: १५५ :

जुहू,
२६-१-३७

पूज्यश्री,

आपके गये बाद से मन अशान्त हो रहा है। पीछे टैक्सी में गोविंदलाल-जी के यहां भी गये। सोचा था कि आते समय आपकी मोटर मिल जायगी। गोविन्दलालजी से कहा था कि हम लोग यहा आ गये हैं यह आपको कह देना। वह कहते थे कि कह दिया था। मोटर की आस लगा रक्खी थी, सो गुस्सा आ गया था। अनमेल के सामने मन को स्थिर रखना मेरे लिए मुश्किल-सा हो गया था। वाक्-चातुर्य की तो पूरी कमी है ही। कर्तव्यच्युत बन रही हू। सब दिये के समान दीखता भी है, सब बात की ताकत भी है, पर पता नही कौन से पाप आड़े आ रहे है। तुकारामजी का दृश्य सब आंखों के सामने रहता है। पर भाग्य में पश्चात्ताप ही बदा दीखता है। आपको कुछ विचार आये हो तो सुधार लें। सब साधन होते हुए, उनका उपयोग ऐसा नहीं आवे, उसे कर्महीन ही समझना चाहिए। साधन हो, वहा इच्छा

नहीं, इच्छा हो यहां साधन नहीं। अब किसको दोष दें, भगवान् ही जाने।

आपकी
जानकी

१५६

कल्याण (चालू रेल में)
२५-४-३७

प्रिय जानकी,

तुम्हें दुखी देखकर दुखी होना स्वाभाविक है। मैंने तुमसे कई बार कहा है कि तुम हंसते-खेलते आनंद से रहोगी तो मुझे भी बहुत मदद मिलेगी। कम-से-कम मेरे पीछे से तो तुम आनंद में रहो, इतनी खातरी भी मुझे रहे तो फिर मेरे प्रवास आदि में मुझे चिंता करने का कारण न रहे। तुम्हें मैंने जाने या अनजाने में काफी दु:ख पहुंचाया है। परंतु उसका उपाय क्या! तुम्हारा अगर विश्वास हो तो मैं यह कहता हूं कि मेरा तुमपर प्रेम, श्रद्धा और भक्ति तीनों का मिश्रण है। मैं अपने जीवन में आवश्यक फेरफार करने का विचार कर रहा हूं। ईश्वर की मदद व तुम्हारा पूरा सहयोग रहा तो भावी जीवन सुख से बीत सकेगा, अन्यथा जैसा भी समय आवे, उसीमें सुख व शांति मानकर चलना होगा। मैं यह पत्र तो इसलिए लिख रहा हूं कि तुम्हें थोड़ी शांति मिले। नर्मदा की सगाई, संभव हुआ तो, पूना की होने का प्रयत्न चल रहा है। लड़के को व नर्मदा को विवाह में आने का कहा है। यह पत्र लिखने के बाद मुझे थोड़ी शांति मिल जावेगी, ऐसी आशा करता हूं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५७ :

वर्धा, ९-५-३७

प्रिय जानकी,

चि० रामेश्वर का व तुम्हारा पत्र मिल गया। मैं कलकत्ता केवल विवाह का तार आने के कारण नहीं जा रहा हूं। मुझे १६ ता० को झेल के लिए यहां आना जरूरी है ही, तब फिर जिन कामों का मेरे मन पर बोझ

रहना है, वह साफ होना जरूरी है। खासकर कलकत्ते में इतने काम कर लेने हैं:

१. गोला की सक्कर मिल की व्यवस्था गत दो वर्षों से ठीक नहीं रहती, इसका मन पर बोझ बना रहता है, क्योंकि मैं उस मिल के बोर्ड का चेयरमैन हूं। कलकत्ते में श्री केशवदेवजी, रामेश्वर, श्रीगोपाल व घनश्यामदासजी बिड़ला से बातचीत करके व्यवस्था-संबंधी फैसला कर लेना है, अन्यथा मुझे गोला १०-१५ रोज के लिए जाना पड़ेगा।

२. श्री लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री को भी विवाह-संबंधी छोटी-मोटी बातों का खुलासा हो जाने से संतोष रहेगा। अपनेको उनकी स्थिति का पूरा परिचय रहने से अपनी हालत भी ठीक रहेगी। एकदम वक्त पर नई जानी-बूझी बातों में फर्क करने में तकलीफ रहती है।

३. श्री सीतारामजी को भी इन दिनों काफी चिंता व असंतोष रहता है; उनको थोड़ी शांति मिल जायगी।

४. अगर संभव हुआ तो थोड़ा हिन्दी-प्रचार के लिए चंदा करने की व्यवस्था कर आऊंगा।

इनसब बातों में से थोड़ी भी बातों का निकाल हो जायगा तो मुझे उतना ही संतोष मिलेगा। थोड़ा वातावरण बदल जाने से भी मुझे शांति मिलेगी।

चि० नर्मदा को थोड़ा ज्वर आता है। इसके ज्वर की बात उसकी मा से कहने की जरूरत नहीं। बिना कारण चिंता करेगी। ज्वर मामूली है। चि० उषा (दादा धर्माधिकारी की लड़की) चि० मदालसा के पास कुछ दिन रहना चाहती है। तुम्हारी परवानगी होगी तो वह नर्मदा के साथ वहां आ जायगी। अभी मुझसे पूछने आई थी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १५८ :

वर्धा, १५-६-३७

प्रिय जानकी,

केस का काम ठीक चला है। तुम होती तो खूब मजा आता। चि० उमा को तो खूब ही आता। अपनी ओर के वकील कल बंबईवाले

बुआजी व केशर थे। केशर आज भी है और कल भी रहेंगे। सावित्री से खूब बातें हुईं। [illegible] वह कल बीमार पड़ गया। कल व आज बड़ी परेशानी रही।

चि० कमल का दूसरा पत्र हवाई डाक द्वारा आई आ गया है। वह बहुत करके अभी तीन दिन में बंबई से रवाना होकर वर्धा आना चाहता है। कमल का [illegible] यहां मेरे साथ में भी [illegible] करना और वहां पहुंचाने पर।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१५९

जानकी-कुटीर, जुहू,
१३-१०-३७

प्रिय जानकी,

मेरा पत्र मिल गया होगा। तुम्हारा पत्र कल शाम को मिला। मैं यहाँ आने के लिए कल रात ही रवाना हो चुका था। लेकिन वर्धा से टेली-फोन आ जाने से मैं नहीं आया। अब ता० १७ की कान्फ्रेंस खतम करके मेरा वहां आने का इरादा है।

श्रीमन की माताजी आ गई होंगी। सावित्री का इलाज ठीक से चल रहा है। श्री सीतारामजी का इलाज कल से शुरू हो जायगा। मेरा मन तो वर्धा में लगा हुआ है। परन्तु बाकेत व सावित्री तथा सीतारामजी के कारण यहां रहना पड़ा है। अब यहां की व्यवस्था इस प्रकार कर दी है कि अपने दोनों की गैरहाजिरी में भी यहां का काम ठीक चलता रहेगा। श्रीमन की माताजी को मेरा प्रणाम कहना। पू० बापूजी आ गये हैं। वे तो टाइफाइड के सबसे बड़े अनुभवी डाक्टर हैं। श्रीमन के नर्सिंग का इंतजाम खूब अच्छा रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१६०

(चालू रेल में) बिलासपुर,
२५-१०-३७

प्रिय जानकी,

बापूजी और उनकी पार्टी कलकत्ता जा रही है। श्रीमन तो अब ठीक

है। तुम देहरादून में चि० जगदीश (सावित्री के भाई) से जरूर मिलना। उसका पता सावित्री से पूछकर लिख लेना व उसे भी सावित्री से पत्र लिखवा देना।

मलजीभाई को कह देना कि नई झोंपड़ी सावित्री की इच्छा मुजिब बनावें। अगर तुम देहरादून से वर्धा आनेवाली हो तो मुझे उस प्रकार लिख देना तब मैं वर्धा आने की जल्दी नहीं करूंगा। सीतारामजी का क्या हाल है? मैं कलकत्ता जाकर वजन घटाऊंगा और वह बंबई में घटा रहे हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१६१

वर्धा, १७-११-३७

प्रिय जानकी,

हालांकि गाड़ी में थोड़ी भीड़ थी, तो भी नींद ठीक मिल गई और यहां कुशलपूर्वक पहुंच गया। शाम को सेगांव जाऊंगा। बापूजी के आने के बाद अगर हो सका तो कुछ रोज सेगांव रहने का विचार है।

आशा है कि मुझे यहां ज्यादा शांति मिलेगी, क्योंकि काम में लगा रहना पड़ेगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१६२

वर्धा, २०-११-३७

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। मैं यहां आया उसी रोज से रात को सेगांव सोता हूं। बापू का स्वास्थ्य बहुत कमजोर हो गया है। बहुत संभाल रखने की जरूरत है। आज तो वहां से सुबह पैदल ही आया। दो रोज से यहां गांधी-सेवा-संघ की महत्वपूर्ण सभा हो रही थी। परमात्मा ने किया तो मन को शांति मिल जायगी। तुम अपना स्वास्थ्य व मन उत्साहित रखना। प्रफुल्ल वातावरण बनाये रखने का ख्याल रखोगी तो ज्यादा लाभ पहुंचेगा। श्रीमन का पत्र मिला। मदालसा का भी। मैं तो अब यहां की चिंता बहुत कम करता हूं। तुम लोग अपने आने की व्यवस्था बराबर करवा लेना। पीछे से सीतारामजी की व्यवस्था सुन्दर रहनी चाहिए।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६३ :

वर्धा,
२२-११-३७

प्रिय जानकी,

तुम्हारे दो पत्र मिले। थोड़ा आश्चर्य व दु.ख भी हुआ। तुम्हें वहां शांति नहीं हो तो तुम्हें यहा चले आना चाहिए था। मैं तो बंबई से यहा आया, उसी रोज से सेगाव में सोने की व्यवस्था रखी है। सिर्फ कल नागपुर में काम था। रात के ग्यारह बज गये थे, इसलिए गिरधारी के पास सोना पड़ा। दामोदर साथ था। आज सुबह तो सेगाव हो आया। अब शाम को फिर वहा चला जाऊगा। पू० बापूजी का स्वास्थ्य बहुत नरम है। ईश्वर की जैसी मरजी होगी, वैसा होगा। ईश्वर हमें सद्बुद्धि व आत्म-विश्वास प्रदान करता रहे। मैं तुम्हे और क्या लिखू ?

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—पत्र न देने से शांति मिलती हो तो न देना ही ठीक है। फिर तुम्हारी मरजी !

१६४

(प्राइवेट) जुहू, २३-२-३८

पूज्यश्री

तार दिया तो था। पर तबियत ठीक है, यह लिखाना भूलने से आपको विचार हो जाना स्वाभाविक था। पीछे तो विनोबा को बड़ा सुन्दर पत्र भी लिखा है।

कमल की इच्छा है कि मैं जवाहर बनके पिताजी को सुख दू। उनसे मैं बहुत-कुछ सीखूगा। मोतीलालजी को तो हमने गलती से खो दिया, पर पिताजी के सादे जीवन के कारण हम उनका ज्यादा लाभ ले सकते हैं। भगवत् इच्छा ! ज्यादा सुख अजीर्ण करता होगा।

मेरे शरीर को पूरा आराम यहीं मिल सकता है और मिल भी रहा है। मन तो चूल्हे में जाय। उसपर किसका बस ? ५ बजे ऊपर जाकर सो जाती हू। अकेली को नींद्र पूरी आ जाती है। ६ बजे महादेवी आकर प्रार्थना कराती हैं। बस खाना और सोना। दिन में भी स्वप्नवत पड़ी रहती हूं। न

: २ :

वर्धा, २५-७-१३

सिद्धश्री जावरा शुभ स्थान श्री० सौ० प्रिया योग्य लिखी श्री वर्धा से यमुनालाल का सप्रेम बंचना।

'अत्र सर्वत्र शुभं तत्र भूयात्'। अपरंच कृपापत्र तुम्हारा आया। पढ़कर आनन्द हुआ। राजी-खुशी का पत्र दूकान तथा डालू के नाम से देता ही हूं।

कमला बहुत खुश है, लिखा सो ठीक। उसे गोद में ही ज्यादा मत रखना। नीचे फिरने दिया करना। उसके हाथ-पांवों में ताकत बराबर नहीं है। फिरने-खेलने से ताकत आयेगी। कमला की वर्षगांठ के दिन गोठ की और आठ-दस पंडितों को जिमाया, सो बहुत ठीक किया।

मुझे बम्बई से यहां आने के बाद ५-६ दिन सर्दी हो गई थी। पर अब ठीक है। दूध में छुहारा लेने से चली गई। तुम इधर की कोई फ़िकर मत रखना। कमला की याद बहुत आती है। उसकी याद आती है तब थोड़ी देर मन नहीं लगता है। तुमको राखी-पूनम के १-२ दिन पहले यहां पहुंच जाना चाहिए। राखी-पूनम तक एक महीने से अधिक हो भी जायगा, सो ध्यान रहे। अगर सबकी और तुम्हारी इच्छा रक्षा-बंधन वहीं करने की हो तो लिख देना।

डालू किसी तरह की गड़बड़ नहीं करता है, हमने कहा था उसी रहता है, सो ठीक है। उसको राजी रखना। खयाल रखना कि, तकलीफ़ न हो। चीज-वस्तु जो चाहिए, डालू से बम्बई
लेना। तुम्हारे खर्चने के लिए १५०) की गिन्नी
और चाहिए तो डालू को कह देना।
देना वग़ैरा हो, तो बहुत खुशी के साथ देना
करना। नंदा के साथ पुस्तकें गाने आदि
शरीर की पूरी संभाल रखता हूं। तुम
बहुत आनंद और खुशी में रहना।
तुम्हारे आने के बाद ही
चिट्ठी देना। मिती

तो पूरी नींद आती है और न उठने की ही इच्छा होती है। पर थोड़े रोज इस तरह पड़े रहना भी शरीर को शायद ताकत दे दे। दिन में महादेवी से रामायण पढ़वाती हूं। चार चौपाई पढ़ना मैंने भी शुरू किया है, ताकि आपके दिमाग व मेरे मन को शान्ति मिले।

आप मेरा फिकर छोड़िये। मनुष्य को दूर फेंकने से ही वह अपने-आपको सम्भाल सकता है। जब दूसरा पीछे है तो वह कभी खड़ा नहीं हो सकेगा। यह प्रत्यक्ष दीख ही रहा है। सब तरह के सहारे होते हुए भी शरीर में जीवन नहीं है।

कल के मेरे तार के कारण आपको फोन करना पड़ा और आपने कहा कि इस तरह घोड़े दौड़ाने से क्या लाभ है। सो सच है, अब सम्भालूंगी। आपने यह भी पूछा कि आने की इच्छा है क्या। सो अभी तो यहीं रहना अच्छा लगता है। विनोबा आयें तो उनकी तबियत का ख्याल रखकर मैं भी उनसे शान्ति लूंगी। मैं क्या करूं। आपको किसी तरह भी सुख नहीं पहुंचा सकती। पर आप तो सुख मान ही लेते हैं। और अपने तरीके से जी सकोगे। अब आप इस पत्र का जवाब देने का विचार ही न करें। जवाब मैं जानती ही हूं।

इच्छा होगी तो लिख दूंगी। वैसे पत्र लिखने का आलस्य है ही। भगवान शान्ति दें।

पत्र टोकनी में पड़े।

आपकी
पागल टोली में की एक

· १६५

बजाजवाड़ी, वर्धा,
३-३-३८

प्रिय जानकी,

कल फोन पर बात हुई थी। पू० विनोबा से आज भी पुछवाया, उनकी इच्छा जुहू आने की कम है, सो वे नहीं आवेंगे। तुम किसी तरह की चिंता नहीं करना। तुम वहां खूब शांति से मन लगाकर अपना स्वास्थ्य पूर्ण तौर से सुधार लेने का पूरा ख्याल रखोगी तो ठीक रहेगा।

स्वाभिमान का स्थान ही नही । बस खाओ और पडी रहो । लेकिन दया भी आती है कि घायल मगज से अब क्या चाहती हो ?

यह मन हल्का करने को लिखा है । इसे मजाक समझकर फाड देना । 'त्रिया चरित्र जाने न कोय', यह भी किसी ने हमारी जाति के लिए सच ही लिखा होगा ।

तुलसीदासजी ने घायल हृदय से ये भाव निकाले होगे :

मिलत एक दारुण दुख देही । बिछुरत एक प्राण हर लेही ।।

पर यह सब मगज का भी दोष है। जब विचार या जीवन सरल होगा, तभी भगवान दर्शन दे सकते है और देंगे। जीवन में कसौटी भी अच्छी चीज है। आपने जो लाटरी डाली थी, उसमें भी अपने भले की ही बात बनाई। दुनिया के पीछे कुछ आधार मदद देना है। यह सब लिखना पागलपन की निशानी है। मन काम पर लगा कि यह सब भूल जायगा ।

दामूभाई ने कहा, मालिक की आज्ञा हो तो सूली चढ जाऊ । उगपर कविता लिखी है, वह साथ में भेज रही हू । वह तो हँसेगा ही, पर अपनी-अपनी दृष्टि से अर्थ सब तरह का निकलता है । सो आपके जचे तो दिखाना, नही तो वापस भेज देना । मै फाड भी सकती हू ।

अब मेरा भी मन हलका ही रहेगा । जवाब का विचार ही न करना । मै भी खुश रहूंगी ।

आपकी,
बावकी

: १६८ :

पोद्दार हाउस, रांची,
१०-३-३८

प्रिय जानकी,

मै आज यहा प्रसन्नतापूर्वक पहुच गया। टाटानगर तक थी सुभाषचन्द्र साथ थे । यहा मुझे शारीरिक व मानसिक आराम अच्छा मिलता दिखाई दे रहा है । चि० सावित्री का स्वास्थ्य उत्तम है ।

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता होगा । महात्मा जी डॉ० दास को

मैं ता० १० के आस-पास सावित्री के पास कुछ रोज के लिए जाने का विचार कर रहा हूं। चि० उमा परीक्षा में लग रही है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६६ :

वर्धा,
७-३-३८ (सुबह पांच बजे)

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र परसों मिल गया था। पढ़कर एक प्रकार से संतोष ही मिला। श्री सुभाषबाबू व मौलाना आज जानेवाले हैं। अगर संभव हुआ तो मैं भी कल ही रांची चला जाऊंगा, वरना परसों तो जाना है ही। रांची से तार व पत्र आये हैं। उसमें तो तुमको भी आने के लिए लिखा है। मेरा वर्धा ता० २ अप्रैल के लगभग लौटना होगा। चि० उमा की परीक्षा अभी तक तो ठीक हुई है। उसे संतोष है। आगे के लिए भी मेहनत तो खूब करती है।

चि० मदालसा का मन दूध से ऊब गया हो तो श्री गौरीशंकर भाई को कहकर फेरफार करवा देना। महादेवी ने विनोबा को लिखा है कि मदालसा को कुछ भी फायदा नहीं है, वह प्रयोग से थक गई है। मैंने तो विनोबा से कहा था कि धीरे-धीरे उसका वजन बढने लगा है, शायद फायदा हो जाय। विनोबा ने तुम्हारा कार्ड मेरे पास पढने भेजा है। वह आज पवनार अपने मकान में रहने जानेवाले हैं।

मुझे पत्र रांची के पते से देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६७ :

जुहू, ९-३-३८

पूज्यश्री,

पत्र ता० ७ का मिला। आपके पत्र विचारों में कुछ मददरूप होते तो है। पर पत्र का उत्तर देना यही मेरी कमजोरी है। विचार तो आया कि पत्र किसको लिखती हूं। दुनिया स्वार्थ से पागल है। अपने में इतना कोई होकर भी स्वाभिमान क्यों नहीं है, पर अपने दोष भी तो इतने हैं कि

—

स्वाभिमान का स्थान ही नहीं । बस खाओ और पड़ी रहो। लेकिन दया भी आती है कि घायल मगज से अब क्या चाहती हो ?

यह मन हल्का करने को लिखा है । इसे मजाक समझकर फाड़ देना । 'त्रिया चरित्र जाने न कोय', वह भी किसी ने हमारी जाति के लिए सच ही लिखा होगा ।

तुलसीदासजी ने घायल हृदय से ये भाव निकाले होंगे :

मिलत एक दारुण दुख देही । बिछुरत एक प्राण हर लेही ॥

पर यह सब मगज का भी दोष है। जब विचार या जीवन सरल होगा, तभी भगवान दर्शन दे सकते हैं और देंगे। जीवन में कसौटी भी अच्छी चीज है। आपने जो लाटरी डाली थी, उसमें भी अपने भले की ही बात बनाई। दुनिया के पीछे कुछ आधार मदद देता है। यह सब लिखना पागलपन की निशानी है। मन काम पर लगा कि यह सब भूल जायगा ।

दामूभाई ने कहा, मालिक की आज्ञा हो तो सूली चढ़ जाऊं। उसपर कविता लिखी है, वह साथ में भेज रही हू । वह तो हँसेगा ही, पर अपनी-अपनी दृष्टि से अर्थ सब तरह का निकलता है। सो आपके जचे तो दिखाना, नहीं तो वापस भेज देना । मैं फाड भी सकती हू ।

अब मेरा भी मन हलका ही रहेगा । जवाब का विचार ही न करना । मैं भी खुश रहूंगी ।

आपकी,
बावली

: १६८ :

पोद्दार हाउस, रांची,
१०-३-३८

प्रिय जानकी,

मैं आज यहां प्रसन्नतापूर्वक पहुंच गया। टाटानगर तक श्री सुभाषबाबू साथ थे। यहां मुझे शारीरिक व मानसिक आराम अच्छा मिलता दिखाई दे रहा है। चि० सावित्री का स्वास्थ्य उत्तम है।

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। मदालसा को डॉ० दास को

दिखाना ठीक समझो तो दिखाना। चि० कमल विलायत से शायद इस गर्मी में अब नहीं आयगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १६९ :

कलकत्ता, २-४-३८

प्रिय जानकी,

मेरा वर्धा ता० ५ को पहुंचना होता दिखता है। तुम्हारे पास जल्दी आने की इच्छा जरूर है और अबकी बार यह भी मन में विश्वास होता है कि परमात्मा दया करेगा तो तुम्हे मानसिक शांति जिस प्रकार मिल सके, उसका पूरी तौर से ईमानदारी के साथ प्रयत्न करना है। चि० कमल भी शायद आ जायगा। मेरे कारण तुम्हे बहुत कष्ट दुःख पहुंच रहा है, इसका ख्याल आने से मन में काफी उथल-पुथल होती रहती है। परमात्मा अबकी बार जरूर कोई मार्ग सुझायेगा। तुम हिम्मत व उदारता से काम लेने का ख्याल रखो। ईश्वर से प्रार्थना करती रहो। अधिक मिलने पर। तुम्हे जिस प्रकार पूरा संतोष मिलना संभव हो, वह सब बातें तुम नोट कर रखोगी तो ज्यादा ठीक रहेगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १७० :

जुहू, १९-४-३८

पूज्यश्री,

अभी कार्ड मिला। आपको जाते समय धन्यवाद देना भूल गई थी। आपका फोन आया तब तक तो पड़ी थी। पर उसी क्षण भोगीलालभाई से पूछा कि बिडला-हाउस से निकल गये होंगे क्या? फोन पर बुलाने की हिम्मत नहीं होती थी। आपका ही फोन आगया। आपने कहा, वजन बढ़ा ले तो सब ठीक हो जाय। सो कुछ तो जरूर बढ़ेगा। मगज कुछ तो हल्का हुआ है।

मन नहीं लगता। सब सूना-सूना लगता है। रहो तो बेचैन, जाओ तो झुरना। पर शुद्ध झुरना भी तो तप का फल देता है। आशा थी कि आप धुलिया नहीं जाओगे तो २०-२१ ता० को ही यहां आओगे। लेकिन अब

ता० २४-२५ तक आने का पटवर पक्का तो गया। पर आपको हमसे क्या सुख मिला कि आपको जल्दी बुलाने की हमारी हिम्मत हो। आपने तो सबको सुखी देखने के लिए तन, मन और धन से सहायता की और सब कर्मानुसार सुखी हो गये। पर आपका साथी तो भगवान ही रहा।

सच्चा व शुद्ध प्यार भी जीवन-जड़ी है। पैर वह पुण्याई से ही प्राप्त होता है। आपके लिए तो जहा सुख-शान्ति हो, वही रहना अच्छा है।

बापूजी का समय लेने का भी अब समय आ गया है। मैं रहू या न रहू, समान है। मुझे बोलना ठीक नहीं आता। इसलिए लिखना जरूरी-सा हो जाता है। क्या करू ? माजी को मेरा प्रणाम।

धन्यवाद तो आप भी मन-ही-मन देते हो, वरना मैं जी कैसे सकती ?

जानकी का प्रणाम

पुनश्च—परसो पाच मिनट की मौज हुई। नींद में सोई थी कि उमा ने राम से कहा कि वर्धा का फोन है, मा को उठा। मेरे तो हाथ-पाव ढीले हो गये—हे राम-हे राम करते फोन के पास गई। पर झूठ निकला। बच्चे क्या जाने ? पानी पीने को दे दें या सिर पर गीला कपड़ा रख दे ? मैं खुद ही नल के नीचे सिर भिगोकर पानी मुह में लेकर बड़ी कुर्सी पर पड़ी रही।

देखिये, जीवन को कैसे संभालती हू। किसी-न-किसी दिन सबके काम आवेगा ही। मेरे मन की आप जब समझ लेगे तब वजन बढते भी क्या देरी लगेगी। 'धीरा धीरा ठाकरा, धीरा सबकुछ होय।'

भूल-चूक माफ। प्रणाम !

: १७१ :

दिल्ली, २७-९-३८

प्रिय जानकी,

शिमला का प्रवास पूरा करके ता० २० को मैं यहा आया। शिमला में थोडी सर्दी तो थी। वहा हिन्दी साहित्य सम्मेलन के काम की वजह से काफी काम रहा। यहा भी आल इंडिया वर्किंग कमेटी का काम काफी रहा। अभी भी रोज वर्किंग कमेटी की महत्त्वपूर्ण सभा चल रही है। यूरोप में युद्ध के बादल घिर रहे है। परिस्थिति क्या होगी, कोई कल्पना नहीं की जा सकती। लडाई

हैं, इसलिए तुमसे जरा-सी भी भूल हो तो मुझसे बरदाश्त नहीं होती। इसके विपरीत मैं तो भयंकर भूल कर बैठता हूं, फिर भी तुम्हें सताने को तैयार रहता हूं। मालूम नहीं, क्यों ऐसा होता है ? मेरे मन में भीतर-ही-भीतर खूब संघर्ष चलता रहता है। उसका परिणाम अब इस निराशा में प्रकट होने लगा दिखाई देता है।

यह बात तो सत्य है कि मेरे सोचने-विचारने का तरीका तुम्हारे तरीके से बिल्कुल उल्टा है। कितना अच्छा होता अगर मेरा तरीका मैं तुम्हें समझा पाता या तुम्हारा तरीका मैं ग्रहण कर पाता। परन्तु अब तो यह असंभव है। कमल को यहां रख लेने में मेरे मन में तुम्हारा भी विचार रहा करता था कि यह तो भी तुम्हें संतोष पहुंचा सकेगा और मैं स्वतंत्रतापूर्वक अपनी उन्नति का मार्ग साधने में लग जाऊंगा। तुम मेरे अपराधों को उदारतापूर्वक माफ कर सको तो कर दो व परमात्मा से प्रार्थना किया करो कि मुझे सद्बुद्धि प्रदान करे। मुझमें जो कमजोरियां आ गई हैं या आया चाहती हैं, उन्हें न आने देवें, और जो हैं वे जल्दी निकल जायं।

तुम भी अपनी कमजोरियां तुम्हारे स्वास्थ्य को बर्दाश्त हो, उस मुताबिक धीरे-धीरे, निकालने का प्रयत्न रखोगी तो उसका लाभ तुम्हें अवश्य मिलेगा। साथ में मुझे व सब घर के लोगों को सुख व शांति मिलेगी। तुम्हारे प्रति सबका प्रेम व भक्ति बढ़ेगी। ज्यादा क्या लिखूं ? तुमसे कई बार बहुत स्पष्ट बातें कीं व करने का प्रयत्न किया, परन्तु उससे तुम्हें भी लाभ नहीं पहुंचा व मुझे भी शांति नहीं मिली। इसलिए चर्चा बंद करनी पड़ी, क्योंकि झूठ बोलने का मौका आवे या विचार भी आवे तो उससे तो कोई लाभ पहुंच ही नहीं सकता।

अब मेरी तुमसे यही प्रार्थना है, जो बहुत वर्षों से रही है, और जो तुम भली प्रकार जानती हो—कि तुम मेरा पाव न धोया करो। मुझे उस समय प्राय हमेशा ही दुःख पहुंचता है। कारण साफ है। मैं अपने-आपको उसके योग्य नहीं समझता। आशा है, इस प्रार्थना का तुम उल्टा अर्थ नहीं करोगी। मैंने जिस भावना से लिखा है, वही अर्थ लोगी। मुझे अब संसार के मामूली साधारण मनुष्यों की पंगत में आने दो। शायद उससे बाद मुझमें उत्साह पैदा हो और जीवन में रस आवे। आज जो रस दिखता

नहीं होता है, सो तुम्हारी भूल है । तुम खुद भूले खुशी के झूठे समाचार लिखती होगी तभी तुमको लगता है कि दूसरा भी झूठ ही लिखता है।

मुझे पता चला है कि तुमको सर्दी लगी हुई है । ३-४ दिन दस्त भी लगे और कमला को भी थोड़ी सर्दी है। तुमको वाजिब हकीकत ही लिखनी चाहिए। आगे ध्यान रखना।

तुमको भेजने के लिए मैंने सप्तमी या दशमी का लिखा है। अगर सबकी मंशा यह हो कि राखी पर तुम जावरे ही रहो तो रह जाना और राखी के दूसरे दिन रवाना हो जाना। पर अब जल्दी आ जाना चाहिए। कमला के बिना यहां सूना-सा लगता है। तुम्हारी ओर से समाचार आने पर दुल्ला जाट को तुम्हें लिवाने के लिए यहां से भेज दूंगा।

यहां की फिकर मत करना। आते समय रास्ते में खूब होशियारी रखना। तीन टिकिट सेकन्ड के ले लेना तथा रतलाम में मंदिर में रसोई जीमकर दूसरी गाड़ी पकड़ लेना। डालू की चिट्ठी बहुत खुशी की आती है। तुम माजी तथा घरवालों के प्रेम में भूलकर कमला की संभाल कम रखती हो, यह लिखा है, सो ख्याल रखना। हमारे अक्षर बराबर पढ़े गये, लिखा सो ठीक।

और वहां तुम्हारे घर-कुटुंब की जो स्त्रियां व लड़कियां हों, उनको सदुपदेश देते रहना। उनका कर्तव्य उनको अच्छी तरह समझाना। फालतू वक्त मत खोना। तुमने वहां रहकर किस-किसका मार्ग-दर्शन किया तथा उपदेश दिया, इसकी विगत तुमसे प्रत्यक्ष में विस्तार से सुनेंगे तब खुशी होगी। खर्च का हिसाब तुम स्वयं रखती होगी।

चिरंजीव मोहन की मां को भी अच्छी पुस्तकें देना व उनका कर्तव्य उन्हें समझाना। उनकी उमर छोटी है, आज का वक्त बहुत खोटा है। इसका तुमको ख्याल है ही। चिट्ठी जल्दी देना।

संवत् १९७०, मिती श्रावण सुदी ३ सोमवार को (आज हमारा व्रत है) लिखा जमनालाल का प्रेमपूर्वक आनंद-मंगल और आशीर्वाद व प्यार तुम्हारे लिए और कमला के लिए।

तुम्हारा मंगल व उन्नति चाहनेवाला हितेच्छु

जमनालाल बजाज

आपसे किसीका बुरा तो चाहा ही नहीं गया। पर एक बात जरूर है। थोथी चर्चा ही वातावरण में ज्यादा रही। मैं सबको सुखी कर दूं, यही भावना दुखदायी बन गई है।

मैं आपको नर मानूं कि नारायण! यही मेरी समझ में नहीं आ रहा है। मेरी कमजोरियां आपके तेज में बाधक हो रही है। यह प्रत्यक्ष देख रही हूं। इसमें मेरा कोई पाप आडे आ रहा है क्या?

'हिम्मते-मर्दां तो मददेखुदा' की तरह जो एकदम हिम्मत कर लूं तो सारा वातावरण तो तेजमय बना हुआ है ही, सोने में सुगंध हो जाय। पर मेरा मन तो इतना 'नरवस' हो गया है कि आपको आकर वापस जाते देखते ही सारे शरीर में सनसनी होने लगती है। कहीं काबू के बाहर न हो जाऊं! उपाय मेरे पास नहीं रहा है। आत्मा एक है, मिट्टी में क्या मोह है। और आत्मा ही परमात्मा है, यह सच है। पर क्या करूं?

आपको तो मैं क्षमा क्या दूं? मैं खुद कई बार आपसे मांगना चाहती हूं। पत्र के पढने पर तो कुछ रहता ही नहीं। केवल आपकी इच्छा पूरी करूं, यही इच्छा है। और भगवान जरूर वह दिन दिखायगा कि आपको पूर्ण-शांति मेरे ही जरिये मिलेगी। मैं प्रयत्न करूंगी। आप मुझपर खुश रहा करो। आपके दिल में तो मैं ही रहती हूं और आशा है कि आगे भी रहूंगी।

अब मन में है वह बात भी लिख दूं। वैसे तो आप जानते ही है, पर मुंह से कह दोगे कि अमुक बात तू ठीक कहती थी, लेकिन मैंने उसपर ध्यान नहीं दिया, उस दिन मुझे आनंद मिलेगा। प्रमाण में हम सब घर के एक से ही हैं, पर आपको तो मैं ही पार उतारूंगी ना। फिर आशा, प्रेम व क्रोध जाय कहां? पर मैंने अपना विश्वास ही खो दिया, उसको कैसे प्राप्त करूं? 'मन न मिले जासे मिलणो किस्यो, पर लगी है प्रीत वासे परदो किस्यो।' सो आपके पत्र की बात 'टेम्परेरी' मानती हूं, नहीं तो खतरनाक है।

दो बाते मुझे लिखनी है —

१. यह सही है कि मुझे क्या करना चाहिए यह मैं जानती हूं। पर इसका यह तो मतलब नहीं होना चाहिए कि मैं मन की बात भी किसीसे कह-सुन न सकूं।

२. आप जो कुछ कहते है, उसका आपकी इच्छानुसार पालन नहीं

अभी थोड़े दिन आराम ले लोगी तो जयपुर के काम में ज्यादा उपयोगी हो सकोगी। मैंने पू० बापूजी से भी जाते समय यह कह दिया था। उनकी भी यही राय रही कि अभी आराम लेकर बाद में काम करना ठीक रहेगा। बापूजी ता० २ को वहां आने ही वाले हैं।

जयपुर की खबरें तो तुम्हें मिल ही जाती होंगी। खास कोई खबर होगी तो मैं लिखवा दूंगा। अखबारों में तो अब शायद कई झूठी खबरें भी आवेंगी। उनको लेकर चिंता करना ठीक नहीं।

चि० रामकृष्ण पहुंच गया है। सभी जगह ठीक उत्साही वातावरण है। तुम खूब प्रसन्न व उत्साहपूर्वक रहोगी तो स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। काम भी खूब कर सकोगी। वर्धा का मुहूर्त खूब ही अच्छा हुआ है। बच्चों को प्यार आशीर्वाद।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१७५ :

मोरासागर (जयपुर राज्य की जेल),

२१-२-३९

प्रिय जानकी,

यहां से ता० १५-२ को मैंने तुम्हारे नाम पत्र व दुकान के नाम तार भेजा था।

यह स्थान जयपुर से करीब ८० मील की दूरी पर है। इसका लालसोट होकर यहां आना पड़ता है। स्थान रमणीय है। जलवायु भी उत्तम है। यहां बड़ा तालाब भी है। आजू-बाजू पहाड़ होने से बहुत ही मनोहर मालूम देता है।

सुबह शाम पांच मील करीब घूम लेता हूं। राम का नाम जप करता हूं। सर्वोदय के तीन अंक तो पूरे पढ़ डाले। दो और बाकी हैं। तीन-चार रोज में पूरे हो जायेंगे। पुलिस के अधिकारी व सिपाही वगैरा मुझे आराम पहुंचाने का ख्याल रखते हैं। अच्छे स्वभाव के हैं।

यहां आना-जाना न तो तार-घर है, न पोस्ट ऑफिस, न रेलवे और न मोटर की सवारी। इससे एकांत का पूरा आनंद मिलता है। मिलने-जुलने वालों के लिए भी यह स्थान काफी दूर होने के कारण यह आराम भी नहीं

गयी है। पूरा वजन करने पर आठ तोले के बाद कल तुवर (अरहर) की दाल आई है। मेरी इच्छा स्वाभाविक तौर से ही पूरी हो जाती है, दोनों भोजन में सिर्फ दाल, रोटी व एक शाक होता है।

जयपुर से चार साथ पुलिस अधिकारियों ने भेजे थे। आने के लिए मैंने पत्र भेजने को तो मना करवा दिया है। अखबार एक बार जयपुर से ता० १५ को आये थे बाद में अभी तक नहीं आ सके। यहां बड़े बेचारे अधिकारी लोग, वे भी बहुत-सी झंझट में पड़ रहे हैं। यहां मोटर से भेजें तो करीब १५ गैलन तेल आने-जाने में लग जाए। बीच में एक सुन्दर मोटर मेरी नजर के सामने दिखाई देती रहती है।

मेरी समझ में मेरे प्रबंध के ऊपर जयपुर सरकार का पांच सौ से ज्यादा माहवार खर्च हो रहा है। अगर मुझे जेल में या अन्य मित्रों के पास रख देते तो बहुत ही थोड़े में काम हो जाता। इन लोगों का इतना फिजूल खर्च होते देख बुरा भी मालूम देता है। परन्तु उपाय क्या? जहां रुपयों की लूट हो वहां ठीक या बेठीक खर्च तो होगा ही।

यह तो यों ही थोड़ा-सा वर्णन लिख दिया। वैसे मैं शरीर से शांत, सुखी व उत्साही हूं। उत्साह बढ़ता हुआ दिखाई देता है। पू० बापूजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा।

पू० मां को प्रणाम कहना। इस पत्र के साथ सामान की फेहरिस्त भेजी है[1], यह जयपुर आई. जी. पी. की मारफत भिजवा देना।

---

[1] सामान की फेहरिस्त इस प्रकार है—

१. घास की छोटी व बड़ी, दो-दो मालें,
२. जपने की माला,
३. पूनी अच्छी,
४. लाल दन्तमंजन, तीन शीशी,
५. एक जोड़ी चप्पल खादी व एक जोड़ी पठानी ढंग की, पीछे से बांधने की। यहां बंगले पर होगी, नहीं तो मेरा नाप तो है ही, बनवाकर भिजवा देना।
६. मेरी जीवनी की एक-एक पुस्तक,

तुम 'सर्वोदय' मासिक अगर नही पढती हो, तो जरूर पढ़ना शुरू कर देना। तीसरे अंक में पृष्ठ ३८ पर विनोबा का प्रवचन—'निर्दोष दान और श्रेष्ठ कला का प्रतीक खादी'—जरूर पढना व औरो को पढाना। बापू के पत्र योग्य है। और अंको में भी काकासाहब वगैरा के माननीय लेख भी पढते रहते है।

जमनालाल का वदेमातरम्

पुनश्च—यहा से मोरध्वज राजा की नगरी 'मोरा' चार मील पर है। वहा गर्म पानी का सुन्दर कुड है। कई शिलालेख भी बतलाते है। गुफाए बहुत है। पर्वत का नाम रत्नगिरी है। इस पहाड पर ब्राह्मी, सफेद मुसली, पीपल, खाने के पान वगैरा बहुत-सी जडिया होती बतलाते है।

: १७६ :

मोरासागर,
२२-२-३९

प्रिय जानकी,

कल तुम्हे लिखा हुआ पत्र वापस शाम को आया, क्योकि रास्ते में दूसरा आदमी चिट्ठिया व सामान लेकर आ रहा था। इसलिए वह भी वापस आ गया। वह और साथ में यह दूसरा पत्र भी भेज रहा हू।

तुम्हारा बिना तारीख का पत्र मिला। मेरा ता० १५-२ का पत्र पीछे से मिल गया होगा। मुझे यहां पूरी शाति व सतोष है। बहुत दिनो की इच्छा पूरी हो रही है। मै तो इतनी भीड भी नहीं चाहता था। यहा पुलिसवालो की भीड़ तो है ही। रात को बदूको का पहरा भी लगता ही है।

तुम कमला के जापे का काम पूरा करके जब स्वास्थ्य ठीक हो, मन में पूरा उत्साह हो और मा की इच्छा ही तभी यहा आ जाना। जल्दी की जरूरत नहीं।

७. 'सावधान केस' व 'जयवन्त केस' के फैसले की नकलें (मैंने अभी तक नहीं पढ़ी है।) अपील का क्या हुआ?
८. आश्रम-भजनावली, दो प्रतियां।
९. उर्दू सीखने की किताबें (शायद अपने यहां होंगी)।

[illegible], उमा, मालिश वगैरह की बातों का ख्याल रहेगा तो सब लिखा जायेगा। इस अर्से में बाद [illegible] दिन की ही मालिश करता हूं। आगे [illegible] [illegible] भी बताता [illegible] कर दूंगा। [illegible] ज्यादा आता नहीं [illegible] [illegible] बाहर से आता हुआ मैं [illegible] नहीं करता। मुझे [illegible] होगी, पर फिर [illegible]। कमलनयन [illegible] [illegible] होना चाहिए।

विट्ठल व भाई के मरने के समाचार उसे कल ही कह दिये। उसे जाना हो तो जा सकता है, पर मना किया। वह कहता है, अच्छा हुआ भाई दुख से मुक्त हो गया। वह बिल्कुल नहीं जाना चाहता। मेरी सेवा खूब प्रेम व श्रद्धा से करने का ख्याल रखता है। आज उसके भाई का १३वां दिन है। मैंने कहा, यहां एक-दो ब्राह्मण जिमा दे। उसने कहा, कोई जरूरत नहीं है। पक्का सुधारक भी है।

जमनालाल का वंदेमातरम

१७७

मोरांसागर,
(जवाब दिया, २२-२-३९ को)

पूज्यश्री,

मैं आपके लिए सुरक्षित शान्ति—व मेरे लिए आनंद-रूपी निर्भयता चाहती थी। भगवान बड़ा ही अनुकूल है।

कमल की कड़ाई और सावित्री की स्पष्टता से मेरी दुविधा के मिटने में मदद मिल रही है। मैं बड़े आनद में हूं। यगसाहब से कहिये कि सीकर की रानीसाहब को लेकर आती हूं। रावला खुलवा दें।

आपकी उदारता की अधिकता से हम सब थक गये हैं, सो अब हमारे दुःख-सुख का ख्याल न करें। सब अपने स्वतन्त्र हैं।

आप जयपुर के सिवाय दूसरा ख्याल न करें।

बापूजी की चिट्ठिया आती रहती हैं। उन्हें जो जरूरत होती है, सो उसी समय मंगवाकर भिजवा देते हैं। वह मुझसे संकोच करेंगे, इसलिए मैंने २-३ चिट्ठी भेज दी थी कि बंगले पर ही आ जाओ, मैं आपके साथ रहूंगी। पर

उन्होंने कहा कि जयपुर व राजकोट का मामला उलझ गया तो आना नहीं होगा। बापूजी की सेवा तो भगवान देते जाते हैं। आपके सामने तो हमारा पता भी नहीं लगता था। कमल भी समझदारी से रहता है।

किसी भी तेल की मालिश रोज कराते होगे। सीधा सोना हो तो सिर के नीचे कपड़े की गोल घूमर करके विट्ठल रख देगा। सो उससे सीधे रहोगे और सिर में जमीन गड़ेगी नहीं।

तैरनेवाली पुरानी सूती गजी है, सो भेजने का विचार है। उसे रात-दिन पहने रहने से पेट को सहारा मिलेगा। आप कातते समय व वैसे भी बैठते समय में बापूजी जैसी पीठ पीछे लकड़ी की पट्टी रखते हैं, वैसी पट्टी रखें व विनोबा जैसी छोटी पालथी लगावें। घुटने पर घुटना आ जावे तो बस, वह पेट के लिए पट्टा जैसे हो गया। जेल में भी यह एक दूसरी जेल तो हो ही जायगी, पर आपको खुशी होगी। कातते वक्त माला सामने रखी हो तो राम-राम भी रटा जा सकता है, बस। पर आपका तो बिना जपे ही जाप है। मेरा सुधारना जरूरी है। भगवान वह भी पूरी करेगा।

ज्यादा खबर देने-लेने की कोई जरूरत नहीं। वहां तो बेफिक्री रखिये। मेरा मन खुश है। सावित्री दिनोंदिन सन्तोष से रहती है। प्यार करती है। बैठी है। आप सब हालत में मजा तो लेते ही हो।

सब मजे में हैं। आपकी गैरहाजिरी में दूकान स्वर्ग है।

जानकी का प्रणाम

१७८

वर्धा, २६-२-३९

पूज्यश्री,

खाने-पीने का अब कुछ विचार नहीं है। पर बादामों की चटनी खाने से दवा का लाभ होता है, स्मरण-शक्ति बढ़ती है।

छोटेपन में जो माला आप फेरते थे, वह मेरे पास है। मैं तो सोते समय कलाइयों में से हाथ में लपेट लेती हूं। जागूं तब राम-राम, नहीं तो लिपटी रहती है। खास समय की जरूरत नहीं है। सिरहाने ही पड़ी रहती है। नींद न आवे, तब मदद करती है।

मेरा वजन इलाज के समय ११५ पौंड था, अब १२० पौंड है। नींद अच्छी आती है।

'सर्वोदय' देख लूंगी। आपने लिखा वह सब भी।

लक्ष्मण प्रणाम कहता है। काकीजी कहती है कि मेरे बारे में कुछ नही लिखा।

जानकी का प्रणाम

: १७९ :

मोरांसागर,
होली, ५-३-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २६-२ का लिखा पत्र चि० दामोदर व रामकृष्ण ने ता० १-३ को मुझे दिया। मेरे दोनो पत्र मिल गये ये जानकर सतोष हुआ।

नागपुरवालो को सीकर ले जाना तो ठीक नही रहेगा। श्री गोपीजी तकलीफ पायेंगे तथा वे इन बातो का महत्व भी नही समझते। अपनेको जबरदस्ती संकोच व शर्म में डालकर किसीको तैयार नही करना है। उत्साह हो तो चि० शांता को साथ ले जा सकती हो। चि० उमा को परीक्षा हो जाने के बाद वह आ सकती है। चि० मदालसा के बारे में तो चि० श्रीमन्नारायण व विनोबा उसके अदर का उत्साह व तैयारी देखकर जो निश्चय करे, वही ठीक रहेगा। चि० सावित्री, मदालसा त्रिपुरी-कांग्रेस जायेंगे सो ठीक। चि० बिच्छू (राहुल) का सुन्दर फोटो मिल गया। बड़े ठाठ से व ऐंठ से, प्रसन्नतापूर्वक फोटो खिचवाया है। फोटो भेज दिया सो अच्छा किया।

चि० विट्ठल खूब राजी है—पीर, बवर्ची, भिश्ती, खर चारो का काम वही करता है। मेरे पास उसका पूरा मन लग रहा है। वह तो रात-दिन इसी कोशिश में था कि उसे मेरे पास रहने को मिले। सो उसकी इच्छा सफल हो गई। बीच-बीच मे उसकी स्त्री की खबर लेती रहना।

मेरी जन्मपत्रिका के अनुसार उज्जैन के किसी नामी ज्योतिषी ने मेरा भविष्य छपवाया है। मुझे भी भिजवाया है। देखें, कितनी बातें मिलती हैं!

मुझे तो भविष्य उज्ज्वल ही दिखाई देता है। कम-से-कम मेरा आध्यात्मिक कल्याण तो अवश्य है ही।

सोते समय बड़ा तकिया तुम्हारा पत्र आने के बाद निकाल दिया। अब छोटे से ही काम ले रहा हूं।

तैरनेवाला कपड़ा नीले व काले रंग का होने के कारण रात-दिन पहनना, खासकर रात को, पसंद नही है। मुझे सफेद कपड़े के अलावा दूसरा कपड़ा देखने में भी अच्छा नही लगता, फिर पहनने की तो बात ही कहा रही। समुद्र में नहाने की बात दूसरी है। इतने पर भी तुम्हारा आग्रह रहा तो वह भी कर देखूंगा।

माला पहुंच गई है। यहा भजन तो ज्यादा होना ही रहता है। माला का उपयोग भी होगा ही।

तुम्हारा वजन इलाज के वक्त ११५ था, अब १२० है। नींद ठीक आती है। इससे मालूम देता है कि मगज भी ठीक हो रहा है। बिना मगज ठीक हुए नींद बराबर नही आ सकती।

मेरा वजन २०५ रतल है। अब मुझे वजन कम करने का उत्साह नही रहा, क्योंकि मेरे सामने श्री यग—यहा के आई०जी०पी०—का उदाहरण है। उनका वजन मुझसे बहुत ज्यादा था, तीन सवा तीन सौ रतल यानें पक्के ४ मन के वह किसी समय थे। इतने भारी होते हुए भी उनमें इतनी फुर्ती है कि आश्चर्य होता है। वह बहुत कम खाते है। सोते भी बहुत कम है। दारू नहीं पीते, सिगरेट भी नही पीते। ऐसे अच्छे व्यक्ति की शक्ति का किसी अच्छे काम में उपयोग होता तो कितना अच्छा था। मुझे तो अभी भी आशा है कि भविष्य में कोई समय आयेगा जब उनमें जरूर परिवर्तन होगा। यह व्यक्ति बहुत ही उदार व दानी सुना जाता है। जो पगार मिलती है, उसमें से बहुत ज्यादा तो विद्यार्थियो को, सिपाहियों को, गरीबों को बाट देता है। अपने ऊपर बहुत कम खर्च करता है। यानें जो जयपुर में मिलता है वह पैसा बहुत ज्यादा प्रमाण में वहीं खर्च कर देता है। इस व्यक्ति के प्रति मेरा आदर काफी बढा है। किन्तु जो काम उसके हिस्से में आया है, उसका जब विचार करता हू तो दुख होता है और उसके ऊपर दया आती है। परमात्मा की लीला वही जानें! मैंने तो इनका नाम मेरे वजन घटाने के उदाहरण के

प्रसंग में लिखना चाहा था, किंतु मैं तो प्रवाह में इनकी जीवनी ही लिख गया।

फल वगैरा की जरूरत समझूंगा तो खाता रहूंगा। तुम तो वहांसे जब कभी कोई आये तब संतरे भिजवा दिया करना। खाने से ज्यादा बांटने में सुख मिलता है।

मेरी दिनचर्या मामूली तौर से ठीक चल रही है।

सुबह ५।।-६ बजे उठना, हाथ-मुंह धोना।

६।।-७ प्रार्थना, भजन वगैरा।

७-९ घूमना। वर्षा या हवा नहीं रही तो पहाड़ की तरफ जंगल में करीब पांच मील, नहीं तो अढ़ाई मील डेरे में ही।

९-१०।। पढ़ना।

१०।।-११ स्नान

११-१२ भोजन—सुबह रोटी गेहूं व बाजरे की, मूंग की दाल, एक साग।

१२-१२।। घूमना।

१२।।-२ आराम।

२-५ पढ़ना, कभी थोड़ी देर शतरंज खेलना। सर्वोदय के सातों अंक पूरे कर दिये। जयपुर से अखबार वगैरा इन दिनों सप्ताह में दो बार के करीब आ जाते हैं, उन्हें देखना।

५-६ घूमना।

६-६।। निवृत्त होना।

६।।-७। भोजन।

७।।-९।। चर्खा, रामायण, भजन।

१० बजे सोना।

आज मैं गाय का घी खुद खरीदकर लाया, एक किसान के यहां से। एक रुपये का सवा सेर मिला। इधर के लोगों की आर्थिक हालत बहुत गरीब है। यहां दूध-घी कम मिलता है। लेकिन जो मिलता है, वह अच्छा मिलता है।

पू० बा को प्रणाम लिख भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

आपने लिखा कि शरीर का पूरा जतन रखना सो ठीक है। बंबई से सब सामान आ गया है। हमारे आये-बाद खोलने की लिखी सो ठीक है। आपने लिखा कि 'कमला को हमारी तरफ से प्यार करना', सो हमने किया। पर आपकी बराबरी थोडे ही हो सकती है। आपके हाथ के अक्षर बराबर बंच गये। एक बार के वाचने से ही समाचार समझ में आ गये—पर चिट्ठी बाची दो-चार बार। श्रावण बदी १३, बृहस्पतिवार।

प्राणनाथ को
आपकी दासी का प्रणाम बंचना, घणा-घणा मान से।

: ४ :

वर्धा, ४-८-१३

सिद्ध श्री जावरा शुभस्थान सौ० प्रिय पत्नी जानकी महोदया योग्य लिखी श्री वर्धा से यमुनालाल का सप्रेम मंगल बचना।

"अत्र सर्वतः शुभ तत्र भूयात्"। अपरंच कृपापत्र तुम्हारा श्रावण बदी १३ का आया। बाचकर खुशी हुई। मेरे हाथ का पत्र पढ़ने का चाव तुम्हें बहुत दिनों से था, सो पढ़कर खुशी हुई। मुझे भी तुम्हारे हाथ की चिट्ठी पढ़कर बडा आनन्द हुआ। तुम्हारी चिट्ठी निर्मल प्रेम से लिपी रहती है, इसलिए मुझे भी बार-बार पढनी पडती है। कमला को गोद में अब ज्यादा नही रखती हो, सो अच्छा है। बच्चों में खेलती फिरती है, जबान और हाथ बहुत चलते हैं, छोटे बच्चों को भगा देती है, यह सब पढकर बड़ी खुशी हुई।

श्रीजी उसे आनन्द में रखें और दीर्घायु करें। अगर तुम उसकी व्यवस्था सब तरह से अच्छी रखोगी, पवित्र उपदेश देती रहोगी, पुत्री-धर्म बताती रहोगी, तो कमला होनहार पवित्र सुशील कन्या होकर भविष्य में आदर्श स्त्री बन सकेगी।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। फिलहाल थोड़ी सर्दी है। तुम रहती हो, तब तो मैं शरीर की ओर कम ध्यान देता हू। पर तुम्हारे पीछे शरीर का पूरा खयाल रखता हूं। तुमने लिखा कि शरीर सोलह आने ठीक होगा, ऐसा भरोसा

: १८० :

मोरासागर,
७-३-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हें ता० ५-३ को पत्र लिखा था, परन्तु वह भेजा नहीं जा सका। इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। इन छः दिनों में कोई अखबार या तार-चिट्ठी नहीं मिली है। मैंने जो पत्र सेक्रेटरी, कौंसिल आफ स्टेट, जयपुर के नाम २४-२ को लिखा था अभी तक उसका जवाब भी नहीं मिला है। मैं आज फिर लिख रहा हूं—मुलाकात व अखबार आदि के बारे में।

यहां होली-धुलंडी हमारे रक्षकों के साथ अच्छी मनाई गई। गये साल रांची में मनाई थी व इस साल मोरासागर में। कल पहली बार चावल के दर्शन हुए। मूंग चावल, मालपुए, खीर वगैरा बने थे। यहां राजपूत, जाट, गूजर, ब्राह्मण, मुसलमान, मेहतर वगैरा सब जाति के लोगों के साथ होली-जैसे महत्वपूर्ण त्योहार पर मैंने भोजन किया। यहां पान तो बहुत ज्यादा होते हैं, परन्तु पान का साग किसीको बनाना नहीं आता, नहीं तो फिर हरे साग की कोई अड़चन नहीं रहती। तुम्हें पानों का साग बनाने की विधि आती हो तो लिख भेजना।

जमनालाल का वन्देमातरम्

पुनश्च—ता० १-२ के बाद की दुनिया का या अन्य खबरों का मुझे कुछ भी पता नहीं लग रहा है।

१८१

वर्धा, ७-३-३९

[illegible]

आपके साथ-साथ पत्र और खबर सब मिलती रहती है। दादा धर्माधिकारी को आपका पत्र पढ़ा दिया था। जयपुर-आन्दोलन के बारे में मदद [illegible] में लेख लिखने के लिए उन्हें कहा है।

[illegible] कम हो गया है, पर अभी कुछ समय लगेगा। दादीजी, [illegible] मालपुरा वाली दादीजी मेरे साथ सोकर [illegible]

: १८४ :

पूज्यश्री,

वर्धा, २५-३-३९

शांत और एकांत करे पुकार
पर आदत से लाचार
मान घर-भर एक समान;
सो किसको-किसको दे दोष ?
बीच में जो पड़े उसीपर रोष ।

मन के मालिक हैं आप
पर शरीर पर काबू होता नही,
इसीसे रोग का अंत होता नही ।
मिले जो खाने को अपने-आप,
तो रुचि-अरुचि का नही उसमे संताप;
तभी तो होता है नित ताप ।

पैर की चोट का सरल इलाज—
लगाओ टिंचर, रूई लपेटो
और पट्टी दो बांध ।
ऐसा करो दिन-रात
तो दर्द होय तुरत काफूर ।
चार साल की मोच थी मेरी
हो गई थी इसी तरह निर्मूल ।

ये दो बातें हो जाय,
तो होगा विट्ठल पास ।

पर रहो आप शांत और आजाद,
लिखने का मानो मत कुछ भार ।

याद रह जाय उसका ही बस भाग
उत्तर की हमें जरा नही है आस।

आपका १९ का पत्र मिला। आपने कविता मागी थी, सो झगडे के रूप में पाच-दस मिनट मे कच्ची कर डाली है। किसीको दिया भी नही पाई और औरतों के छूटने की खबर आजाने से पत्र भी ४ रोज से नही डाला।

आप खासी के लिए सोते वक्त मुलेठी को, जो यहा से भेजी थी, पीसकर शहद में मिलाकर चाटें तो अच्छा है। शहद भी भिजवाया था, और चैत्र मे नये नीम की पत्ती काली मिर्च के साथ खाया करे। मिट्टी मिली हो तो अच्छा। न हो तो अकेली भी लाभकारी है।

मै बड़ी सुख में हू। उमा, राम, सावित्री सबकी व्यवस्था दुकान पर मन माफिक है।

आप अगर जल्दी छुटकर आ गये तो कई लोगो के मन-की-मन में रह जायगी। वैसे आपको भी तो छूटने का डर तो रहना ही है। डर तो मुझे भी लगता है कि कही आपके छूटने का तार सचमुच ही न आ जाय। मैं तो बड़ी सुख में हू; पर आपको जो सुख मिलेगा, वह तो और ही बात होगी।

जानकी का प्रणाम

१८५

मारासागर,
१-८-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० २५-३ का लिखा हुआ मेरे व विट्ठल के नाम का पत्र आज मिला। तुम्हारी कविता दो बार तो पढ ली है, और भी पढ़नी पड़ेगी। मेरे आफीसर को भी तुम्हारी कविता मे ठीक रस आ रहा है।

अब तो इस पहाड़ी जगल में मन लगता जा रहा है। ज्यादा दिन रहना पड़ा तो शायद इस भूमि से प्रेम हो जाय।

विट्ठल के घर का एक पत्र ता० १२-३ का लिखा हुआ आज आया। उसमें उसकी स्त्री को कई दिन तक ज्वर आया, यह लिखा है। अब वह ठीक होगी।

तुम्हारे स्वास्थ्य का हाल जाना । वजन थोड़ा बढ़ा, यह तो ठीक है । परन्तु दर्द तो चला जाना चाहिए था ।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८६ :

मोरासागर,
१३-४-३९

प्रिय जानकी,

मेरा स्वास्थ्य उत्तम है । मेरा वजन शुरू में २०५ व बाद में २०८ हुआ, अब १९६ है । मुझे ठीक मालूम दे रहा है । हलका शरीर रहने से उत्साह ठीक रहता है, आलस्य कम हो जाता है, जिसकी मेरे लिए बहुत जरूरत है । आजकल तो मैंने १०-१२ मील तक चलने का अभ्यास कर लिया है । इससे मुझे ठीक लगता है । अगर संभव हुआ तो दिनभर मे पद्रह मील तक तो अभ्यास बढा लेने की इच्छा है ।

आजकल मुख्य चार प्रोग्राम हैं—घूमना, पढ़ना, कातना और सोना । कभी-कभी थोडी देर शतरज खेलना । आजकल मैं भोजन तो एक बार ही करता हू । शाम को पपीता दूध वगैरा लेता हूं । इससे तबीयत ठीक रहती है । यहा का पानी भारी है, इसलिए भी यह प्रयोग ठीक रहता है । खाने में चावल छूट गये हैं, तूवर की दाल छूट गई, चुपड़े हुए फुल्के छूट गये । अब तो घी गरम करके उसमें थोड़ा हीग या प्याज बारीक काटकर दाल मे डालकर खाता हूं । मूग की दाल खूब रुचने लगी है । आजकल एक मिस्सी रोटी याने आधा हिस्सा जो, पाव भाग गेहू और पाव हिस्सा बेसन मिलाकर इसकी रोटी बनाते है । इसमे घी भी मोन मे व ऊपर से लगाया जाता है । मेरे रक्षक की सलाह इन मामलों में बहुत उपयोगी व लाभकारक सिद्ध होती है ।

मदालसा, शांता, उमा आदि अपना प्रोग्राम जिस प्रकार उन्हे उत्साह मालूम हो वैसा ही बनावें । मैंने तो मेरे ध्यान में जो आई वह सूचना कर दी थी । इधर भी घूमना उपयोगी व अच्छा ही है । परन्तु बिना मन हुए केवल मेरे लिखने के कारण इधर का प्रोग्राम न बनाया जाय ।

विट्ठल राजी है । उसका वजन यहा आया तब १०० था, अब १०९ हुआ

है। वह घर की चिंता नही करता। खूब आनन्द व प्रेम मे मेरी सेवा करता है। उसे भी आराम थोडा मिल जाता है, क्योकि मेहमानो का भार बहुत कम रहता है। पर बीच-बीच मे थोडी चिंता हो तो जाती है। उसके घर कहला देना।

जमनालाल का वदेमातरम्

१८७

मोरासागर,
२६-४-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारे ता० १० व १६-४ के पत्र मिले। मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। कल तो मैं आठ मील घूमकर आया। आज अब जा रहा हू।

तुम्हारे डर व प्रेम के कारण जो फल वगैरा आते है, खाता हू। आम रोज खाता हू। वजन थोड़ा कम हो जाने से भी मन में शाति है।

तुमको सुख व शाति मिलती हो तो भले ही वह प्रयोग करती रहो। वास्तव में तो दूसरे ही प्रयोगो की ज्यादा जरूरत है।

कहां जाय कहां ऊपजे, कहा लड़ाए लड्ड।
ना जाने किस लड्ड में ये जाय पड़ेंगे हड्ड॥

देवलीवाले भागवतजी के पास जप करवाये और भागवत में से दसवा स्कध पढ़ाया सो ठीक किया। तुम्हे शाति मिलनी चाहिए। मुझे तो प्राय: यहा शाति मिलती ही रहती है।

शनि का कोप निकल गया या निकल जावेगा, सो यह तो मैं तुम्हे हँसते हुए व उत्साहित व पहले से विचार करते देखूगा तब समझूगा कि शनि महाराज की कृपा-दृष्टि हुई है।

जमनालाल का वदेमातरम्

: १८८ .

मोरासागर,
८-५-३९

प्रिय जानकी,

मेरे नाम व विट्ठल के नाम ता० ३-५ के लिखे हुए तुम्हारे दो पत्र मिले। विट्ठल ने तुम्हे जवाब लिख भेजा है।

कमल तो आ ही गया है। उमा, मदालसा अगर जयपुर आयंगी तो मिल जायगी। उन्हे अभी हाल मे सुभीता न हो तो कोई जल्दी भी नही है।

तुम्हारे बारे मे तो जैसा तुम्हे ठीक लगे और जिसमें शांति मिले, वैसा ही कार्यक्रम रख लेना।

जो कवित्त मैंने लिखा था, वह मेरा बनाया हुआ नही था। मुझमे कविता बनाने की योग्यता कहा है? यह शक्ति तो परमात्मा ने तुम्हे व तुम्हारी संतानों को ही (जिसमें एक जामाता भी शामिल है) बख्शी है। मैंने जो दोहा लिखा था, वह मुझपर लागू होता था। श्री कुशलसिंहजी, डिप्टी सुपरिन्टें-डेण्ट पुलिस, जिनकी देखरेख में मैं हू, ने यह दोहा एक रोज कहा। मुझे ठीक लगा और मैंने नोट कर लिया। वह तुम्हे भी लिख दिया।

मेरा गाडा ठीक चल रहा है। चिंता करने की कोई कारण नही है।

भरतजी की एक चौपाई जो मुझे बहुत पसंद है, लिख देता हूं—

हृदयं हेरि हारेऊं सब ओरा। एकही भांति भलेहि भल मोरा॥
गुर गुसांई साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिणामू॥

अगर शरीर साथ दे तो घूमने का अभ्यास तुम्हे भी जरूर धीरे-धीरे बढाते रहना चाहिए। उस समय जप भी कर सकती हो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १८९ :

कर्णावतों का बाग, जयपुर
११-५-३९

प्रिय जानकी,

मेरे पत्र मिल गये होंगे। आज सुबह मुझे मोरासागर से यहा जयपुर से चार-पांच मील पर कर्णावतों के (साहब नटवाड़ो) के बाग लाया गया है। आशा है, यहा के जलवायु से ठीक रहेगा। मेरे घुटने का दर्द धीरे-धीरे कम होता मालूम हो रहा है। अब यह स्थान जयपुर के नजदीक होने के कारण दवा, खान-पान का ठीक इंतजाम हो जायगा और फायदा जल्दी होगा।

चिंता नहीं करना। मैं आनन्द में हूं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९० :

सीकर, १०-७-३९.

[illegible]वाणी पूरी कर दी है। कविता भेज रही हूँ,

रानीजी ने भेज बुलाया करी खूब मनुहार,
आदर देकर बाता पूछी किया प्रेम व्यवहार।
रानी घणी सयानी जी।

मति बिगडी काणे अफसर की किया जो आपको कैद,
मनचाहा एकान्त आपको पाकर था आनन्द।
दोनों की मनमानी जी।

उजडो बगिया दूर पडी थी सबने दी थी त्याग,
बसे आप तो ताता लागा जागे उसके भाग,
बीती बात पुरानी जी।

मास तीन जब होने आये, जगा पुराना शाप,
हुआ दर्द घुटने में भारी, दिया बड़ा सताप।
दुख से भरी कहानी जी।

सेक हुआ बिजली का चालू, चिंता थी दिन-रात,
खरी कसौटी के सम्मुख थी, सहनशक्ति की बात।
आप हार नहि मानी जी।

जला पाव का मास सेक में, बातो में था ध्यान,
गध उठी घबराया डाक्टर, सूखे उसके प्राण।
शक्ति आपकी जानी जी।

योग-भ्रष्ट भोगी योगी ने लिया मनुज अवतार,
बध छुडाने और मिटाने, मातृभूमि का भार,
प्रजा बडी हरखानी जी।

धन्य भाग्य है धन्य साधना साधो अपना योग,
बापू का प्रण पूरा होगा जय बोलेगें सब लोग।
कहे जानकी बानीजी।

रानी तो मुझे देखकर बहुत राजी हुई। उनको मैं एक अनार रोज खिला

कमल तो आ ही गया है। उमा, मदालसा अगर जयपुर आयगी तो मिल जायगी। उन्हें अभी हाल मे सुभीता न हो तो कोई जल्दी भी नहीं है।

तुम्हारे बारे मे तो जैसा तुम्हें ठीक लगे और जिसमें शांति मिले, वैसा ही कार्यक्रम रख लेना।

जो कवित्त मैंने लिखा था, वह मेरा बनाया हुआ नहीं था। मुझमें कविता बनाने की योग्यता कहा है ? यह शक्ति तो परमात्मा ने तुम्हें व तुम्हारी संतानों को ही (जिसमें एक जामाता भी शामिल हैं) बख्शी है। मैंने जो दोहा लिखा था, वह मुझपर लागू होता था। श्री कुशलसिंहजी, डिप्टी सुपरिन्टें-डेण्ट पुलिस, जिनकी देखरेख में मैं हूं, ने यह दोहा एक रोज कहा। मुझे ठीक लगा और मैंने नोट कर लिया। वह तुम्हें भी लिख दिया।

मेरा गाड़ा ठीक चल रहा है। चिंता करने की कोई कारण नहीं है।

भरतजी की एक चौपाई जो मुझे बहुत पसंद है, लिख देता हूं—

हृदयं हेरि हारेउं सब ओरा। एकही भांति भलेहिं भल मोरा॥
गुर गुसांईं साहिब सिय रामू। लागत मोहिं नीक परिणामू॥

अगर शरीर साथ दे तो घूमने का अभ्यास तुम्हें भी जरूर धीरे-धीरे बढ़ाते रहना चाहिए। उस समय जप भी कर सकती हो।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१८९ :

कर्णावती का बाग, जयपुर
११-५-३९

प्रिय जानकी,

मेरे पत्र मिल गये होंगे। आज सुबह मुझे
से चार-पांच मील पर कर्णावती के (साहब नटवाड़ो)
हैं। आशा है, यहां के जलवायु से ठीक रहेगा। मेरा
कम होता मालूम हो रहा है। अब यह स्थान जयपुर
दवा, खान-पान का ठीक इंतजाम हो जायगा
चिंता नहीं करना। मैं आनन्द में हूं।

नही होता है, सो तुम्हारी भूल है । तुम खुद मुझे खुशी के झूठे समाचार लिखती होगी तभी तुमको लगता है कि दूसरा भी झूठ ही लिखता है ।

मुझे पता चला है कि तुमको सर्दी लगी हुई है । ३-४ दिन दस्त भी लगे और कमला को भी थोडी सर्दी है । तुमको वाजिब हकीकत ही लिखनी चाहिए । आगे ध्यान करना ।

तुमको भेजने के लिए मैंने सप्तमी या दशमी का लिखा है । अगर सबकी मशा यह हो कि राखी पर तुम जावरे ही रहो तो रह जाना और राखी के दूसरे दिन रवाना हो जाना । पर अब जल्दी आ जाना चाहिए । कमला के बिना यहा सूना-सा लगता है । तुम्हारी ओर से समाचार आने पर दुल्ला जाट को तुम्हे लिवाने के लिए यहा से भेज दूगा ।

यहा की फिकर मत करना । आते समय रास्ते में खूब होशियारी रखना । तीन टिकिट सेकन्ड के ले लेना तथा खडवे मे मदिर में रसोई जीमकर दूसरी गाड़ी पकड़ लेना । डालू की चिट्ठी बहुत खुशी की आती है । तुम माजी तथा घरवालो के प्रेम में भूलकर कमला की सभाल कम रखती हो, यह लिखा है, सो ख्याल रखना । हमारे अक्षर बराबर पढ़े गये, लिखा सो ठीक ।

और वहा तुम्हारे घर-कुटुब की जो स्त्रिया व लडकिया हो, उनको सदुपदेश देते रहना । उनका कर्तव्य उनको अच्छी तरह समझाना । फालतू वक्त मत खोना । तुमने वहा रहकर किस-किसका मार्ग-दर्शन किया तथा उपदेश दिया, इसकी विगत तुमसे प्रत्यक्ष में विस्तार से सुनेगे तब खुशी होगी । खर्च का हिसाब तुम स्वय रखती होगी ।

चिरजीव मोहन की मा को भी अच्छी पुस्तकें देना व उनका कर्तव्य उन्हे समझाना । उनकी उमर छोटी है, आज का वक्त बहुत खोटा है । इसका तुमको ख्याल है ही । चिट्ठी जल्दी देना ।

सवत् १९७०, मिती श्रावण सुदी ३ सोमवार को (आज हमारा व्रत है) लिखा जमनालाल का प्रेमपूर्वक आनद-मगल और आशीर्वाद व प्यार तुम्हारे लिए और कमला के लिए ।

तुम्हारा मगल व उन्नति चाहनेवाला हितेच्छु
जमनालाल बजाज

: ११० :

सीकर, १०-७-३९

पूज्यश्री,

सतवाणी पूरी कर दी है। कविता भेज रही हूँ,

रानीजी ने भेज बुलाया करी खूब मनुहार,
आदर देकर बाता पूछी किया प्रेम व्यवहार।
रानी घणी सयानी जी।
मति बिगड़ी काणे अफसर की किया जो आपको कैद,
मनचाहा एकांत आपको पाकर था आनन्द।
दोनो की मनमानी जी।
उजड़ी बगिया दूर पड़ी थी सबने दी थी त्याग,
बसे आप तो ताता लागा जागे उसके भाग,
बीती बात पुरानी जी।
मास तीन जब होने आये, जगा पुराना शाप,
हुआ दर्द घुटने में भारी, दिया बड़ा सताप।
दुख से भरी कहानी जी।
सेक हुआ बिजली का चालू, चिंता थी दिन-रात,
खरी कसौटी के सम्मुख थी, सहनशक्ति की बात।
आप हार नहि मानी जी।
जला पाव का मास सेक में, बातो में था घ्यान,
गध उड़ी घबराया डाक्टर, सूखे उसके प्राण।
शक्ति आपकी जानी जी।
योग-भ्रष्ट भोगी योगी ने लिया मनुज अवतार,
बध छुड़ाने और मिटाने, मातृभूमि का भार,
प्रजा बड़ी हरखानी जी।
धन्य भाग्य है धन्य साधना साधो अपना योग,
बापू का प्रण पूरा होगा जय बोलेंगे सब लोग।
कहे जानकी बानीजी।

माजी तो मुझे देखकर बहुत राजी हुई। उनको मैं एक अनार रोज खिला

अधिकारियों के पत्र-व्यवहार में चला जाता है। कमल परसों आगरा होती हुआ वर्धा रवाना हो गया। तुम्हारे बारे में मुझे ठीक उपदेश दे गया है। एक तो तुम्हें दौरेमें न भेजा जाय। दूसरे, हाल में सीकरही रहने दिया जाय, आदि।

अब के दौरे में तुम्हें कष्ट तो जरूर हुआ, परन्तु तुम्हारा दौरा बहुत सफल रहा। स्त्रियों में चर्खा, खादी, पर्दा की काफी-अच्छी चर्चा की शुरुआत हुई। मुझे तो हमेशा काम का लोभ रहा है। पर विचार करता हूं तो मुझे कबूल कर लेना चाहिए कि अवश्य यह मेरी ज्यादती है। अब इस आदत को सुधारने का विशेष प्रयत्न करूंगा। उमा की क्या व्यवस्था करनी है? वर्धा, देहरादून, हटूंडी जहां चाहो तुम दोनों विचार करके उसे भेजना। खाने-पीने का ठीक ध्यान रखता हूं। मौज है। पू० मां को प्रणाम। गौतम खूब नाचता होगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९३ :

जयपुर-स्टेट-कैदी,
८-८-३९

प्रिय जानकीजी (महाराज),

अभी-अभी सावित्री के लडकी होने का तार मिला। तुम्हारे पास भी आया होगा। कमल ने दिया है। वह दो दिन के लिए फलटन गया था, कल वर्धा पहुंच जायगा।

पैर का घाव भर रहा है। प्राकृतिक इलाज से घाव की जलन तो करीब-करीब सब कम हो गई है। उमा सुबह आती है, शाम को चली जाती है। तुम्हारी गैरहाजिरी में तो काम भी ठीक करती है और हँसाती भी है।

आजकल तो मुझे जल्दी छोड़ देने की खबरें व अफवाहें अखबारों व लोगों द्वारा पहुंचती रहती हैं, इससे स्थायी कार्यक्रम थोड़ा चल-विचल हो जाता है, नहीं तो काम जमा हुआ है। तुम्हारी तबियत ठीक होगी? जब तुम्हारी इच्छा हो आ सकती हो।

जयपुर के प्रधानमंत्री भी एकाएक यहां से छोड़कर चले गए। ठीक सुफल हो रही है व आगे भी होनेवाली है। पू० मां को प्रणाम। गौतम को प्यार। मुकुन्दलाल का हाल लिखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९४ :

न्यू होटल, जयपुर,
२-१०-३९

प्रिय जानकी,

चि० राधाकृष्ण कल शाम को राजी-खुशी यहा आ पहुचा है। मैं आज रात की गाडी से दिल्ली जा रहा हू। वहा दो रोज रहकर ता० ४ की शाम को वर्धा के लिए रवाना हो जाऊगा।

श्री घनश्यामदासजी परसो ३॥ बजे शाम को यहा आ गये है। वह कल ११ बजे महाराजासाहव से मिले थे। बाद में वनस्थली गये। फिर रात की गाडी से दिल्ली चले गये। मैं कल महाराजासाहव से मिला। १॥ घंटा बातचीत हुई।

दो रोज से पैर मे फिर दर्द शुरू हो गया है। कल दोपहर को बिजली का इलाज कराया था।

श्री घनश्यामदासजी दो-तीन रोज रहे। यहीं होटल में मेरे पास ठहरे थे।

तुम्हारा पत्र मिला, मुझे बुरा लगने का तो कोई कारण नही। तुम व मा मुझसे तो कह ही सकती हो, थोडा परमात्मा से भी प्रार्थना करना जरूरी है। पत्र वर्धा देना। यहा बहुत ही ज्यादा काम रहा। परमात्मा की दया से परिणाम ठीक आ जाता दिखता है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

१९५ .

वर्धा, ११-१०-३९

प्रिय जानकी,

जयपुर से रवाना होने के बाद, अभी तक मैं तुम्हे पत्र नही दे सका। यों तो जयपुर में ही बहुत काम में फसा था। वहा से फिर दिल्ली में तथा अब यहा तो और भी ज्यादा काम रहता है। कल अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की मीटिंग समाप्त हो गई।

बगला तथा सारा गेस्ट हाउस मेहमानो के लिए रखे थे। दोनो ही बगले भरे हुए है। मेरे कमरे में श्रीमती सरोजिनीदेवी ठहरी है। तुम्हारे कमरे में

देती हू क्योकि मवाद और लोहू में अनाज कम खाना ही अच्छा है। दही ठीक रहता है। थोड़ा दही और मिसरी दवा की तरह लेती थी। इनको ज्यादा की आदत नही है। अपने-आप ही अच्छी हो रही हैं। मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा है। आप जरा भी फिकर मत करना। माजी की बातो से मेरा भी मन बहला रहता है। उनका मुझपर प्रेम भी है। उनका मन होगा तो अपने साथ ले आऊंगी और आपके पास भेज दूगी। बातें तो खास क्या करनी हैं? वे-ही-वे बातें बार-बार बोल जाती हैं, पर आपके पास रहने से आपको और उनको दोनो को अच्छा लगेगा।[1]

जानकी

---

१. जयपुर-सत्याग्रह के दौरान में जब जमनालालजी फर्णावतों के बाग में नजरबन्द थे तब जानकीदेवीजी ने ऊपर का पत्र उन्हें लिखा था। यह अधूरा ही मिला है। इस पत्र के साथ एक पत्र विट्ठल के नाम का भी था, जो इस नजरबंदी के दरम्यान बड़े भक्ति-भाव से जमनालालजी की सेवा कर रहा था। जानकीदेवीजी को उससे बड़ा संतोष मिला था। विट्ठल आज भी जमनालालजी की दूकान में काम कर रहा है। विट्ठल को लिखा पत्र इस प्रकार है—

विट्ठल,

तुम्हारा रहना-करना देखकर मेरे मन में शांति हो गई है। अनार इस-लिए भेजा है कि उसका रस लेने से खून में ठंडक होती है और ताकत बढ़ती है। सो काकाजी लें तो पूछकर देते रहना। हम यहां सरबती गेहूं खाते हैं उसका दाना छोटा होता है, पर रोटी कोरी भी मीठी लगती है। उसका नमूना और आटा भी भेजेंगे। खास टीबड़ी का बाजरा मंगाया है, सो रोटी या खिचड़ी बनाकर देखना। मुंगोड़ी नई बना कर भेजी है। उसमें जरा हींग और अदरख डालने से ठीक रहता है। मीठा नीम अपने झाड़ का ही है। यह छौंक में भी दे सकते हो और साग में साबुत भी डाल सकते हो। खाते समय उसे निकाल दिया जा सकता है। उसमें सुगन्ध भी है और विटामिन तो है ही।

काकाजी टब में नहावें तब पेट पर कपड़ा फिराते हुए टब का पानी हलचल करता हुआ जितना हिलता रहे उतना अच्छा। इसका ख्याल

: १९१ :

जयपुर-स्टेट-कैदी,
१२-७-३९

प्रिय जानकी,

तुम्हारे कई पत्र मिले, कविता भी मिली। हीरे की परख तो जौहरी ही जान सकता है, किसान-जाट क्या जाने। नवाब होता तो बिना देखे-समझे भी सोने के ढेर लगा देता। कोई जौहरी मिलेगा तो उससे परीक्षा कराने का ख्याल रखूंगा।

यंगसाहब तो गये। नये टेलरसाहब आये हैं। अभी मिलना नहीं हुआ है। अचरोल ठाकुरसाहब व श्री पीरामलजी परसों मिल गये थे।

श्री स्वामी लच्छीरामजी की मृत्यु परसों ता० १० को हो गई। स्वामी व अच्छे व्यक्ति चल बसे।

तुम्हारी मढ़ी में तो एक मात्रा मुझसे ज्यादा है। मेरे तो ज० ब० ही है, तुम्हारे जा० ब० है। तुम मुझसे बड़ी हुई हो।

मा की तबीयत सीकर पहुंचते ही ठीक हो गई, यह जानकर चिंता कम हुई। पहले थोड़ी चिंता हो गई थी।

काशी का पानी मिला, पी भी लिया।

तुमने चार पैसे के लिफाफे में पत्र भेजा। यहां के लिए तो देशी डाक से दो पैसे में ही पत्र आ सकता है। आगे से ख्याल रखना।

गुलाब आगई होगी। हेडराजजी वैद्यजी वगैरा को कह देना, चिंता नहीं करें।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९२ :

जयपुर-स्टेट-कैदी,
२-८-३९

प्रिय जानकीजी (महाराज),

आखिर अभी आपका ही पत्र पहले मिला। मेरा तो बहुत-सा समय रहता। मैं तो इस से हंसती हूं तो उससे मेरी आंख की नजर भी ठीक होने लगी है। और इसके तो बहुत फायदे हैं ही।

अधिकारियो के पत्र-व्यवहार मे चला जाता हूं। कमल परसों आगरा होती हुआ वर्धा रवाना हो गया। तुम्हारे बारे में मुझे ठीक उपदेश दे गया है। एक तो तुम्हे दौरेमे न भेजा जाय। दूसरे, हाल में सीकरही रहने दिया जाय, आदि।

अब के दौरे मे तुम्हें कष्ट तो जरूर हुआ, परन्तु तुम्हारा दौरा बहुत सफल रहा। स्त्रियों में चर्खा, खादी, पर्दा की काफी-अच्छी चर्चा की शुरुआत हुई। मुझे तो हमेशा काम का लोभ रहा है। पर विचार करता हूं तो मुझे क[बूल] कर लेना चाहिए कि अवश्य यह मेरी ज्यादती है। अब इस आदत को सुधा[रने] का विशेष प्रयत्न करूंगा। उमा की क्या व्यवस्था करनी है? वर्धा, देहरा[दून] हटूंडी जहां चाहो तुम दोनो विचार करके उसे भेजना। खाने-पीने का ठ[ीक] ध्यान रखता हूं। मौज है। पू० मा को प्रणाम। गौतम खूब नाचता होगा।

जमनालाल का वंदेमात[रम्]

: १९३ :

जयपुर-स्टेट-कै[म्प]
८-८-३[९]

प्रिय जानकीजी (महाराज),

अभी-अभी सावित्री के लड़की होने का तार मिला। तुम्हारे पास [भी] आया होगा। कमल ने दिया है। वह दो दिन के लिए कलकत्ता गया था, [अब] वर्धा पहुंच जायगा।

पैर का घाव भर रहा है। प्राकृतिक इलाज से घाव की जलन तो करीब करीब सब कम हो गई है। उमा सुबह आती है, शाम को चली जाती है तुम्हारी गैरहाजिरी में तो काम भी ठीक करती है और हंसती भी है।

आजकल तो मुझे जल्दी छोड़ देने की खबरें व अफवाहें अखबारों [व] लोगो द्वारा पहुचती रहती है, इससे स्थायी कार्यक्रम थोड़ा चल-विचल हो जाता है, नहीं तो काम जमा हुआ है। तुम्हारी तबियत ठीक होगी? [ज]ब तुम्हारी इच्छा हो आ सकती हो।

जयपुर के प्रधानमंत्री भी एकाएक यहां से छोड़कर चले गये। ठीक उथल-पुथल हो रही है व आगे भी होनेवाली है। पू० मा को प्रणाम, चि० गौतम को प्यार। मुकुन्दराव का हाल लिखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९४ :

न्यू होटल, जयपुर,
२-१०-३९

प्रिय जानकी,

चि० राधाकृष्ण कल शाम को राजी-खुशी यहा आ पहुचा है। मैं आज रात की गाडी से दिल्ली जा रहा हूं। वहा दो रोज रहकर ता० ४ की शाम को वर्धा के लिए रवाना हो जाऊंगा।

श्री घनश्यामदासजी परसो ३॥ बजे शाम को यहा आ गये है। वह कल ११ बजे महाराजासाहब से मिले थे। बाद में वनस्थली गये। फिर रात की गाडी से दिल्ली चले गये। मैं कल महाराजासाहब से मिला। १॥ घंटा बातचीत हुई।

दो रोज से पैर मे फिर दर्द शुरू हो गया है। कल दोपहर को बिजली का इलाज कराया था।

श्री घनश्यामदासजी दो-तीन रोज रहे। यही होटल मे मेरे पास ठहरे थे।

तुम्हारा पत्र मिला, मुझे बुरा लगने का तो कोई कारण नही। तुम व मा मुझसे तो वह ही सकती हो, थोडा परमात्मा से भी प्रार्थना करना जरूरी है। पत्र वर्धा देना। यहा बहुत ही ज्यादा काम रहा। परमात्मा की दया से परिणाम ठीक आ जाता दिखता है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: १९५ :

वर्धा, ११-१०-३९

प्रिय जानकी,

जयपुर से रवाना होने के बाद, अभी तक मैं तुम्हे पत्र नही दे सका। यो तो जयपुर में ही बहुत काम में फसा था। वहा से फिर दिल्ली में तथा अब यहा तो और भी ज्यादा काम रहता है। कल अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की मीटिंग समाप्त हो गई।

बंगला तथा सारा गेस्ट हाउस मेहमानो के लिए रखे थे। दोनो ही बंगले भरे हुए हैं। मेरे कमरे में श्रीमती सरोजिनीदेवी ठहरी है। तुम्हारे कमरे में

परन्तु इलाज शुरू करने के बाद तो आना-जाना सभव नही है। तुम्हे जिस प्रकार शान्ति व समाधान मिले, वह रास्ता अगर परमात्मा तुम्हे दिखा दे तो सब ठीक हो जायगा।

पू० बापूजी से खुलकर बातचीत करने का मौका मिल गया था। वह मेरी स्थिति पूरी तरह जान गये है।

तुम्हे तो कुछ ईश्वर पर विश्वास रखना चाहिए। बिना श्रद्धा व विश्वास के संतोष या शान्ति मिलना कठिन है। मदालसा के मेरे साथ रहने मे मुझे भी सुख-शान्ति मिलेगी व उसका इलाज भी हो जायगा।

परमात्मा तुम्हे सद्बुद्धि प्रदान करे। तुम्हारा पत्र तीसरी बार पढ़कर फाड़ डाला है।

जमनालाल का वदेमातरम्

पुनश्च—वर्धा मे तुम्हारे लिए जितना आदर, प्रेम व श्रद्धा है वह और कहाँ मिलनेवाली है ? बापू, विनोबा आदि सभी तो यही है। तुम्हारे मन मे सीधे विचार आने चाहिए, उल्टे नही।

१९७

वर्धा २३-१०-३[illegible]

प्रिय जानकीजी,

कल पत्र लिखा ही है। शाम को तुम्हारा यहा इतवार को पहुचने का तार पढकर मुझे व मदालसा को खुशी हुई। यहा ठीक समय मिलेगा—खेलने व गप्पे मारने को। शतरज ले आना।

इतवार को लगभग १२॥ बजे एक्सप्रेस आती है। उस गाड़ी पर मद्दू [illegible] विट्ठल स्टेशन पर रहेगे। प्रोग्राम मे फेरफार नही करना।

जमनालाल का वदेमातर[illegible]

१९८

जुहू, १०-३-[illegible]

पूज्यश्री

कल मेरा मन ठीक न होने से [illegible] के नाम का पत्र देते दे [illegible] बारे मे, [illegible] ने कहा कि [illegible] नही है। सो सब समाचार जान [illegible] सब [illegible] है।

कांग्रेस-अधिवेशन में जाने की आपको बापूजी से ठीक सलाह मिल ही जायगी। लेकिन पैर का दर्द अगर हलका नहीं पड़ा, तो वहां आपको आराम कैसे मिलेगा? आगे आपका जैसा उत्साह!

मुझे अकेले-दुकेले की तो कुछ भी परवा नहीं है। आपके सामने तो मैं ऊंची हुई-सी रहती हूं। आपके पीछे सूनी-सूनी। चेतनता को बुलाती रहती हू। पर अब मैं शान्त हूं। आप कोई सोच मत करना। आप अब तो खुश रहो। भगवान ने आपकी अबतक रक्षा की है, अब भी करेगा ही।

पगली का प्रणाम

: १९९ :

वर्धा, ११-३-४०

प्रिय जानकी,

मैं कल शाम को यहा पहुचा। ता० १३ या १४ को सुबह मेल से रामगढ जाऊंगा। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

तुम्हारे दोनो पत्र मिले। जयपुर में परिश्रम तो हुआ, परन्तु रास्ता बैठ जायगा, ऐसा लगता है। पू० बापूजी यहा है, इस कारण आना पड़ा। उन्हें पूरी स्थिति समझा दी है। मुझे फिर जयपुर जाना होगा। अगर तुम अपना मन शान्त रखोगी व उसे असली मार्ग पर लगाती रहोगी तो तुम्हे अवश्य शाति मिलेगी व मुझे भी जरूर मिलेगी। मेरे स्वास्थ्य की ज्यादा चिंता करने से कोई लाभ थोड़े ही होनेवाला है। घर घर सारे लोगों में प्रेम व विश्वास का वातावरण देखने की इच्छा मुझे रहती है। ईश्वर ने किया तो देख सकूगा। अन्यथा विशेष दु ख करने से तो कुछ होनेवाला नही है। आखिर, उदारता से ही सारा मार्ग ठीक बठेगा, ऐसी मेरी दृढ़ धारणा है। ईश्वर सद्‌बुद्धि प्रदान करेगा। तुम वहा बच्चों को लेकर अकेली हो, अकेलेपन का लाभ उठा सको, तो जरूर उठाना। पत्र जल्दी में लिखा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०० :

जुहू, २१-३-४०

पूज्यश्री,

कल पत्र आपका ता० १८ का मिला। मैं खूब आनन्द से रहने की

: ५ :

(११-८-१३)

सिद्ध श्री सर्वा शुभस्थान श्रीमुत आप जोग लिखी जावरा से जानकी का प्रणाम बचना । कृपा पत्र आपका आया । बाचकर सुखी हुई । आपने लिखा कि कमला की अच्छी व्यवस्था रखना तथा उसे पुत्री-धर्म बताना तो अच्छी सुशील कन्या होगी सो तो ठीक है, पर वह जो-कुछ बनेगी आपकी कृपा से ही बन पावेगी । सोमवार के व्रत की पूजा का ध्यान रखेंगे । हमारे पीछे से शरीर का पूरा ध्यान रखते हो लिखा, सो ठीक है ।

आपने आने की लिखी सो राखी से पहले तो मेरा आना बिल्कुल नहीं होगा । राखी के बाद ये लोग जरूर भेज देंगे । हमारा और इनका तो मन राखी के बाद १५ दिन और रहने का है । बाकी आपको तकलीफ होवे तो नहीं रहेंगे । आपका भादवे में बंबई जाने का विचार था, सो हम यहां है तब तक जाना हो जावे तो ठीक है । आपको कमला के बिना सूनापन लगता है; सो तो ठीक ही है ।

स्त्रियों व लड़कियों को सदुपदेश देने का लिखा, सो मैं तो अपनी समझ से जितना होता है करती ही हूं । सारी विगत आपसे मिलेंगे तब कहेंगे । आपके लिखने से मुझे और भी जोश आ जाता है । खर्च के हिसाब के बारे में लिखा सो मेहरबानी करके माफ करोगे । वहां आये बाद आपको सब बता देंगे । कमला अब बहुत राजी है ।

प्राणनाथ से मेरा प्रेम-नमस्कार बचना ।

कमला की मां

: ६ :

बंबई, ११-९-१४

श्री सौभाग्यवती पवित्र प्रिये,

सप्रेम, हार्दिक आशीर्वाद । तुम्हें पत्र लिखने का दो-तीन रोज से मन हो रहा था । आज पूरा अवकाश था, सो लिखा । यहां मैं दानीजी के पास रहता हूं । वह मेरी सब व्यवस्था उत्तम प्रकार से करते हैं । मैं दूसरी जगह लिए बहुत कहता हूं, परंतु यह जाने नहीं देते । मेरा स्वास्थ्य ठीक

कोशिश करती हूं। घड़ी के कांटे की तरह नियमित रूप से मेरा इलाज चल रहा है। मैं तो आपकी कृष्ण-लीला देखकर गोपियों की तरह बिना सुध की हो जाती हूं।

कल एक पत्र डाकिये को देने को दिया, पर डाकिये की साइकिल मिली नहीं। अब दोनों पत्र साथ ही मिलेंगे।

पांच रोज की छुट्टी होने से पार्टियों की धूम है। परसों इतवार को यहां होली की गोठ है, २००-३०० आदमियों की। सो अपने यहां रखना चाहते थे। मैं अकेली हूं, इसमें पूछने आये थे। कहना ही पड़ा, हां, आओ, आपकी ही जगह है। जरा बापू का डर लगा, पर 'जानकी-कुटीर' की लाज भी तो रखनी थी ना!

आम मिलने आने की तो जरूरत नहीं लगती है। आपका जयपुर का १०-१२ दिन का काम बाकी लगता हो तो निबटा आओ। यदि एक आध-महीना लगे तो सीकर में बैठकर काम करने से होटल का खर्च बच जायगा। अगर आपको लगता हो कि आपका मगज अब हलका है और मेरा बोझ न लगे तो मैं सीकर में दूध का प्रयोग तो चला सकती हूं। इस ७ ता० को प्रयोग के तीन मास तो पूरे हो जायगे।

आपको दूसरे कान से सुनाई देने लगे तो बापू को १००) और आपका मगज शान्त हो तो ५००) देने का सोचा है। आप इस ओर ज्यादा ध्यान दो, इससे पत्र में लिख दिया है।

अब मैं उदारतासहित खुश हूं। आप जयपुर का तो काम कर आओ। हम तो बेटे-बहू की शरण में पड़े हैं। पढ़कर आप जरूर हँसोगे।

आपकी,
पगली

: २०१ :

न्यू होटल, जयपुर,
४-४-४०

प्रिय जानकी,

मैं परसों सुबह यहां आया। प्राइम मिनिस्टर से कल व परसों बात हुई थी। समझौता होगा या नहीं इसका अंदाजा लगना अभी मुश्किल है।

१० ता० को आखिरी निर्णय मालूम हो जायगा। तुम तैयारी से रहना। यदि समझौता नहीं हुआ तो तुम्हें यहां आना होगा। तुम्हारा नाम वर्किंग कमेटी में दे दिया गया है।

समझौते की खबर देने के लिए एक तार आज सुबह बंबई आफिस के पते से दिया था। श्री केदारदेवजी ने कहा ही होगा। या तो मैं यहा से १३ ता० को निकलकर १५ ता० की वर्किंग कमेटी में वर्धा जाऊंगा, नहीं तो यहीं रहने का विचार है। सावित्री व कमल के वहा आ जाने पर ही तुम्हारा प्रोग्राम निश्चित हो सकेगा। दूध का प्रयोग चलता होगा।

मुन्नी अब राजी होगी। याद आ जाया करती है। राम के पढ़ने का क्या निश्चय हुआ? बंबई मे ठीक संतोषकारक व्यवस्था हो सकती हो तो ठीक ही है। राम व कमल मिलकर निश्चय कर लेंगे।

जमनालाल का वंदेमातरम्

२०३

जयपुर, १४-८-४०

प्रिय जानकी,

समझौता न हुआ तो तुम्हारी यहा आने की तैयारी है, इस आशय का तुम्हारी ओर से दिया हुआ तार मिला। अभी तो यहा समझौता हो गया है। परन्तु लिखित जवाब अभी तक जयपुर सरकार की ओर से नही आया है। कल मैं महाराजासाहब से भी मिला। करीब १॥ घंटे बाते हुईं। यहा की परिस्थिति को सुधारने के लिए मुझे कुछ समय यहा रहना पड़ेगा। यहा के कार्यकर्ताओं व राजवालो दोनो की यह इच्छा है। वातावरण ठीक करने मे समय लगेगा, परन्तु पूरी तरह वातावरण ठीक हो सकेगा या नहीं, इसकी मुझे शंका ही है। तुम्हारा दूध का प्रयोग खतम हो गया होगा।

श्री प्रताप सेठ भी कुटुबसहित यहा आकर वनस्थली देख आये हैं। दो हजार की सहायता देना तो स्वीकार कर लिया है। तुम इस समय यहा रहती तो आने-जानेवाले मेहमानों व समझौते की बातचीत मे रस ले सकती थी। मेरा इधर अभी कुछ समय तक रहने का इरादा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०३ :

वर्धा, १५-६-४०

प्रिय जानकी,

मैं आज सुबह यहां सकुशल आ पहुंचा। अभी यहां मेहमानों में थीटदनजी हैं। कल से वर्किंग कमेटी के लिए मेहमानों का आना शुरू हो जायगा। २० ता० तक कमेटी की भी मीटिंग चलेगी। तुम लोग सब २१ ता० को यहां पहुंच सकते हो।

चि० मदालसा से कह देना कि मैं व राम परसों से यानि सोमवार से उनके घर सोने एवं नहाने-धोने के लिए जावेंगे। श्रीमन राजी है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

२०४

नई दिल्ली, ३-७-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार कमल ने टेलीफोन से मालूम कर लिए थे। आज पत्र पढ़कर चिंता कम हुई।

बंबई में अबकी बार दोनों कामों में बहुत थोड़े समय में ही काफी सफलता मिली। मुझे तो यह तुम्हारी हार्दिक शुभ विदाई का ही परिणाम मालूम पड़ता है। कालेज के लिए थोड़ी मेहनत में ही सवा लाख तो नगद वसूल हो गये, बाकी पच्चीस हजार भी आ जायगे। सारी हकीकत दामोदर कहेगा ही। स्टेट कमेटी के चुनाव में भी अच्छे लोग आ गये। मैं भी भविष्य का प्रोग्राम सोच रहा हूं। परमात्मा ने किया तो शांति के साथ पूरी सफलता भी मिलेगी। मैं यहां से वर्धा आऊंगा। ता० ७ को वहां पहुंचूंगा। श्रीमन से कह देना कि कालेज के उद्घाटन का समारंभ सुन्दर व आकर्षक ढंग से हो। आश्रम की बहनों के मंगलगीत भी हों। बाहर से आनेवालों का इंतजाम दामोदर व भागरमलजी के जिम्मे कर दिया जायगा। ओम् का पत्र मिल गया था।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २०५ :

जयपुर, ४-९-४०

प्रिय जानकी,

यहा आने के बाद मै तुम्हे एक भी पत्र लिख नही सका। यहापर हम लोग सब अच्छी तरह पहुच गये थे। रेल के सफर की थकावट व वर्षा के कारण पू० राजेन्द्रबाबू को थोडी तकलीफ जरूर रही। परसो उनका स्वास्थ्य कुछ खराब हो गया था। आज ठीक है। कल हम लोगो का सीकर जाने का विचार है। वहापर कुछ रोज रहना होगा। पार्वतीबाई डीडवानिया भी यही है। प्रजा-मडल की वर्किग कमेटी की मीटिग मे आई थी। कल रात को यहा एक पब्लिक मीटिग हुई थी। राजेन्द्रबाबू बीमारी की वजह से जा नही सके। काफी जोरदार मीटिग हुई। नया व अच्छा हिन्दुस्तानी प्राइम मिनिस्टर चाहिए, इसकी माग की गई।

अगर ज्यादा दिन इधर रहना हुआ तो तुम्हे बुलवाने की इच्छा है। , मदू के दो पत्र आ गये है। कमल, सावित्री, बालक सब अच्छे होगे।

जमनालाल का वदेमातरम्

: २०६ :

पवनार
९-९-४०

पूज्यश्री,

आपका ता० ४ का जयपुर का मित्र मिला। मुझे लगा तो था कि आप पत्र दे नही सके है। आपके मन मे लग रहा होगा कि ये मै ही क्यो न दे दू। पर सोचा अभी क्यो दू, पीछे ही दूगी। वहा का हवा-पानी सब अच्छा है। आप थोडे दिन मुझे भूलकर रहिए।

अब तो खुर्शीदबेन ने कहा है कि अपनी कमजोरिया ढूढ-ढूढकर निकालने की कोशिश करो। सो ऐसा ही करने का सोचा है। अत मे शाति तो खुद की प्राप्त की हुई ही मिल सकती है; नही तो जहा मोह रहेगा, जीव वहा फसा रहेगा। खैर, इस जन्म मे तो भगवान् की कृपा अपूर्व रही है, आगे की लाज श्री भगवान रख देगा तो सोने मे सुगध है।

से कहा है कि विनोबा के पास आकर रह जा। पर उसका मन

कम है और उसका मेरे पास जमेगा भी नहीं। बाकी मुझे किसीकी जरूरत है नहीं। मेरा सब मजे में चल रहा है।

आपकी सहचरी का प्रणाम

: २०७ :

जयपुर,
१३-९-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ता० ९-९ का पत्र मिला। तुम्हें फिर से बवासीर की गड़बड़ हो गई, यह पढ़कर चिंता हो रही है। मेरी समझ में तुम चि० उमा को लेकर यहां आ जाओ तो इधर जयपुर या अजमेर में इलाज करवा लिया जा सकता। जयपुर में भी ठीक इलाज करनेवाला सुना है।

पू० राजेन्द्रबाबू अब जरा ठीक हैं। बीच में बुखार हो जाने से कमजोरी ज्यादा हो गई थी। हवा-पानी तो इस समय बहुत अच्छा है, खासकर सीकर की तरफ। तुम्हें ज्यादा शांति शायद जयपुर में मिले। तुम विचार कर लेना। चि० रामेश्वर भी थोड़े दिन यहीं रहेगा, इससे भी मदद मिल सकेगी। तुम जो निर्णय करो सो मुझे लिख देना। मेरे शरीर की गाड़ी तो ठीक-ठीक चल रही है, पर मन का अभी संतोषकारक रास्ता नहीं बैठा है। श्री सुरसाद बहन की सलाह तो ठीक ही है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

२०८

वर्धा,

: २०५ :

जयपुर, ४-९-४०

प्रिय जानकी,

यहां आने के बाद मैं तुम्हे एक भी पत्र लिख नही सका। यहापर हम लोग सब अच्छी तरह पहुच गये थे। रेल के सफर की थकावट व वर्षा के कारण पू० राजेन्द्रबाबू को थोडी तकलीफ जरूर रही। परसो उनका स्वास्थ्य कुछ खराब हो गया था। आज ठीक है। कल हम लोगो का सीकर जाने का विचार है। वहापर कुछ रोज रहना होगा। पार्वतीबाई डीडवानिया भी यही है। प्रजा-मंडल की वर्किंग कमेटी की मीटिंग मे आई थी। कल रात को यहा एक पब्लिक मीटिंग हुई थी। राजेन्द्रबाबू बीमारी की वजह से जा नही सके। काफी जोरदार मीटिंग हुई। नया व अच्छा हिन्दुस्तानी प्राइम मिनिस्टर चाहिए, इसकी माग की गई।

अगर ज्यादा दिन इधर रहना हुआ तो तुम्हे बुलवाने की इच्छा है। चि० मदू के दो पत्र आ गये है। कमल, सावित्री, बालक सब अच्छे होगे।

जमनालाल का वंदेमातरम्

२०६ :

पवनार
९-९-४०

पूज्यश्री,

आपका ता० ४ का जयपुर का मित्र मिला। मुझे लगा तो था कि आप पत्र दे नही सके है। आपके मन मे लग रहा होगा कि ये मै ही क्यों न दे दू। पर सोचा अभी क्यो दू, पीछे ही दूगी। वहा का हवा-पानी सब अच्छा है। आप थोड़े दिन मुझे भूलकर रहिए।

अब तो सुशीदबेन ने कहा है कि अपनी कमजोरिया ढूढ़-ढूढ़कर निकालने की कोशिश करो। सो ऐसा ही करने का सोचा है। अंत में शां[ति] की प्राप्त की हुई ही मिल सकती है; नहीं तो जहा मोह फसा रहेगा। खैर, इस जन्म में तो भगवान् की कृपा लाज थी भगवान रख देगा तो सोने में सुगंध है।

... ने कहा है कि विनोबा के पास

सो भी ठीक है। मैं भी तो रिद्धि-सिद्धि वाली ठहरी। जगह छोड़ी कि हजारों के खर्चे समझो।

कल से तो मुझे इतना आनंद हो रहा है, जैसे पवनार रहने का पूरा फल मुझे तत्काल ही मिल गया हो। मेरा यह आनंद आपको पहुंचेगा ही—जाने-अनजाने में भी 'करंट' तो चलता ही है ना ?

अब आपका गाड़ा सतोषकारक ही चलनेवाला है। आप तो बापूजी से भी ज्यादा भाग्यशाली हो। आपके जाये (बालक) आपका इहलोक-परलोक दोनों सुधारनेवाले हैं। वे आपको जीवन-मुक्त कर रहे हैं न !

विनोबाजी धुलिया-जेल मे लिखे अपने गीता के प्रवचनों का सुधार कुंदर से कराते हैं, तब वे मुझे भी सुनने को मिलते हैं। खाते समय रोज विनोबाजी जब थोड़ा-सा दही निकालते हैं तब दगडू कहता है कि कुछ खाओगे भी कि सदा 'यह निकाल, वह निकाल' ही करोगे। विनोबाजी कहते हैं कि तेरे कहने से खाता, तो अबतक मेरी समाधि बन गई होती पवनार में। मैंने विनोबाजी से कहा कि दगडू तो तुम्हारी लुगाई ही है—खाने की मौज तो खानेवाले और खिलानेवाले के हुए बिना हो ही नहीं सकती।

एक दिन सारा महिला-आश्रम यहा आया था। टकी पर जीमे। ९॥ से १०॥ तक विनोबाजी का प्रवचन बड़ा ही बढ़िया हुआ। ११ से १२ बजे तक सबके साथ नहाये, १ घंटा। लेटने की बजाय १॥ घण्टा पत्थरों पर चलकर पवधबे के पास पड़े रहे। छोकरियां पड़ती-फिसलती गई, मैं भी फिसल गई। एक चप्पल गई।

जानकी का प्रणाम

२१०

सीकर, २८-९-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पवनार से लिखा ता० १८-९ का पत्र मिला। चि० मदू को आग्रह करके नहीं बुलाऊंगा। धनश्यामजी का जलसा दरहरे पर है। उस समय बुलाने की इच्छा है। पू० राजेन्द्रबाबू दल-बल सहित कल यहा पहुंच गये हैं। यहा उन्हें लाभ पहुंचेगा। श्री सीतारामजी सेकसरिया, मदालसा-

सोच-समझकर यही रहना चाहिए, इसीमें आपकी और मेरी दोनों की भलाई है। मैं जानती हूं कि मेरे न आने से आपका बहुत दिनों का मगज का भारीपन हलका ही होगा और मगज के उस हलकेपन का सुख मुझे ही मिलेगा।

एक दिन कुदर से बाते करते हुए सहज ही विनोबाजी बोले—"किसी से बात पूछना मेरे स्वभाव मे नही है। कहे, सो सुन लेता हू। जमनालालजी बाते खोद [illegible] निकालते है और वह उसमें से कुछ निकाल भी लेते है, पर [illegible] नही है।"

कभी-क[illegible] [illegible]।

एक [illegible] "कुए का पानी लाओ।" नौकर न कहा— [illegible] उनका गला जल्दी खराब होता है। उबाला हुआ पानी पीते है। [illegible] चुप रहना पडा। यह तो मुझमे कमी है।

मैं घर गई तब पीछे से उनकी घडी बिगड गई। दगडू ने मेरी घडी रख ली तो विनोबाजी वापस मेरे सामान मे रख गये। बोले कि बिना पूछे क्यों ली। पर शाम को फिर दगडू ने ले जाकर चुपचाप रख दी। अब तक चल ही रही है, ऐसी मजे की बात है।

कमल दो बार यहा आया पिकनिक में।

(यह पत्र अधूरा मिला है।)

२०९.

पवनार, १८-९-४०

पूज्यश्री,

आपका सच्चाई और हृदय से भरा पत्र पढकर आख में थोडा पानी आ गया। लगा कि भगवान को भी सतो की परीक्षा में खूब मजा आता है। बाद में मन को खूब शाति हुई। रात को अच्छी नींद आई।

मदू को तो बुलाना ठीक नहीं होगा, उसका मगज अस्थिर है। सास के पास पेट भर रह ले तो ठीक है। मैंने कह भी दिया था कि तेरे काकाजी बुलावें तो मन मत डुलाना। कमल कहता है कि मा, काकाजी तो खर्च बहुत [illegible] है, तू तो कम कर। एक बार मुझे कर्ज कम करने दे, पीछे खर्च करना,

सो भी ठीक है। मैं भी तो रिद्धि-सिद्धि वाली ठहरी। जगह छोडी कि हजारो के सर्च समझो।

कल से तो मुझ इतना आनद हो रहा है, जैसे पवनार रहने का पूरा फल मुझे तत्काल ही मिल गया हो। मेरा यह आनद आपको पहुचेगा ही—जाने-अनजाने में भी 'करट' तो चलता ही है ना ?

अब आपका गाडा सतोपकारक ही चलनेवाला है। आप तो बापूजी से भी ज्यादा भाग्यशाली हो। आपके जाये (बालक) आपका इहलोक-परलोक दोनो सुधारनेवाले है। वे आपको जीवन-मुक्त कर रहे है न !

विनोबाजी धुलिया-जेल में लिखे अपने गीता के प्रवचनो का सुधार कुदर से कराते है, तब वे मुझे भी सुनने को मिलते है। खाते समय रोज विनोबाजी जब थोड़ा-सा दही निकालते है तब दगडू कहता है कि कुछ खाओगे भी कि सदा 'यह निकाल, वह निकाल' ही करोगे। विनोबाजी कहते है कि तेरे कहने से खाता, तो अबतक मेरी समाधि बन गई होती पवनार में। मैंने विनोबाजी से कहा कि दगडू तो तुम्हारी लुगाई ही है—खाने की मौज तो खानेवाले और खिलानेवाले के हुए बिना हो ही नही सकती।

एक दिन सारा महिला-आश्रम यहा आया था। टकी पर जीमे। ९॥ से १०॥ तक विनोबाजी का प्रवचन बडा ही बढिया हुआ। ११ से १२ बजे तक सबके साथ नहाये, १ घटा। लेटने की बजाय १॥ घण्टा पत्थरो पर चलकर धबधबे के पास पडे रहे। छोकरिया पडती-फिसलती गई, मैं भी फिसल पडी। एक चप्पल गई।

जानकी का प्रणाम

२१०

सीकर, २४-९-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पवनार से लिखा ता० १८-९ का पत्र मिला। चि० मदू को आग्रह करके नही बुलाऊगा। वनस्थली का जलसा दशहरे पर है। उस समय बुलाने की इच्छा है। पू० राजेन्द्रबाबू दल-बल सहित कल यहा पहुच गये है। यहा उन्हे लाभ पहुचेगा। श्री सीतारामजी सेकसरिया, महावीर-

प्रसादजी पोद्दार तथा अन्य मित्रों का ठीक जमघट रहेगा। मुझे सच्चा आस्तिक बनने की इच्छा हो रही है। देखें कब और कैसे पार पड़ती है।

मसो की तकलीफ कम हो रही है, सो तो ठीक, परन्तु आखिर खान-पान या इलाज का तो ध्यान रखना ही पड़ेगा। विनोबाजी की राय तो मिलती ही है।

विनोबाजी के स्वभाव मे बात पूछने की आदत नही है, ऐसा तुमने लिखा सो मेरी समझ मे नही आया। मिलना होगा तब खुलासा हो जायगा।

मेरा दशहरे तक तो जयपुर की तरफ ही रहने का विचार है। शायद बाद मे भी रहना पडे। जकात व दीवानसाहब के बारे में आंदोलन चल रहा है। देखे क्या परिणाम होता है। शायद कुछ दिनों के लिए रुकना भी पड़ जाय। जो होगा सो ठीक ही होगा। तुम चिंता नही करना। मन व शरीर खूब प्रसन्न रखना। परमात्मा से प्रार्थना करना कि मेरी सद्बुद्धि कायम रखे।

मुझे कुछ और दौरा करना पड़ेगा। शरीर की संभाल तो पूरी रखता हूं। शरीर भी राजी है। मगर मन उतना राजी नहीं है। उसमें मेरा ही दोष है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २११ :

सीकर, ३-१०-४

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र दिल्ली से वापस आने पर मिला। पू० राजेन्द्रबाबू तो अक्तूबर तक सीकर में रहेंगे। यहा का हवा-पानी इन्हे अनुकूल आ गया है। दोनो समय छ मील के करीब पैदल घम लेते हैं। मेरा भी ता० २० तक तो जयपुर, उदयपुर, वनस्थली वगैरा रहना होगा। श्री सीतारामजी भी यहा १०-१५ रोज रह लेंगे। महावीरजी गये। तुम्हारा पत्र चि० राधाकिसन को भेज दिया है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। तुम्हारा ठीक रहे तो आसाम के दौरे में तुम्हें ले जाने की इच्छा है। तुम्हारे पत्र वापस भेज दिये हैं, तुम ... रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

रहना है। यहां आने के बाद मानसिक चिंता भी कम हो गई है। तुमने प्रेम-पूर्वक, मंगल-कामना के साथ मुझे विदा किया था, सो आशा है, शीघ्र ही सारे कामों की व्यवस्था ठीक-ठीक हो जायगी। वर्धा से यहां चिंता बहुत कम रहती है सो जानना। श्री ईश्वर ने किया तो रुई शीघ्र तेज हो जायगी। तुम किसी प्रकार की चिंता नहीं करना। कमला की बहुत याद आती है। उसे बहुत प्रेम आनंद से रखना। तुम भी खाने-पीने की पूरी व्यवस्था रखना। डालूराम को प्रसन्न रखना। वह कोई बात कहे तो नाराज नहीं होना व उसका मन नहीं दुखाना। यहां मुझे आठ-दस रोज और लगेंगे। रुई की ४०० गांठें बिकी हैं और रहने से बाकी भी बिक जायगी। रुपयों की व्यवस्था बहुत अच्छी तरह से हो गई है। मेरा चित्त प्रसन्न है। पूज्य मामी मिले तो उनको धीरज दिलाना। उनके काम की भी कोशिश की जा रही है। पार पड़ना या नहीं सो तो परमात्मा के अधीन है। तुम उनको भली प्रकार सब तरह से शांत रखना। ज्यादा क्या लिखूं, तुम्हारी तरफ की थोड़ी फिक्र रहती है सो तुम्हारा पत्र आने से मिट जावेगी। मुझे पूर्ण आशा है कि जो मैंने लिखा है या मेरे चलते वक्त जो मैंने कहा है, उसका तुम अवश्य पालन करोगी। तुमको कोई चीज-वस्तु चाहिए, सो अवश्य लिख देना। कोई तरह का विचार नहीं लाना। कल शनिवार को पूज्य दादाजी का श्राद्ध यहां करने में आवेगा सो विदित रहे। यहां लड़ाई की कोई गड़बड़ नहीं है।

पत्र पहुंचने पर कमला को मेरी तरफ से प्यार देना।

तुम्हारा हितेच्छु
जमनालाल बजाज

: ७ :

श्री हरि

वर्धा, १४-९-१४

श्रीयुत प्राणनाथ,

जोग लिखी वर्धा से आपकी दासी का प्रणाम बचना। पत्र आपका आया, पढ़कर बड़ा आनन्द हुआ। प्रेम का ऐसा आनन्द दूसरों के लिए भी होना चाहिए। मुझे चिन्ता यह है कि मैं आपके विचारों के माफिक अभी हूं नहीं। आपके साथ रहने से शायद बन जाऊं। दानीजी के यहां अच्छी व्यवस्था के

: २१२ :

वर्धा, ६-११-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा छोटा-सा पत्र तो मुझे जयपुर में मिल गया था, प्रसाद नहीं मिल सका था। तुम्हारा वह पत्र चि० उमा ने आगरे में अपने पास रख लिया था, तुमसे विनोद करने के लिए। मुझे यहां स्टेशन पर ही मालूम हुआ कि तुम एक रोज पहले ही पू० बापूजी के कहने से बंबई मसों का आपरेशन कराने के लिए चली गई। तुम्हारे साथ घर का कोई जवाबदार आदमी नहीं गया, जानकर मुझे बुरा तो मालूम दिया। बाद में तो कमल तुम्हारे पास पहुंच ही गया है। आखिर डाक्टरों ने क्या फैसला किया ? मैं तार की राह देख रहा हूं। पू० बापूजी की राय तो है कि आपरेशन कराना ही पड़ेगा। मेरी समझ में भी आपरेशन कराना ही ठीक रहेगा। चि० मदालसा आने को तैयार है। तार आते ही मैं भी दो-चार रोज के लिए आ सकूंगा।

पू० बापूजी बहुत करके उपवास अब नहीं करेंगे, आज निश्चय हो जायगा। जवाहरलाल तो ठिकाने (जेल) पहुंच ही गये हैं। तुम जल्दी अच्छी हो जाओ तो ठीक रहे। मेरा इरादा अब ज्यादा समय वर्धा में ही रहने का—कई कारणों से—हो रहा है। यहां सब अच्छा है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

२१३

[illegible]

२०-६-४१

प्रिय जानकी

मुझे आखिर दोनों ओर से पूरी स्वतंत्रता [illegible] आ ही गया। उसका मुझे दुःख है। मैं देख रहा हूं कि [illegible] के कारण भी मानसिक अशांति [illegible] है। [illegible] की मात्रा बढ़ती जा रही है। इसकी [illegible] होगी। मुझे भी [illegible] हो ऐसी बात हो गई।

पू० बापू से [illegible] मिलने पर अपना [illegible]

प्रसादजी पोद्दार तथा अन्य मित्रों का ठीक जमघट रहेगा। मुझे सच्चा आस्तिक बनने की इच्छा हो रही है। देखें कब और कैसे पार पड़ती है।

मसो की तकलीफ कम हो रही है, सो तो ठीक, परन्तु आखिर खान-पान या इलाज का तो ध्यान रखना ही पड़ेगा। विनोबाजी की राय तो मिलती ही है।

विनोबाजी के स्वभाव में बात पूछने की आदत नहीं है, ऐसा तुमने लिखा सो मेरी समझ में नहीं आया। मिलना होगा तब खुलासा हो जायगा।

मेरा दशहरे तक तो जयपुर की तरफ ही रहने का विचार है। शायद बाद में भी रहना पड़े। जकात व दीवानसाहब के बारे में आंदोलन चल रहा है। देखें क्या परिणाम होता है। शायद कुछ दिनों के लिए रुकना भी पड़ जाय। जो होगा सो ठीक ही होगा। तुम चिंता नहीं करना। मन व शरीर खूब प्रसन्न रखना। परमात्मा से प्रार्थना करना कि मेरी सद्‌बुद्धि कायम रखे।

मुझे कुछ और दौरा करना पड़ेगा। शरीर की संभाल तो पूरी रखता हूं। शरीर भी राजी है। मगर मन उतना राजी नहीं है। उसमें मेरा ही दोष है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २११ :

सीकर, ३-१०-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा पत्र दिल्ली से वापस आने पर मिला। पू० राजेन्द्रबाबू तो अक्तूबर तक सीकर में रहेंगे। यहां का हवा-पानी इन्हें अनुकूल आ गया है। दोनों समय छ. मील के करीब पैदल घूम लेते हैं। मेरा भी ता० २० तक तो जयपुर, उदयपुर, बनस्थली वगैरा रहना होगा। श्री सीतारामजी भी यहां १०-१५ रोज रह लेंगे। महावीरजी गये। तुम्हारा पत्र चि० राधाकिसन को भेज दिया है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। तुम्हारा ठीक रहे तो आसाम के दौरे में तुम्हें ले जाने की इच्छा है। तुम्हारे पत्र वापस भेज दिये हैं, तुम संभालकर रखना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१२ :

वर्धा ६-११-४०

प्रिय जानकी,

तुम्हारा छोटा-सा पत्र तो मुझे जयपुर में मिल गया था, प्रमाद नही मिल सका था। तुम्हारा बड़ा पत्र चि० उमा ने आगरे में अपने पास रख लिया था, तुमसे विनोद करने के लिए। मुझे यहां स्टेशन पर ही मालूम हुआ कि तुम एक रोज पहले ही पू० बापूजी के कहने से बंबई मसों का आपरेशन कराने के लिए चली गई। तुम्हारे साथ घर का कोई जवाबदार आदमी नही गया, जानकर मुझे बुरा तो मालूम दिया। बाद में तो कमल तुम्हारे पास पहुच ही गया है। आखिर डाक्टरों ने क्या फैसला किया ? मैं तार की राह देख रहा हूं। पू० बापूजी की राय तो है कि आपरेशन कराना ही पड़ेगा। मेरी समझ से भी आपरेशन कराना ही ठीक रहेगा। चि० मदालसा आने को तैयार है। तार आते ही मैं भी दो-चार रोज के लिए आ सकूगा।

पू० बापूजी बहुत करके उपवास अब नही करेंगे, आज निश्चय हो जायगा। जवाहरलाल तो ठिकाने (जेल) पहुच ही गये हैं। तुम जल्दी अच्छी हो जाओ तो ठीक रहे। मेरा इरादा अब ज्यादा समय वर्धा में ही रहने का—कई कारणों से—हो रहा है। यहां सब अच्छे हैं।

जमनालाल का वंदेमातरम्

२१३

सेवाग्राम,
२५-६-४१

प्रिय जानकी,

सुबह आखिर दोनों ओर से पूरी सावधानी रखने पर भी मुझे क्रोध आ ही गया। उसका मुझे दुःख है। मैं देख रहा हू कि शारीरिक कमजोरी के कारण भी मानसिक अशांति तो प्राय रहा ही करती है। मुझमें क्रोध की मात्रा बढ़ती जा रही है। इसकी रोकथाम तो मुझे जल्दी ही करनी होगी। सुबह की बातचीत में मेरी ओर से भी आवेशवश कुछ गलतफहमी हो, ऐसी बातें हो गईं।

पू० बापू से मौका मिलने पर अपने क्रोध आदि आने की, मेरा व्यवहार

तुम्हें प्रायः असंतोष देनेवाला होता है, इत्यादि कहने की स्वयं मेरी इच्छा है। तुम्हे तो कहने का पूर्ण हक व अधिकार है ही। कोई रास्ता निकल सके तो सतोष ही होगा। ज्यादा क्या लिखू ? कमल भी यहां आया है। तुम उससे भी पेट भरकर बात कर लोगी तो शायद तुम्हें शांति मिले। मैं तो आज सेवाग्राम ही हू। आने की सूचना बंगले भेज देना सो वह मोटर की व्यवस्था कर देंगे। नत्थू के बारे में जो ठीक समझो, निर्णय करना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१४ :

(जून, १९४१)

पूज्यश्री,

आपकी लीला अकसर समझ में नही आती। घर का हर आदमी आपके जैसा बन जाय, यह तो हो नहीं सकता। आप मुझे अपने से भी ऊचा देखना चाहते हैं और इसी आशा से क्रोध भी आपको हो जाता है। यह क्रोध तो प्रेम का ही रूप है। मैं तो आपको योग-भ्रष्ट योगी ही समझती आई हूं और इसी धारणा को लेकर डरते हुए जीवन निवाहती आई हूं। आपकी लीला ऊपर से कठोर पर भीतर से कोमल—यह मैं क्या जानू ! मेरे दिल में यह लोभ तो स्वाभाविक था कि आप दीर्घजीवी बनें और कही मैं आपको खो न बैठू। आप जैसे बडे आदमी से सन्तान-प्राप्ति हो गई, मेरे लिए इतना काफी है। आपके मुह से वैराग्यभरे शब्द तो निकलते ही रहते हैं। मुझे गर्व था कि मेरे पति न तो मुझ-जैसे चेहरे के हैं, न बूढ़े हैं, न दुजबर हैं। मैं सबसे भाग्यवान हूं। परन्तु मेरा वह गर्व नष्ट हुआ। दुखी दुनिया का, और पुरुषों की स्वार्थवृत्ति का पूरा अनुभव मुझे हो गया।

जरा मेरी जिंदगी के बारे में भी तो सोचिये कि :

१. १३ साल अबोध अवस्था में बीते, तब जीवन का रस तो कुछ जानती ही नही थी;

२. पाच साल, गर्भवती अवस्था के, जिसमें पुरुष को छूना पाप समझा;

३. सत्रह साल जोश में गये;

४. तीन साल जेल के;

५ शेष आठ मास में मैं मुसाफिरी के लिए निकालिये। कितने दिन साथ रहा? लेकिन विश्वास दृढ़ था, शरीर भी आपसे चंगा था, संयम से समय बीता। भनिया हुई, क्योंकि उन्होंने सहन किया; किन्तु 'सता' तो आजतक एक भी नहीं सुना। गर्व किसीका रहता नहीं। अपनेको तो मैंने भी नीच माना। वह नीचता छोड़कर सुबुद्धि इस जन्म में नहीं पा सकूंगी, पर आपने तो आशावाद की हद कर दी। लेकिन भगवान गर्व दूर करना चाहते हो तो!

आप समझते हैं, सबकुछ सुख-सुविधाएं उपलब्ध हैं, पर क्या यह भी जानते हैं कि मेरी नींद व मेरा दिल तो जैसे उड़ ही गये हैं। कुछ खो गया-सा लगता है। मैं तो दूसरा स्नानघर आदि भी पसंद नहीं करती। आपके स्नानघर में ही नहाना अच्छा लगता है। मन की ऐसी स्थिति में, मेरी सुने बिना ही, आप मुझे इस प्रकार दबाओ कि आपकी बात मुझे कबूल ही करना चाहिए, और कबूल न करूं तो मुझे डर कि कहीं आपके सिर की नसें न फट जाय। उतरती अवस्था में पुरुष की डांट से हृदय फट जाता है। लड़के-बच्चों का तो फिर भी सहन कर लेते हैं। किन्तु पुरुष का मुश्किल से सहन होता है। फिर, और बातों में चाहे कितना गुस्सा हो खास बातों का तो सतोषदायक उत्तर मिलना चाहिए। फिर अन्य बातों के बारे में मनुष्य लापरवाह बन सकता है। भीतर और ही कुछ चाहता हो तो मनुष्य का हर बात में चिड़चिड़ा होना स्वाभाविक है और इससे आपको और गुस्सा आता है। मैं आपकी आशाओं को कैसे पूरी कर सकूं? आप जरूर मेरी आशाओं को पूरी कर सकते हैं। यह मत भूलिए कि मेरी शांति में आपकी शांति भी समाई हुई है।

अपने आदमी से भी हारकर इस तरह कागजों से बात करनी पड़े, यह भी क्या जीवन है! मैं कुछ बातें और रखती हूं। पढ़ते-पढ़ते गुस्सा आवे तो पढ़ना वहीं बन्द कर दें:

१. आप किसीके पीछे बिक जाओ, यह कोई कैसे सहन करेगा?

२. तीन बातें आपके मन में मेरे बारे में पन्द्रह आने झूठी जम गई हैं; वे आज तो नहीं बताऊंगी; पर कालांतर के बाद तो सब ठीक मान ही लेंगे। इसी आशा पर ही तो जीवित हूं। और यह आप भी

अच्छी तरह जानते हैं। वे तीन बातें कौन-सी हैं, अभी न पूछना ही ठीक होगा।

३. कमल ने कहा था, आगे चलकर सोलह आने दुःख पहुंचता दीखे, और आज दो आने में मामला सुलझता हो तो डरना नही, उसे मंजूर कर लेना चाहिए।

यह सब लिखने से मेरा मगज तो हल्का हुआ, पर आप पर क्या असर होगा? यह पत्र फाड डालूं या दिखाऊं?[१]

कइयो मे से एक पागल

: २१५ :

पवनार,

(जवाब दिया, २७-१०-४१ को)

पूज्यश्री,

समस्याओ के समाधान खोजती रहती हू। लेकिन ये तीन शिकायतें मिटा नही पा रही हूं। ज्यो-ज्यो समय बीतता है, ये ज्यादा दु ख देनेवाली बनती जा रही हैं। आप ही इनका समाधान कर सकते हैं। इसलिए इनका सुलासा किया है। इन विचारो के लिए क्षमा चाहती हू।

---

[१] गांधीजी का मार्गदर्शन पाकर जब जमनालालजी आत्म-साक्षात्कार के पथ पर आरूढ़ हुए तो उन्होंने अपने परिवार और स्वजन-मित्रों को भी इस साधना में लगाने का प्रयास किया। इस महान् यात्रा में जानकीदेवीजी छाया की तरह उनका साथ देने का प्रयत्न करती रहीं, किन्तु स्वभाव एवं क्षेत्र में भिन्न दो समयात्रियों में दृष्टिभेद होता ही है। जमनालालजी और जानकीदेवीजी के जीवन-प्रवाह में भी यही दृष्टि-भेद था। प्रारंभ में यह उतना प्रखर नहीं था, जितना बाद में प्रकट होने लगा। समस्याएं उठती थीं और फिर सुलझती जाती थीं, क्योंकि दोनों परस्पर स्पष्ट-तर होते गये, यहांतक कि अपनी वैयक्तिक समस्याएं भी दोनों सार्वजनिक जीवन की कसौटी पर कसने लगे थे। जानकीदेवी के कई पत्र इन समस्याओं और उससे संघर्ष का उल्लेख करते हैं। इन वर्षों में लिखे गये जानकीदेवीजी के कुछ खास पत्रों में से उपर्युक्त पत्र एक है।

पहली शिकायत काशी के सम्बन्ध की है—आपने मेरे भरोसे एक स्त्री को छोड़ा, पर आपको पछताना ही पड़ा। आपका यह लिखना ठीक भी है। मुझे भी हमेशा यह लगता रहा है कि मेरे पास काशी और राधा (काशी की लड़की) थोड़े-थोड़े से के लिए तंगी भोगती है। मेरे मन में संकीर्णता भले ही हो, पर फिर भी ऊपर से तो कहती ही रहती हू और मन में यह समझती भी रहती हू कि दूसरो को देने और खिलाने से तो काशी के घर कुछ पहुचे या राधा को खाना मिले तो ठीक। काशी के विचारों में तो स्थितप्रज्ञता है। पर राधा को एक रोज आपने चौके में मदद करते देख लिया, सो मजाक में ही आप बोले कि तू मुफ्त में काम क्यों करती है? और आपने उसे साड़ी दिलवा दी। उसी दिन से उस छोकरी के मुह से मेरे प्रति उपेक्षा प्रकट होने लगी।

मेरे मन में भी दर्द तो है ही। और जो कुछ बचता है, वह औरों की अपेक्षा काशी को मिले तो अच्छा ही लगता है। पर अब मेरे मन में फर्क आ रहा है। यह अगर काशी को मालूम पड़ेगा तो वह दुःखी ही होगी।

ज्यादा सोचू तो थोड़ा-सा यह भी लगता है कि दूसरी शिकायत है मदू के सम्बन्ध की। मदू का तो आप सब जानते हो। आपका प्रेम मुझे न मिलने से मैं उसे जितना चाहिए, उतना प्रेम नहीं दे सकती।

तीसरी शिकायत रामगोपाल की पत्नी के सम्बन्ध की है। इसको मैं व राधाकिसन जितना जानते है उतना और कोई नहीं। मैं अच्छी से अच्छी बात कहूं वह भी काटी जाय तो मेरी अक्ल ही काटी जाय, ऐसा मुझे लगता है। उसकी माग तो ५०) रुपये हैं। उतनी मैं पूरी करना चाहती हूं। दूकान से रुपये न दे सकें तो मेरा देना ठीक है। पर आप जो कहेंगे सो कबूल है।

चौथी शिकायत स्वयं शैतान जानकी की है। बापू के पास रहते पीछे कुछ छाती में धड़कन और सिर में हिस्टीरिया के असर ने सताया; पर दुर्बलता मेरी है और मैं लाचार हूं। मेरा मोह सब जगह से निकलकर अब आपके प्रति रह गया है। पर कल्याण तो मोह में नहीं है। मेरी समझ में मैं आपकी इच्छा पूरी करने में सदा लगी रही। पर बीच में अन्तराय ने परीक्षा ली तो क्या किया जाय?

अब भी मदद करने की मन में रहती है। आपसे दूर रहने में दोनों का भला है, ऐसा भी लगता है, पर क्या बताऊं !

अगर आप कोई प्रायश्चित्त करना-कराना चाहें तो हम लोग तय करें। फिर अमल में लाने की ताकत तो आपमें है ही।

अंत में एक बात यह कि नौकरों के सामने स्वाभाविक रूप से अनजाने आपसे डाटना-फटकारना हो जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि वे लापरवाह हो जाते हैं और उनकी नजर में मेरे प्रति अपमान का-सा भाव आ जाता है।

इसके लिए मुझे ऐसा लगता है कि आपका खाना, भले कोई भी तैयार कर दे, पर खिलाऊं मैं। यह परीक्षा भी कड़ी ही है।

इन चारों बातों में राधाकिसन, किशोरलालभाई जो निकाल दे दें वह मंजूर करने की कोशिश करने के लिए मैं तैयार हूं ?

बलिहारी उस धर्म की बिन स्वारथ बिन मान,
एक दूसरे के लिए, नर-नारी दें प्रान।

जानकी

जानकीदेवी की इन शिकायतों का जवाब श्री जमनालालजी ने उसी कागज पर इस प्रकार लिख दिया—

श्री किशोरलालभाई, जाजूजी, हरिभाऊजी या राधाकिसन मिलकर या अकेले, किसी के भी समाधान से तुम्हे संतोष हो, उससे समाधान करा सकती हो। वह जो फैसला करेंगे उसका खयाल मैं भी रखूगा। —ज०

इतना लिखने के बाद जमनालालजी ने जानकीदेवीजी की प्रत्येक शिकायत का नीचे लिखा सिलसिलेवार जवाब दिया—

२७-१०-४१

१. काशी के बारे मे मेरी भावना व विचार मै तुम्हे अभी तक नही समझा सका, इसका मुझे भी दु ख है। अगर मेरे विचार तुम समझना चाहती व समझ लेती तो तुम्हे भी दु ख नही होता व मुझे भी समाधान मिल जाता। काशी से तुम खूब प्रेम करती हो। तुम्हारे स्वभाव को देखते हुए खूब प्रेम से तुमने उसे निभाया है, यह मैं मानता हूं। परन्तु मेरी वृत्ति व विचार से हम लोगो को व अगर मैं घर में रहता हूं व मुखिया हूं तो मुझे, इस बार काशी

चाहे जिसकी गलती से क्रोध के साथ गई, उसका प्रायश्चित्त करना जरूरी मालूम देता है। काकी की लडकी को अगर सुधारना भी है तो तुम्हारे तरीके से वह नहीं सुधर सकती है। यह बात मैंने तुम्हे भी कही है।

२. मदू के बारे में तुमने जो यह लिखा कि मेरा प्रेम तुम्हे न मिलने से तुम उसमें प्रेम नहीं कर पाती, तो मेरा प्रेम तुमपर है या नहीं, इस बारे में मैं क्या कहू! हां, मोह अगर है तो मैं उसे हटाना चाहता हू—पूरी कोशिश करके।

३. चि० रामगोपाल की पत्नी को मेरी समझ से १०-१५ रुपये की मदद की जरूरत है। दूकान से ज्यादा दिलाने की कोशिश करने से दूसरे आदमियों पर बुरा असर पडता है। तुम अपने पास से जरूरत के माफिक १०-१५ रुपये महीने की मदद, जबतक उसका लडका कमाने लायक न हो जाय, तबतक करना चाहो तो जरूर कर सकती हो।

४. संतान जानकी का मतलब मेरी समझ में नही आया।

नौकर के सामने डाटने-फटकारने की इच्छा तो रहती नही। खासकर तो खान-पान के मामले में तथा नौकरो के मामले में हम लोगो का बहुत गहरा मतभेद बहुत वर्ष से चल रहा है। मेरी इच्छा रहती है कि तुम्हारी वृत्ति में फरक पड जाय तो सुख से समय बहने लगे। मेरे मोह के कारण इसमे मेरी ज्यादा कोशिश रहती है। यह मैं जानता भी हू कि उसका परिणाम ठीक न आकर विपरीत ही आता है। परन्तु मैं भी अपनी आदत से लाचार हो गया हू। सभाल रखते हुए भी तुम्हे कहने की भूल हो ही जाती है। पर मान-अपमान की तुम्हारी कल्पना व मेरी कल्पना में बहुत फर्क है।

जैसा कि बालक व मित्र लोग करते है, मै भी मानता हू कि हम लोग मोह को तो कम करें व प्रेम को बढाते रहें। यह कार्य तो रात-दिन नजदीक रहकर सम्भव नही है। इसलिए दूर रहकर प्रसन्नतापूर्वक समझकर व्यवहार रखें तो आशा है, दोनो सुखी रह सकते हैं। बालको व नौकरो पर भी अच्छा असर हो सकता है।

मुझे तो अब तुम्हे सुधारने का प्रयत्न करने का मोह छोडकर खुद अपने-को ही सुधारना चाहिए। अपनी कमजोरिया निकालते रहना चाहिए। दूर रहकर शान्त, शुद्ध व प्रेममय वातावरण में ही यह सम्भव है। मैं तो

समझता हूं कि तुम्हें भी सुख आने के लिए प्रयत्न करते रहने में जो सुख व समाधान मिल सकेगा, वह और तरह से नहीं। तुम्हें जिस प्रकार शान्ति व समाधान मिल सके, उसका मार्ग पू० बापू की सलाह से तुम्हें निश्चित कर लेना चाहिए। —ज०

: २१६ :

जसनगर, ५-११-४१

प्रिय जानकी

पू० मां को प्रणाम करना और मेरी ओर से भी रोज बन सके तो प्रणाम कर लिया करना। सांगुरी आने के बाद भोजन, भजन, प्रार्थना में श्री महादेवीबहन की या श्री सानी की मदद लेने की इच्छा होती है। जबतक महात्मा की जरूरत है, तबतक तो सानी से मदद ली नहीं जा सकती। उसकी अधिक मदद तो उसकी लड़की का विवाह हो जाने के बाद ही ली जाना संभव है। यदि मेरे लिए उपयोगी लगे तो अपने विचार यहां से, नहीं तो रास्ते से, लिख भिजवाना। चि० राधाकिसन की राय भी लेना चाहो तो ले सकती हो। मेरी इच्छा वर्तमान में बहनों में महादेवी, सानी, रेहाना बहन, चि० शान्ता इन चारों के अंदर संबंध विशेष रखने की है। भजन आदि की दृष्टि भी इसमें है और स्वभाव-प्रेमलता की भी। बाकी रेहाना व शान्ता का तो ज्यादा उपयोग होना संभव नहीं है। मदालसा, अनसूया का तो बालकों के कारण फिलहाल उपयोग ज्यादा नहीं मिल सकेगा। आशा है, तुम खूब उत्साह व विश्वास प्राप्त करके आओगी।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २१७ :

सीकर, ११-११-४१

पूज्यश्री,

पत्र राधाकृष्ण को पढ़ा दिया है। मांजी को मैंने रास्ते में कह दिया था कि रोज उनको आपकी तरफ से प्रणाम करना है, सो वह रोज मुझे याद करा देवें। सो रोज कह देती हैं—जमनाघर को और तुझे दोनों को आसीष। तब मैं प्रणाम कर लेती हूं। आज अब और कह दूंगी।

महेश आपके पास आ जाय तो अच्छा । अब उसका मन भी ऊब गया है । सो राधाकिसन के आने तक उसे ले आओ, तो उसका भी मन हलका हो जाय । खाना तो वह सभाल ही सकता है ।

मुझे रोना आया करता था सो वह तो अब गया । नींद भी निश्चिन्त आ जाती है । और बातों के लिए तो पहले का पुण्य कहीं से खोदकर निकालना पड़ेगा । पर भगवान की दया जबरदस्त है, सो कुछ काम आवेगी ही । कुछ करना चाहिए, इतना जचता है । उत्साह भी आ जायगा, यह बड़ी आशा है । मेरा मन प्रसन्न है ।

बापूजी के नाम का पत्र ठीक समझो तो दिखा देना, वरना नहीं ।

जानकी का प्रणाम

२१८

वर्धा

१७-११-४१

प्रिय जानकी,

तुम्हारा ११-११ का पत्र मिला । मा तुम्हें रोज आशीर्वाद देकर प्रणाम की याद दिला देती है सो एक प्रकार से ठीक ही है । महेश का आना अभी सभव नहीं होगा । यहा जरूरत भी नहीं है । चि० गोरी व विट्ठल तो मेरे पास है ही । रिषभदास, बग वगैरा भी घूमते-फिरते रहते ही है । चि० दादा, श्रीमन भी साथ हो जाते हैं । ठीक चल रहा है । मन में शांति व समाधान बढ़ता जा रहा है । गो-सेवा के बारे में ठीक मन लगता जा रहा है, यह अच्छी निशानी है । बगले के प्राय दो चक्कर हो जाते हैं । चि० मदू व बच्चा खुश है । कमला व ओमू भी हँसती-हँसाती रहती है । उसके आस-पास आनंदी वातावरण दिखाई देता है । कल हम सब एलाबेली हुरडा पार्टी में गये थे । चि० कमल सावित्री कमला अनसूया पूरा महिलाश्रम, बजाजवाडी व दूकान के लोग भी थे । ठीक रहा । तुम्हारी भी कम-से-कम ऐसे मौके पर तो याद आ ही जाती है ।

खुर्शीद बहन १०-१२ रोज से व मृदुला ५-७ रोज से यहा पर हो है । खुर्शीद तो मदू के साथ ठीक बैठती है । तुम अगर आनंद से रहते अब

जाओ तो मेरी तो समझ है, सारे घर-भर में चारो तरफ अब आनंद-ही-आनद दिखाई देने लग जायगा। मुझे लगता है कि ऐसा हो जायगा। राधा के विवाह के बाद ही काशी का गोपुरी आना ठीक रहेगा। मदू के पास जरूरत होगी तो वहा रह जायगी। चिता का कारण नही। शायद पू० विनोबा व राम एक बार तो तुम्हारे आने के पहले छूटकर आ जाते दिखते हैं।

जमनालाल का वदेमातरम्

: २१९ :

सीकर, २२-११-४१

पूज्यश्री,

पत्र पढा। समाचार जाने। मदालसा का गाडा प्रसन्नता से चले, बस। आपकी तरफ से भी निर्भयतारूपी जीवनदान मिल ही गया। अब आप आनन्द से विचरो। मैं भी रोज ही आपको याद आये बिना थोड़ी ही रहूगी? मुझे आपको कुरेदे बिना चैन नही पड़ती और आपके जप मे विघ्न पड़े बिना नही रहता। बस, यही मौज है। सो भी भगवान की दया ही है।

जानकी का प्रणाम

: २२० :

गोपुरी, वर्धा
२७-११-४१

प्रिय जानकी,

तुम्हारा छोटा-सा पत्र मिल गया। चि० राधाकिसन के साथ ही आना ठीक रहेगा, क्योंकि चि० कमला को बंबई व ओम् को शायद एक विवाह में जाना पड़े। मेरा गाड़ा तो रास्ते लग गया दिखता है, इससे मन में समाधान व उत्साह है। गोपुरी की झोंपड़ी ठीक जगह व ठीक मौके पर बन गई है। इसमें तो अकेले का मन भी लग सकता है। फिर मेरे साथ तो गोपी व विट्ठल भी है। घूमने-फिरने के समय अच्छा दल-बल हो जाता है। महेश भी बीच-बीच में आता रहता है। बीच में दो-तीन रोज एक योगी आ गये थे। वह गो-सेवा से काफी प्रेम रखते थे, भजन भी गाया करते थे। अब तो गोपुरी में ही रिषभदास, गोपी वगैरा मिलकर भोजन एक वक्त बनाया करेंगे।

चि० शाता ने मेथी थोडी-सी बना दी थी वह कल पूरी हो जायगी। उसके बाद कल मा के बनाये हुए लड्डू भी आ जायगे। दो-तीन रोज वह भी खा देखूगा। मेथी खाना तो ठीक है, पर पथ्य बहुत कडक मालूम देता है। संतरे, मोसबी, टमाटर, दही, नीबू, खटाई सब बद रखना पडता है। केले, सीताफल भी। खैर, १०-१५ रोज की सजा है, सो भुगत ली जायगी। पू० मा को कह देना। तुम्हारा तार तो प्राय बहुत-से छापो मे सीकर जाते ही छप गया है। चि० मदू, बेबी राजी है। श्री दयावती बहन आकर ६-७ रोज रह गई थी, आज गई है। जैसा उसका नाम है वैसी ही मालूम देती है।

जमनालाल का वदेमातरम्

. २२१

गोपुरी, वर्धा,
१९-१२-४१

प्रिय जानकी,

यहा सब ठीक चल रहा है। चि० मदू व राम परसो मेरे साथ भोजन करने यहा मेरी झोपड़ी (महल) में आये थे। एक रोज शाताबाई के पास गये थे। मदू, बेबी खुश है। अब तो कमला व ओम् की कलकत्ते की कुछ मित्र-मडली का यहा आना सभव हो रहा है। गाव मे मकान देखना शुरू है। इन दिनो पू० विनोबा के प्रवचन बहुत ही भावपूर्ण हो रहे है। सुरगाव मे भी ठीक सघटन जम रहा है। चि० कमल, सावित्री कलकत्ते पहुच गये होंगे। सभव है, इधर जल्दी ही आ जावे। तुम्हारा पू० मा को लेकर यहा किस तारीख तक पहुचने का विचार है? मेरा ठीक चल रहा है। मन को ठीक शाति व उत्साह मिल रहा है। परमात्मा ने किया तो अब भविष्य उज्ज्वल दिखाई देने लग गया है। लड़ाई के कारण कलकत्ते वगैरा की ओर घबराहट बढ़ती जा रही है।

पू० मा को प्रणाम, चि० गुलाबबाई, डेडराजजी, हरगोविंद को आशीर्वाद।

जमनालाल का वदेमातरम्

२९ दिसंबर, १९३८ जयपुर-राज्य में प्रवेश-निषेध।

१ फरवरी, १९३९ जयपुर-सरकार के हुक्म की अवज्ञा।

१२ फरवरी, १९३९ जयपुर-सत्याग्रह मे गिरफ्तार।

९ अगस्त, १९३९ जयपुर से रिहाई।

३१ दिसंबर, १९४० वर्धा में गिरफ्तार।

३ जून, १९४१ नागपुर-जेल से रिहाई।

१९४१ मां आनन्दमयी मे जगन्माता का साक्षात्कार।

२१ सितवर, १९४१ सेवाग्राम में बापूजी की सलाह से गो-सेवा के कार्य का निश्चय।

२२ सितवर, १९४१ गो-सेवा-संघ का कार्य शुरू किया।

३० सितबर, १९४१ बापूजी के हाथों गो-सेवा-सघ का उद्घाटन; गोपुरी की स्थापना।

७ नववंर, १९४१ गोपुरी की कच्ची झोपड़ी में रहना शुरू किया।

१ फरवरी, १९४२ वर्धा मे गो-सेवा-सम्मेलन; गो-सेवा-संघ के सभापति

११ फरवरी, १९४२ वर्धा में देहावसान।

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट से प्रकाशित और प्रचारित पुस्तकें

१. बापू के पत्र : संपादक—काकासाहब कालेलकर १ २५
'पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद' का संक्षिप्त संस्करण (अजिल्द)
(प्रस्तावना—डा० राजेन्द्रप्रसाद)

२. स्मरणांजली—स्व० श्री जमनालाल बजाज के संस्मरण १ ५०
तथा उनके स्वर्गवास पर दी गई श्रद्धांजलियां। (अजिल्द)
संपादक-मण्डल : काका कालेलकर, हरिभाऊ उपाध्याय,
शिवाजी भावे, श्रीमन्नारायण, मार्तण्ड उपाध्याय
(प्रस्तावना—बनारसीदास चतुर्वेदी)

३. पत्र-व्यवहार (पहला भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३ ००
जमनालालजी का राजनैतिक नेताओं से पत्र-व्यवहार (सजिल्द)
(प्रस्तावना—च० राजगोपालाचार्य)

४. पत्र-व्यवहार-(दूसरा भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३ ००
जमनालालजी का देसी रियासतों के कार्यकर्ताओं से पत्र-व्यवहार, (सजिल्द)
(प्रस्तावना—पट्टाभि सीतारामैया)

५. पत्र-व्यवहार (तीसरा भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३ ००
जमनालालजी का रचनात्मक कार्यकर्ताओं से पत्र-व्यवहार, (सजिल्द)
(प्रस्तावना—जयप्रकाश नारायण)

६. विनोबा के पत्र : संपादक—रामकृष्ण बजाज ६ ००
बजाज-परिवार के नाम लिखे विनोबाजी के पत्र, (छाप-द)
जमनालालजी की डायरी में से विनोबा-संबंधी अंश और बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा लिखे विनोबाजी के संस्मरण,
(प्रस्तावना—शिवाजी भावे)

७. पत्र-व्यवहार (चौथा भाग) संपादक—रामकृष्ण बजाज ३ ००
(जमनालालजी का अपनी पत्नी जानकीदेवी बजाज के साथ) (सजिल्द)
(पृष्ठभूमि—जानकीदेवी बजाज)

८. बापू-स्मरण : संपादक—रामकृष्ण बजाज (छप रहा) जमनालालजी
की डायरी में से बापू-सम्बन्धी अंश और बजाज-परिवार के सदस्यों द्वारा

लिखे बापूजी के संस्मरण। (इसे एक प्रकार से 'बापू के पत्र' का दूसरा भाग समझना चाहिए।)

जमनालालजी-सम्बन्धी अन्य पुस्तकें

१. पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद : संपादक—काका कालेलकर जमनालालजी व गाधीजी का पत्र-व्यवहार : जमनालालजी की डायरी तथा पत्रों से गाधीजी-सम्बन्धी अंश तथा जमनालालजी-सम्बन्धी महात्माजी के सपर्क की अन्य सामग्री।
(प्रस्तावना—जवाहरलाल नेहरू)
जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-प्रकाशन। (अप्राप्य)

२. पांचमा पुत्रने बापूना आशीर्वाद (गुजराती-संस्करण) ३.००
संपादक—काका कालेलकर; प्रस्तावना—जवाहरलाल नेहरू
(नवजीवन-ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित)

३. To a Gandhian Capitalist
Editor : Kakasahib Kalelkar
Foreword : Jawaharlal Nehru
'बापू के पत्र' का अग्रेजी सस्करण · जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट-प्रकाशन

४. श्रेयार्थी जमनालालजी—लेखक हरिभाऊ उपाध्याय (प्रेस में)
श्री जमनालालजी बजाज की विस्तृत जीवनी
प्रस्तावना—डा० राजेन्द्रप्रसाद
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

५. श्रेयार्थी जमनालालजी—(सक्षिप्त सस्करण) (अप्राप्य)
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

६. जमनालालजी—घनश्यामदास बिड़ला (प्रेस में)
(जमनालालजी का चरित्र-चित्रण · सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन)

७. जमनालाल बजाज—लेखक स्व० रामनरेश त्रिपाठी (अप्राप्य)
(जमनालालजी की जीवनी . हिन्दी मन्दिर, इलाहाबाद का प्रकाशन)

८. जीवन-जौहरी—रिषभदास राका (अप्राप्य)
(जमनालाल के जीवन-प्रसग : भारत जैन महामंडल, वर्धा का प्रकाशन)

१०. कृतार्थ जीवन—लेखक दा० न० शिखरे २.००
जमनालालजी का मराठी जीवन-चरित
(जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा का प्रकाशन)

११. मेरी जीवन-यात्रा—जानकीदेवी बजाज २ ००
जानकीदेवी बजाज की आत्मकथा
(सस्ता साहित्य मण्डल-प्रकाशन) प्रस्तावना—विनोबा

१२ माझी जीवन-यात्रा—अनुवादक वा० भ० बोरकर ३ ००
जानकीदेवी बजाज की जीवन-यात्रा का मराठी-अनुवाद,
(पापुलर बुक डिपो, बंबई का प्रकाशन)

जमनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट के आगामी प्रकाशन

पत्र-व्यवहार (पांचवा भाग)
(जमनालालजी का अपने परिवार के सदस्यों से)

पत्र-व्यवहार (छठा भाग)
(जमनालालजी का देशी रियासतो के अधिकारियो से)

पत्र-व्यवहार (सातवा भाग)
(जमनालालजी का सामाजिक कार्यकर्ताओ व व्यापारियो से)

जमनालालजी के पत्र
जमनालालजी का विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों के साथ
का चुना हुआ पत्र-व्यवहार ।

जमनालाल की डायरियां
जमनालालजी की डायरिया राजनैतिक व ऐतिहासिक महत्व की हैं। तीन या चार भागों में इन डायरियों को प्रकाशित करने की योजना है।

: ८ :

श्री हरिः

बंबई, १८-९-१४

सौभाग्यवती पवित्र प्रिये,

तुम्हारा पत्र पढ़कर हार्दिक आनंद हुआ। अनार, मोसंबी आदि भेजे थी, मिले होंगे। रूई का बाजार दिन-ब-दिन ठीक होता जाता है। गाठें रोज थोडी-थोडी बेचते हैं। अब खाली एक काम साझे का रहा है, सो ५-७ रोज के अंदर पूरा हो जायगा। कोशिश जारी है। तुम प्रसन्नता के साथ रहना। बिल्कुल फिक्र मत करना। मैं यहां बहुत आनंद से हूं। मानसिक चिंता अब बिल्कुल नहीं रही। पत्र फिर फुरसत से लिखूंगा। तुमने लिखा कि कमला याद करती है—सो उसकी याद हमें भी बहुत आती है। डालूराम की तबीयत ठीक नहीं है, सो उसे दवा लेने का कहना। उसके शरीर की फिक्र रखना। कोई चीज चाहिए तो मंगा लेना।

मि० अश्विन कृष्ण १३, शुक्रवार। पत्र शीघ्रता में लिखा है, सो जानना।

तुम्हारा हितेच्छु
जमनालाल

: ९ :

वर्धा, २०-९-१४

श्रीयुत प्राणनाथ, जीवनप्राण,

जोग लिखी आपकी दासी का प्रणाम बचना। पत्र आपका आया, पढ़कर खुशी हुई। मगनबाई का पत्र भेजा, लिखा सो ठीक और दाड़िम-मोसम्बी के साथ मुरब्बे के डिब्बे तीन तथा सपट लोशन भेजा, सो मिला।

बाजार का भाव तेज लिखा, सो यहां भी वैसा ही सुना है। हमारी इच्छा थी कि एक दफा तो आपको यहां बुला लेवें, पीछे जरूरत पड़ने पर वापस जा सकते हैं या किसीको भेज सकते हैं, किन्तु बाजार का रुख देखते हुए आपका अभी इधर आना सम्भव नहीं। लिखकर भी क्या फायदा।

एक कार्य रहा लिखा, सो वह भी ईश्वर की कृपा से हो जावेगा। दो-चार रोज ज्यादा-कम की कोई फिकर नहीं; यद्यपि कभी-कभी फिकर हो ही

जाती हूं। बाकी आपके हाथ का एक कार्ड दुकान में रोज आ जाया करे तो मेरे लिए काफी है। मुझे अलग लिखने की विशेष जरूरत नहीं, क्योंकि आपको तो और भी बहुत काम है। मुझे तो आपके कुशल समाचार चाहिए, सो दुकान में पूछ लिया करूंगी।

कमला बहुत राजी है। डालूराम को मैंने पूछा कि क्या लिखू तेरे बारे में, तो कहता है लिख दो—दिन-दिन बीमारी बढ़ती है। कहता है मंदाग्नि हो गई है, और कुछ खाता भी नहीं है। आप पांच-सात रोज में आ जावेंगे, ऐसा डालू कहता है। सच्ची लिख देना। डालू मुझे कुछ कहता नहीं है। आप कह गये इस वास्ते कभी बोलता है तो मैं भी खुशामद कर लेती हूं।

जवाब देने की फुर्सत न मिले तो कोई जरूरत नहीं।

आपकी शुभचिंतक पत्नी

: १० :

बंबई, २३-९-१४

श्री सौभाग्यवती निर्मल प्रिये,

अनेक उत्तम आशीर्वाद। ता० २० का लिखा तुम्हारा पत्र कल मिला।

यहां बाजार का भाव ठीक है। तुम्हारा आना बनता दिखता नहीं, इसलिए लिखने से क्या फायदा? जो तुमने अपनी इच्छा लिखी, सो मेरी भी इच्छा यहां ज्यादा रहने की बिल्कुल नहीं है। तुम्हारी व कमला की आजकल बहुत याद आती है। कल शाम को चिमनीरामजी (मुनीम) को बुलाने का तार दिया था। वह यहां आ जायगा, तब ४-५ रोज रहकर, उसका सब कंपनीवालों और व्यापारियों के साथ परिचय करा दूंगा। फिर मैं वर्धा आ जाऊंगा। बनेगा वहांतक दशहरे के दिन मैं वर्धा पहुंच जाऊंगा, नहीं तो फिर ३-४ दिन और लगेंगे। आनंद के साथ रहना। डालूराम की तबीयत की पूरी संभाल रखना। दवा की व्यवस्था रखना। कमला को प्यार करना। पत्र दुकान में बराबर जाता ही है। यहां अब वर्षा खुल गई है। तुमने पहले पत्र में लिखा था कि '*आप-सरीखे सरल व शुद्ध अंतःकरण के पुरुष दुनिया में थोड़े ही होंगे।*' तुम्हारा यह लिखना, तुम्हारा शुद्ध व निश्चल प्रेम मेरे पर हमेशा बना रहता है, उसीके कारण है। बाकी तुम जितना समझती हो उतना साफ निर्मल हृदय मेरा हाल में बिल्कुल नहीं है। श्री परमात्मा की

कृपा हुई व तुम्हारे सरीखी सती पत्नी का सहयोग रहा तो एक दिन अवश्य ही तुम समझती हो वैसा या मेरी इच्छा है वैसा निर्मल मेरा मन हो जायगा। मेरी तबीयत बहुत ठीक है। आज यह पत्र तुम्हें शांति के साथ सुबह ५॥ बजे लिखा है। इसका जवाब पत्र पहुंचे उसी रोज दे देना। कोई चीज वगैरा चाहिए, तो लिख देना। मिती आश्विन शुक्ल ४ सं० १९७१ बुधवार।

तुम्हारा हार्दिक प्रेमी
जमनालाल बजाज

वर्धा—२५-९-१४

श्रीयुत प्राणनाथ, जीवनप्राण

पत्र आया। चिमनीरामजी आज रवाना होकर कल आपके पास पहुंच जावेंगे। आप इनको सब काम अच्छी तरह समझा देंगे। फिर पीछे आना हो जावे तब तो बहुत ही अच्छी बात है, नहीं तो कोई फिकर नहीं। दशहरे बाद ५-४ दिन लगें तो लगें, पर काम सब निपटाकर आना। फिर बारबार जाना न पड़े। अभी आपका मन इधर ज्यादा लग रहा है, सो हमारा भी प्रेम तो बहुत है। जब आप दूर रहते हो या कुछ तकलीफ हो तब तो हमारे मन में भी प्रेम बहुत उमड़ता है। पर जब आ जाते हो तब वैसा-का-वैसा खाली। आपके हाथ का पत्र आने से मन को बहुत शांति मिलती है।

विशेष आपने मेरे समाचारों के बदले में लिखा कि तुम्हारा प्रेम हमेशा मेरे ऊपर ज्यादा रहता है। आपका लिखना ठीक है। पर जैसा आप मानते हो वैसा शायद मेरे मन में न भी हो। फिर भी जैसा आप मानते हो वैसा ही प्रेम मन में हमेशा बना रहे तो फिर मुझे किसी बात की परवा नहीं। पर चित्त तो हमेशा समान नहीं रहता। और हम स्त्रियों को तो हमारा सुख ही ज्यादा प्यारा होता है। निःस्वार्थ प्रेम करने लायक हम कहां है? लेकिन इस तरह आपके साथ रहने से कभी हो जावेगा।

हम कमला वगैरा सब बहुत प्रसन्न हैं। आप आनंदपूर्वक रहना। मेरे पत्र के वशीभूत होकर चित्त को अशांत मत करना। काम होवे सो शांति से करके आ जाना। पत्र जल्दी में लिखा है।

कमला की मां

: १२ :

कलकत्ता,
पोष ब० ९, सं० १९७४
(९-१-१७)

श्रीमती प्रिय देवी,

सप्रेम आशीर्वाद । विवाह, कांग्रेस, सभा, मिलने आदि की गड़बड़ में पत्र नहीं दिया गया । स्वास्थ्य, बहुत ठीक है । चि० गंगाबिसन की बहू के कन्या हुई, यह दूकान के पत्र से मालूम हो गया था। कन्या व बहू खुश है, पढ़कर आनंद हुआ ।

यहां मारवाडी जाति में विद्या-प्रचार हो, उसका प्रयत्न हो रहा है। श्री परमात्मा ने थोड़ी सफलता भी प्रदान की है। आशा है और भी सफलता मिलेगी । श्री गांधीजी महाराज, उनकी धर्मपत्नी व पुत्र यहां आये थे। अपनी तरफ से ही सब प्रबंध किया गया था। दस रोज तक इनकी सेवा करने का अच्छा मौका मिल गया ।

अब मेरा विचार रंगून की तरफ जाने का है । टिकट अभी तक नहीं मिला है, कारण कि स्टीमर थोड़े जाते हैं और जानेवाले बहुत हैं। अगर ता० ११ जनवरी तक टिकट मिल जायगा तो १५-२० रोज उधर घूम आऊंगा। बहुत दिनों से इच्छा है। अगर टिकट नहीं मिला तो ४-५ रोज में वर्धा आ जाऊंगा ।

तुम्हारे कारण घर की, वर्धा की तरफ की, कोई फिक्र नहीं है। कमला, बाबू, मदालसा को बहुत राजी रखना । कमला को पढाने के लिए मास्टर बराबर आता होगा। पढाने का बराबर ख्याल रखना।

और तो इन दिनों सब ही आनंद रहा, केवल श्री दामोदरदासजी राठी के स्वर्गवास होने के समाचार सुनकर चित्त थोड़ा व्याकुल हुआ था। परन्तु अच्युत स्वामीजी महाराज के सत्संग का सौभाग्य मुझे कई दिनों से मिलता आया है, इसलिए जीवन-मरण का प्रपंच थोड़ा-बहुत समझ सका हूं । संसार स्वप्नवत् है, इसमें सुख है नहीं जो भी है सब कल्पित है, इस प्रकार विचार करने से शांति मिलती है। सुख, दुख और यह संसार सब मिथ्या है । इसलिए शरीर से जो कुछ सेवा बन सके, वह निःस्वार्थ भाव से करने का हमेशा प्रयत्न रखना ही मनुष्य-जन्म का मुख्य कर्तव्य है।

आशा है, तुम भी यदि यही ध्येय सामने रखकर कार्य करोगी तो तुम्हें भी अवश्य शांति मिलेगी ।

सरकार से 'राय बहादुर' की पदवी मिलने के कारण कई जगह से मित्रों के बधाई के तार-पत्र आदि आते हैं। यह सब तो आडंबर है। तथापि श्री परमात्मा ने किया तो इस तरह के आडबर का भी सेवा करने में उपयोग हो सकेगा। ईश्वर से यही प्रार्थना हमेशा करते रहना आवश्यक है कि वह सद्‌बुद्धि प्रदान करें, नि स्वार्थ भाव से सेवा करने के लिए बल प्रदान करें।

पत्रोत्तर देने की आवश्यकता नही। कोई चीज चाहिए तो लिख देना।

तुम्हारा,
जमनालाल बजाज

: १३

श्री लक्ष्मीनारायणजी

(जवाब दिया ता. ९-१०-१९ को)

श्रीयुत प्राणनाथ स्वामीजी,

कागद आपका आया। आपने लिखा कि पैर में मोटर की चोट लगी सो चिंता मत करना। चिंता की कोई बात नहीं। सकट मनुष्य पर आता ही रहता है। आपके शरीर का सोच परमात्मा को है। वह सब ठीक करेगा। वैसे चोट घुटने की है। इससे जरा विचार आता है कि शौच आदि जाने में बहुत तकलीफ होती होगी। और आपका स्वभाव भी संकोची है। पर जैसे और कामों में आप हिम्मत करते हो, तो इसमें भी हिम्मत करोगे। ध्यान यही रखियें कि घाव में कोई कसर न रह जाय, कारण चलना-फिरना सब पैर से होता है। हाथ से पैर की ज्यादा जरूरत है। पलग पर शौच आदि का इंतजाम तो सब होगा ही। जैसा मेरे जी में आया, मैंने लिख दिया। पलग पर शौच आदि न हो तो नीचे भी न बैठना। गोड़े पर जोर पड़ने से घाव पर जोर पड़ेगा। छेद की हुई कुर्सी पर बैठना।

मैंने गंगाबिसनजी को साथ लेकर आने का विचार किया था, पर आपका डर और लोगों की शर्म के मारे सोचा कि तार मगाकर जाना ठीक

रहेगा। मैंने अपने नाम का तार दिलाने के लिए कहा तो दूकानवालों ने अपने चार नाम डाले। पुरुषों को अपनी अकल से काम करना चाहिए। बाकी मुझे मालूम होते ही मैंने मगनजी को तार रोकने भेजा कि इस तरह से उनको चिंता होगी। सच है, पराधीन कुछ नही कर सकता। आप क्षमा करना। आप मुझे बुलाने का तार करो। मेरे आने में कोई तकलीफ नही है। छोटी लड़की को लेकर आऊंगी। नई नौकरानी बहुत अच्छी है। गंगा और दादा, दादी तीनो बच्चो के पास रहेंगे। यहां कोई तकलीफ नही होगी। ये तो तीनों प्रेमवाले है।

आपके हाथ के समाचार से मालूम होता है कि पैर मे ज्यादा तकलीफ नही। कारण. आप झूठ नही लिखते। पर ऐसे वक्त मे घरवाला नजदीक होना चाहिए। आखिर यह शरीर क्या काम आवेगा? हमेशा तो हराम की ही रोटी खाता है।

आपको तो मेरे स्वभाव के बारे मे मालूम ही है कि मुझे यह विश्वास रहता है कि मेरे नजदीक रहने से आपको कुछ ज्यादा आराम मिलेगा। खैर, यहा आने की जल्दी मत करना। छोटा गाव होता तो मैं ही नही अटकती। पर इतना तो करना कि अगर पलग से बिल्कुल भी न उठने की बात हो तो मुझे जरूर बुला लेना।

श्री परमात्मा से यही विनती है कि पैर मे अथवा शरीर मे कोई खोट या खामी न रह जाय। दिन ज्यादा लगें तो परवाह नही। बड़े-बड़े सकट मनुष्य ही सहता है। आप किसी तरह की चिंता मत करना। हाल-हकीकत बराबर लिखना।

यहा सब राजी-खुशी है। गाव में पहले तो नागपुर से आये हुए लोगों के कारण यहा भी प्लेग के प्रकोप की शिकायत थी। पर दो-चार दिन से बिल्कुल शांति है। कुछ गडबड़ होगी तो बोडिंग के आधे बगले में चले जायंगे। बगीचे बिल्कुल नही जायंगे। वही बच्चे कच्चे फल खालें। परमात्मा सब ठीक करेगा।

कमला की मा

: १४ :

दिल्ली जाते समय (रेल में),
पौष सुदी ४, सं० १९७७
(११-२-२१)

प्रिय देवो,

सप्रेम आशीर्वाद । कलकत्ते में कांग्रेस-कमेटी कार्य का होने के बाद थोड़ा महासभा का कार्य करके सोमवती अमावस्या, ता० ७ को श्री नागोरीजी, चौधरीजी, महावीरप्रसादजी पोद्दार के साथ काशी पहुंचे । वहां श्री शिवप्रसादजी गुप्त के गंगातट के 'सेवा उपवन' नाम की सुन्दर व मनोहर कोठी में उतरे । वहीं उनके साथ गंगास्नान करके फलाहार तथा भोजन किया ।

शाम के वक्त मित्रों को सलाह हुई कि कुछ छोड़ना चाहिए । कारण, भारी पर्व का दिन था व काशी-धाम था । इसलिए नीचे मुजिब छोड़ना निश्चय हुआ :—

श्री महावीरप्रसादजी पोद्दार ने ९ मास तक पूर्ण ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा की व बन सके वहांतक कच्चा अन्न व फल खाकर ही रहने का निश्चय किया । वह तीन मास से कच्चे सूखे गेहूं, चने व फल ही खाते हैं ।

श्री गुलाबचंदजी नागोरी ने नौ मास तक ब्रह्मचर्य पालने की प्रतिज्ञा की ।

श्री दयालदास चौधरी ने ९ मास तक शक्कर खाना छोड़ दिया ।

श्री रामनरेशजी त्रिपाठी ने ९ मास तक ब्रह्मचर्य पालन व पान-सुपारी नहीं खाने का निश्चय किया ।

तुम्हारे उत्साह और सलाह से मेरा ब्रह्मचर्य पालने का विचार तो पहले ही हो चुका था । तथापि नौ मास तक ब्रह्मचर्य पालन करने की प्रतिज्ञा का निश्चय मैंने किया है । हाल में एक मास तक तो दूध तथा दूध से बनी हुई चीजें छोड़ दी, जैसे कि दही, छाछ, घी तथा पूरी, मिठाई, घी की बनी हुई सब चीजें । बाद में यह निश्चय और आगे बढ़ाने का विचार है । बकरी के दूध तथा उससे बनी हुई चीजों की छूट रख ली है । अब तो चने, धानी, फल, सूखी रोटी तथा तेल के साग के साथ काम चल रहा है । अभी तक

तो तकलीफ नही मालूम होती है। बिना घी की रोटी व साग अच्छा लगता है।

कल सुबह १० बजे महात्माजी के साथ काशी से रवाना होकर कल शाम को ही अयोध्या आये। काशी में चार रोज तक प्रातःकाल श्री गगास्नान का खूब आनद रहा तथा पू० गाधीजी, मालवीयजी और अन्य विद्वानों व महात्माओं के दर्शन तथा वार्तालाप का लाभ मिला। अयोध्या में पूज्य महात्माजी का व्याख्यान बहुत ही उत्तम हुआ। वहा एक राजनैतिक काम करनेवाले नेता श्री केदारनाथजी को सरकार ने हाल ही मे गिरफ्तार कर लिया था। उनकी धर्मपत्नी का व्याख्यान भी हुआ। वह बहुत ही बहादुरी तथा शाति से काम करनेवाली मालूम होती है। अपने पति पर उसकी गहरी भक्ति, प्रेम व श्रद्धा है। जरा भी हताश न होकर वह पति का कार्य कर रही है। वह जेल मे अपने पति से मिलने गई थी। उसने अपने पति से पूछा कि क्या वह उन्हे छुडाने का प्रयत्न करे? उसपर उस देवी के पति ने कहा कि अगर मुझे फासी का हुक्म भी हो जाय तो तुम छुडाने का प्रयत्न नही करना। देश-सेवा के लिए आनद से मरना ही मनुष्यत्व है। तुम आनंद व शाति से चर्खे का तथा सूत कातने का प्रचार करो, इस आशय की बातें उस देवी ने अपने मुह से सभा में कही। अगर यह देवी इतना धीरज व शाति नही रखती तो शायद उसके पति को माननेवाली जनता उसे छुडाने के लिए कोशिश अथवा धूमधाम करती। नतीजा यह होता कि महात्माजी के सिद्धान्त के मुताबिक स्वराज्य के कार्य मे बाधा खड़ी हो जाती।

इस तरह की एक बात और लिखना रह गई। श्री बाबा रामचद्र नाम से एक नेता इसी प्रात (यू. पी.) मे प्रसिद्ध थे, खासकर किसानो में। उन्हें भी सरकार ने काशी मे गाधीजी का व्याख्यान होते समय गिरफ्तार कर लिया। वहा बहुत भारी भीड़ थी। पर सभा में पूर्ण शाति रही। गिरफ्तारी के समय मैं भी वही था। लोगो को शान्त रखने का प्रयत्न किया गया तथा जमा हुए लोगों ने खूब ही शाति तथा आनद प्रकट किया।

महात्माजी के कारण जमाना एकदम बदल गया। मुझे इस दौरे में

बहुत आनंद तथा लाभ हो रहा है। परमात्मा ने किया तो हमारे जीवन की उन्नति अवश्य होगी। तुम्हारी कई बार याद आया करती है। मुझे बहुत आशा है कि तुम किसी तरह से भी पीछे नही रहोगी। धैर्य, शांति व सत्य के साथ कार्य करती रहोगी। मेरी समझ से कम-से-कम नौ मास तक कोई भी गहना-दागीना नही पहनने का तुम व्रत ले लो। नथ छोडकर पाव की कड़ी भी निकाल देनी चाहिए व स्वदेशी कपडे ही उपयोग में लाने चाहिए। कपड़े के बारे में तो तुमने निश्चय-सा कर ही लिया है।

सत्याग्रह-आश्रम तथा मेहमानो की पूरी निगाह रखना, चर्खे व सूत का खूब प्रचार करना।

दिल्ली से भिवानी, रोहतक, मथुरा आदि होकर वर्धा अंदाज ८-१० रोज तक आना होता दिखता है। पूज्य बापूजी का साथ छोडते जी दुःख पाता है व उनका भी हृदय से बहुत ही ज्यादा प्रेम है। इसलिए उनकी आज्ञा मुताबिक ही आना हो सकेगा।

अबकी बार बकरी का घी तुमने जो दिया उसमें बा (माताजी) कहती थीं कि थोड़ी गंध आने लगी थी। आगे और भी शुद्ध घी जमा करने पर निगाह रखना।

बाई व बाबू को प्यार करना।

(यह पत्र अपूर्ण मिला है)

: १५ :

बंबई,
फागुन ब० ६, स० १९७७
(२८-२-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम आशीर्वाद। पत्र तुम्हारा मिला। पढ़कर बहुत आनंद हुआ। तुमसे ऐसी ही आशा थी। परमात्मा सब ठीक करेगा। पूज्य गोरीशंकरजी की पूरी सम्भाल व व्यवस्था रखना, जिससे उन्हें पूर्ण आराम मिले। मैने भी उन्हें एक दिलासाभरा पत्र लिख दिया है। आशा है, उससे उन्हें शांति मिलेगी।

आश्रम का कार्य बराबर संभाला जाता है, सो ठीक है। चर्खे का खूब जोर से प्रचार होना चाहिए। वर्धा में खादी चारों तरफ फैल जानी चाहिए। अपना घर तो पूरी तरह से पवित्र और शुद्ध रहना चाहिए। इससे ज्यादा क्या लिखूं ?

कल इतवार की रात को भाई सीताराम पोद्दार का ९॥ बजे के करीब स्वर्गवास हो गया। दो दिन तक उनकी थोड़ी-बहुत जो सेवा बन सकी, सो की। फिक्र तो हुई, परन्तु विचार करके धीरज धारण किया। उनके पिता पूज्य जीवराजजी ने खूब हिम्मत रखी है।

अबकी बार भ्रमण में बहुत लाभ हुआ व शांति विशेष मिली। श्री अच्युत स्वामीजी तथा एक और महाराज का सत्संग बहुत उत्तम रहा।

बच्चों की पढ़ाई पर पूरी निगाह रखना। मेरी ओर से उन्हें प्यार करना।

तुम्हारा,
जमनालाल बजाज

पुनश्च—खासकर अपने कुटुम्ब में तो किसीको भी विदेशी कपड़ा नहीं पहनना चाहिए।

: १६ :

बंबई,
फागुन सुदी १२, सं० १९७७
(६-३-२१)

प्रिय देवी,

सविनय प्रेम। पत्र तुम्हारा पहले आया था, उसका जवाब दिया ही था। पूज्य गोपीकिशनजी का स्वास्थ्य बराबर नहीं रहता। मेरी समझ से तो इन्हें शांत व ठंडी जगह रखने से ही शांति मिल सकेगी। स्वास्थ्य भी बिना औषधि व उपचार के ठीक हो सकेगा। तुम मुनासिब समझो तो इन्हें यहां भेज देना।

श्रीयुत गोविंदराव हिरवे आज की गाड़ी से वर्धा आते हैं। यह बहुत ही उत्तम विचारवाले और विद्वान व्यक्ति हैं। इन्हें बालकों की शिक्षा का

भार पूरी तरह से दिया है । बाई कमला, बाबू व प्रहलाद को इनकी इच्छा-अनुसार पढाने देना व बालको का रहन-सहन भी इनकी इच्छा के मुताबिक ही रहे, ऐसी व्यवस्था कर देना । कम-से-कम एक घंटा, और हो सके तो दो घटे, रोज नियम से तुम इनके पास हिन्दी या संस्कृत और राजनैतिक बातें पढना और समझना, जिससे तुम्हे भी लाभ होगा । इस तरह का प्रबन्ध अवश्य कर लेना । अगर इनमें कोई फेरफार करना हो तो मेरे आने पर तुम्हारी सलाह से कर लेगे । बाई कमला की पढ़ाई की बहुत चिन्ता थी, वह इनके रहने से अब कम हो जायगी । इनका पूरी तरह से उपयोग लेना तुम्हारे हाथ ह ।

इस अमावस्या को दूध-घृत न लेने के व्रत को एक मास हो जायगा । अब आगे यह व्रत न बढाते हुए सात चीजो से ज्यादा एक बार में नही लेने का व्रत लेने का विचार है । दूध, दही, घी आदि बिलकुल छोड़ने से मुसाफिरी में स्वयं को तथा जिनके यहा जाय उनको थोडा कष्ट होता है । इसलिए उसे आगे नही बढाने का निश्चय है । ब्रह्मचर्य व्रत पालने के लिए मन मे काफी श्रद्धा और उत्साह है । अब ९ मास तक तो ब्रह्मचर्यपालन व्रत के अनुसार धर्म ही हो गया है, इसलिए पाला ही जायगा । और आगे भी उसे पालने में विशेष कष्ट नही होगा, ऐसा मालूम होता है । दिन-भर देश-कार्य तथा अच्छी सगति में लगे रहने से मनोविकार शात रहते हैं, ऐसा अनुभव और विश्वास हो रहा है ।

इस बार की मुसाफिरी पूज्य बापूजी के साथ हुई, उससे बहुत फायदा हुआ है । बहुत करके वर्धा शनिवार को पहुचूगा ।

तुम्हारा,
जमनालाल

: १७ :

वर्धा,
फाल्गुन वदी १३
(७-८ मार्च २१)

श्रीयुत प्राणनाथ,

प्रणाम । पत्र आपके दो आये । नागपुरवाले गोपीकिशनजी बजाज को

बुलाने का लिखा सो ठीक। वह कच्चे मन के हैं। बीच में आपके पकड़े जाने की खबर सुनकर डर गये। रात को उन्हे नींद नही आती है। उन्हें लगता है कि आप अगर पकड़े गये तो हम सबका क्या होगा ? इसलिए उन्हे दिन-रात सपने आते हैं और सपनों की बातो को सही मानकर वह घबरा जाते हैं। मैंने बहुत समझाया, परन्तु उनके गले नही उतरता। इनकी दवा तो यही है कि आपसे मुलाकात होनी चाहिए और डर दूर होना चाहिए। शायद कुछ दिन आपके साथ रहने और मजबूती की बातें सुनने से उनके मन में जो भ्रम पैदा हो गया है, वह निकल जाय। फिलहाल तो मैंने इन्हें अच्छी तरह सम्भाल लिया है। आपके यहां आने में अड़चन मुझे यह दीखती है कि सरकार की दमन-नीति शुरू हो गई है। इसलिए यह संभव नही लगता है कि आप चुप बैठेंगे और 'हुकुम' तो आता ही दीखता है। यों चुप बैठने का समय है भी नही। मेरी समझ में तारीफ तो इसीमे है कि काम करते हुए भी गिरफ्तार होने से बच जावे। वैसे इस बारे में अधिक विचार की जरूरत नही है। हमे तो कर्त्तव्य करते जाना है। हां, यदि आपको विशेष काम न हो, तो एक बार नागपुरवालों से मिल लें। उनसे विचार कर लें, फिर जाय।

हिरवे मास्टरजी के बारे में आपने लिखा, सो वैसा ही करेंगे जैसा आपने लिखा है। आप किसी प्रकार की चिन्ता मत करियेगा। बालक प्रसन्न हैं।

आपके वास्ते बकरी के घी के और चने के पारे भेजे हैं, सो काम में लीजियेगा। जानती हू कि आप (बापूजी की) नकल करने को तैयार नहीं हैं, परन्तु ये तो आपको खाने ही होगे।

आपकी हितेच्छु,
जानकी

: १८ :

वर्धा, १३-५-२१

श्रीयुत प्राणनाथ,

प्रणाम। ता० ५ का पत्र मिला। ता० ५-६ को आपको भी मेरा पत्र मिला होगा। बाद में फुरसत नही मिली होगी। मेरे पत्र से आपको निश्चित

दुःख हुआ होगा। परस्पर बातचीत का मौका कम होने के कारण मन के भाव लिखने से मन साफ हो जाता है। इसलिए कुछ लिखा था। बाकी आपके लिखे अनुसार आनंद में रहती हूं। घर में सतोगुण से सतयुग का वास हो गया है। इससे ज्यादा हमें और चाहिए भी क्या? परमात्मा करे आपकी इच्छा पूर्ण हो। आप चाहते है कि आपकी इच्छानुसार मेरा स्वभाव बने, मुझे आशा है कि आपके साथ रहने से वह अवश्य हो जायगा। मैं देखती हू दिन-दिन फर्क तो पडता ही जाता है।

आप अपने शरीर को सभालते रहिये। शरीर के पीछे ही तो सारी बात है। बीच-बीच में आराम लेने से काम ज्यादा होता है। बाकी शुद्ध मन रहने से तो ईश्वर आप ही शक्ति देता है। मुसाफिरी की बात तो आपके हाथ में है नही। उमा बाई तथा सब बच्चे राजी है। देश की तरफ जाने का यदि काम पडे और उचित समझें तो हमें भी ले चलें।

पहली तारीख तक स्वदेशी का पूर्ण प्रचार हो जाय। दिन थोडे हैं, परमात्मा कैसे लाज रखेगा? ईश्वर को इस वक्त तो हिन्दुस्तान की लाज रखनी ही चाहिए। परीक्षा बडी है, हमारी शक्ति कम है।

मारवाडी और व्यापारी भाइयों को यह सोचना चाहिए कि इस आपत-काल में वे अपना धन लगावें। अगर इस समय वे अपने धन को काम में न लायेंगे तो क्या मरने के पीछे लावेंगे? यह कमाई इस देश के लोगों के ही तो काम में आयेगी। जीतेजी तो पेट भरता ही है, होना होगा सो होगा ही। ऐसा अच्छा अवसर फिर हाथ में न आयेगा। बापू को बडी तकलीफ है। ईश्वर रक्षा करेगा। यहां खादी का प्रचार ज्यादा तो कुछ होता नहीं। गाववालों पर असर नहीं होता। दौरा करना लियाकत के बिना उचित नहीं। होता है उतना करती हू। आप किसी प्रकार की चिंता न करके आनंद के साथ काम करते रहिये। आनेवालों का हम यथायोग्य ध्यान रखते है, कारण दिन-पर-दिन हमारा अनुभव बढ़ रहा है। विशेष समाचार है नहीं।

आपकी हितेच्छु,
जानकी

: १९ :

बंबई,
असाढ़ सुदी ९, सं० १९७८
(२९-६-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम आशीर्वाद। पत्र लिखने का बहुत दिनों से विचार था, परन्तु स्वराज्य-फंड के कार्य में लगे रहने के कारण नहीं लिख सका।

[illegible]

बच्चो, ऐसे [illegible]

इसी कार्य में [illegible]

सम्भव है, मुझे पूज्य बापूजी के साथ मद्रास, लखनऊ, कलकत्ता की तरफ जाना पड़े। स्वास्थ्य बहुत ठीक है।

बच्चों की पढ़ाई आदि का ध्यान रखना। अगर तुम्हारा बम्बई रहना होता तो तुम स्त्रियों में खूब काम कर सकती। अभी भी स्त्रियों में अच्छा कार्य हो रहा है। खैर, वहांपर ही चर्खा का प्रचार तथा मेंबर बनाने का कार्य करते जाना।

पत्र फिर देने का विचार है। अभी चंदे के लिए बाहर जाना है।

बच्चों में किसीको कम-ज्यादा नहीं समझने की कोशिश करना। प्रह्लाद और बाबू एक समान हो सकें, तथा और बातों में भी इस त्रुटि को कम करने की कोशिश करना।

तुम्हारा,
जमनालाल

: २० :

पटना के नजदीक (रेल में),
१५-८-२१

प्रिय देवी,

वन्देमातरम्। तुम्हे बहुत दिनों से पत्र लिखने का विचार था, पाया। बबई में स्वदेशी का कार्य ठीक चल रहा है। तुम्हारे कपड़ा नमूने के लिए भिजवाया है, सो मिला होगा। अब

हम तुम दोनों विदेशी कपड़ा नहीं पहन सकते, इसका पूरा ध्यान रखना। अपना सब घर-कुटुंब पूरा स्वदेशी वस्त्र पहननेवाला तथा सादगी से जीवन बितानेवाला होना चाहिए। इसका पूरा प्रयत्न करते रहना होगा। श्री मंदिर में तो अब विदेशी कपड़े का ख्याल सपने में भी नहीं रहना चाहिए। अगर रहा तो तुम जिम्मेवार हो। यदि तुमसे हो सके तो विदेशी सजावट, फर्नीचर आदि भी घर से बाहर बगीचे में रखवा दो। सब बच्चों की पढ़ाई का पूरा प्रबंध रखो। श्री विनोबाजी की सलाह से बच्चों की पढ़ाई के लिए योग्य आदमी ढूंढ़ने की व्यवस्था हो रही है। तुम भी आश्रम में बराबर जाती रहना। श्री भावेजी की संगत का लाभ लेना और उनके उपदेश श्रवण करते रहना। भावेजी बहुत विद्वान्, पवित्र तथा चरित्रवान व्यक्ति हैं। इनकी सत्संगति से तुम्हें अवश्य लाभ होगा। आश्रम के बालकों से खूब प्रेम का बर्ताव करना। उनकी बीमारी आदि में पूर्ण सहायता देने तथा सेवा करने का ध्यान रखना। ऐसा करने से तुम्हारी बड़ी उन्नति होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। जहांतक हो सके तुम्हें नियम से आश्रम में जाना चाहिए। अगर वहांपर थोड़ी देर चर्खा भी कातो तो और भी अच्छा।

ये सब बातें तुम्हें इसलिए लिखी हैं कि भविष्य में हमें अपना जीवन बहुत ही सादगी से बिताना है। इसलिए इसका अभ्यास व ज्ञान पूरी तरह से हासिल कर लेना चाहिए। तुम्हारे सादा रहन-सहन तथा प्रेममय उदार व्यवहार से हमारी तो उन्नति होगी ही, परन्तु हजारों स्त्री-पुरुषों पर भी इसका असर पड़ेगा। परमात्मा तुम्हारा स्वभाव प्रेममय कर दे और मुझमें जो कमजोरी है, वह बिलकुल मिटा दे, तो हम दोनों का मनुष्य-जन्म सार्थक हो जाय। मुझे आशा है, तुम्हारे पवित्र तप से इन दोनों बातों में हमें शीघ्र सफलता मिलेगी। ईश्वर से हमेशा प्रार्थना करते रहना होगा और अपनी आत्मा में विश्वास रखना होगा।

मैं कोई दो-ढाई घंटे बाद पूज्य बापूजी के पास पहुंच जाऊंगा। कल पटना में कमेटी का कार्य होगा। बाद में मुझे तो ऐसा दिखता है कि पूज्य बापूजी के साथ कलकत्ता, आसाम, मद्रास आदि स्थानों में जाना होगा। वह तो मुझे पहले ही ले जाना चाहते थे, परन्तु बम्बई के मित्रों ने नहीं जाने दिया।

वापूजी के साथ रहने से मुझे तो बहुत फायदा पहुंचेगा, ऐसा मेरा विश्वास बंध गया है। मेरी इच्छा तो यह है कि तुम और मैं दोनो उनके साथ भ्रमण मे रहा करे, जिससे उनकी सेवा करने का मौका भी मिले तथा हमारा ज्ञान भी बढ़े। ईश्वर की दया से हमारी यह इच्छा भी पूर्ण हो जायगी।

एक बार देश में जाने का बहुत मन होता है। पूज्य बापूजी छुट्टी देंगे तो वहा तुम्हे भी साथ ले जाने का विचार है। अगर कलकत्ते जाना हुआ तो तार से दुकान पर खबर दे दूगा। वहा के पते पर तुम्हारे मन के विचार पूरी तरह लिख भेजना।

घर में आये हुए अतिथि की सेवा तथा प्रबंध बराबर रखना।

अहमदाबाद से 'हिन्दी नवजीवन' ता० १९ को निकलेगा। इसे पूरे ध्यान मे पढा करना।

तुम्हारा,
जमनालाल

· २१ ·

तेजपुर (आसाम),
भादवा वदी ४, सं० १९७८
(२२-८-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। पत्र तुम्हे पटना मे पोस्ट किया था, वह मिला होगा। उसमें सब बात लिखी ही थी। पटना से एक रोज कलकत्ता ठहरते हुए ता० १८ को गोहाटी पहुंचे। श्रावणी पूर्णिमा उसी दिन थी। रास्ते में रेलवे स्टेशन पर स्नान करके पूज्य बापू के हाथ से नई जनेऊ पहनी व उसी रोज शाम को ही राखी बंधवाई। कलकत्ते से हाथ का बना हुआ और कसुम्बे में रंगा हुआ सून का तार साथ ले आया थे। उन्होंने बड़े प्रेम और प्रसन्नता से राखी बांधी। मैंने राखी बांधने की दक्षिणा के लिए पूछा तो उन्होंने विरासत संभालने के लिए कहा। तब मैंने कहा कि आप आशीर्वाद के द्वारा मेरा आत्मिक बल इतना बड़ा दीजिये। यह बात तुम्हारे ध्यान में रहे, इसलिए लिखी है। रक्षा-बंधन का दिन खाली नहीं गया।

मेरी समझ से तो बापू ने इस भाव से राखी अभी तक और किसीको नहीं बांधी होगी ।

जिस तरह हम लोगों की जवाबदारी बढ़ती जाती है उसी तरह परमात्मा हमारी ताकत भी बढ़ा देगा, ऐसा मुझे विश्वास है । अपनी दिनचर्या हम जितनी सादगी और सत्संगति में बितायेंगे साधना में उतनी ही सफलता हमें प्राप्त होगी । मुझे तुमको यही लिखना है कि गृहस्थी के छोटे-छोटे प्रपंचों की तरफ विशेष ध्यान न रखकर मनुष्य के असली कर्तव्य की तरफ अपना ध्यान मोड़ो । हमें हमेशा प्राणिमात्र के लिए प्रेममय बर्ताव कायम रखते हुए आनंदमय जीवन बिताना है । यह आनंद जितना बढ़ेगा उतनी ही जल्दी हमें ध्येय की प्राप्ति होगी । इसलिए मन लगाकर कर्तव्य करती जाओ । खूब प्रसन्न रहो । जिंदगी को भार-रूप मत समझो । जहांतक स्वराज्य नहीं प्राप्त हो वहांतक स्वराज्य के सिवाय दूसरी बातों का खयाल भी हमें नहीं आना चाहिए । इतना मन उसमें लगा दो । सत्याग्रह-आश्रम में हमेशा जाया करनी होगी । वहां जाने से मन को अवश्य शांति मिलेगी । यदि पूज्य विनोबाजी का तुम्हारे ऊपर विश्वास पैदा हो गया तो आध्यात्मिक ताकत बढ़ाने का मार्ग भी वह तुम्हें बतायेंगे । उनकी सत्संगति से तुम्हारी दिनचर्या अवश्य सुधर जायगी ।

सब बच्चों तथा बुढ़ियों से खूब प्रेम का बर्ताव रखना । अतिथियों का पूरा ध्यान रखना ।

तुम्हारा,
जमनालाल

२२

(इस पत्र के शुरू के पृष्ठ नहीं मिले हैं)

तेजपुर, (२५।२६-८-२१)

गोहाटी में सफलता अच्छी मिली है ।

मारवाड़ी व्यापारियों ने भविष्य में विदेशी सूत का कपड़ा नहीं मंगाने की प्रतिज्ञा कर ली है । यह कार्य तो बापू के ही प्रताप से हुआ । परन्तु विशेष उद्योग किये बिना ही योश यश इसमें मुझे भी मिल गया । यहां कार्यकर्ताओं ने बड़ा उत्साह दिखलाया । गोहाटी में विदेशी कपड़ों की होली भी अच्छी

पर मिल गया होगा। आसाम के भ्रमण में कई बातें नई देखने में आई। इस तरफ भी पूज्य बापूजी में लोगो की बहुत श्रद्धा-भक्ति है। आसाम में मारवाड़ियों के, खासकर अग्रवालों के बहुत घर है। गांव-गांव में और जंगल-बगीचो में भी इनकी दुकानें है। डिब्रूगढ़ में मारवाड़ियों की तरफ से बापूजी का अच्छा स्वागत हुआ। मै वहा एक रोज पहले ही पहुंच गया था। मारवाडी स्त्रियों की सभा हुई। महात्माजी ने विदेशी वस्त्र त्यागने के बारे में तो कहा ही, साथ ही मारवाडी समाज में गहनो की बुरी प्रथा के बारे में भी कहा। उनके कहने का आशय था कि गहनों से स्त्रियों की सुन्दरता नष्ट होती है। जहातक बने गहने नहीं पहने जाय। अगर पहने ही जाय तो बहुत थोड़े और कपडे भी साफ-स्वच्छ, सफेद रंग के ही ज्यादा इस्तेमाल में लाये जाय, जिससे मारवाड़ी बहनें भी, आसामी बहनों की तरह, सीताजी के समान दीखने लगें। मुझे यह भी कहा कि जिस तरह से हो, रंग-बिरंगे कपड़े अधिक पहनने का चलन कम करने की चेष्टा करनी चाहिए।

डिब्रूगढ़ से हम लोग सिलचर के लिए रवाना हुए। करीब ३३ घंटे मे सिलचर पहुचे। वहा सारा गाव खूब सजाया गया था। रात को दीयों की रोशनी दीवाली से बढ़कर की गई थी। केले के खंभे तथा रोशनी बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाई गई थी। सिलचर जाते समय रास्ते में दृश्य भी बहुत सुन्दर और मनोहर थे। ऐसे समय में तुम्हारी याद आती है कि तुम भी साथ होती तो ये सब सुन्दर दृश्य देख सकती। रेल की यात्रा में रात को नींद बहुत कम आ पाती है। हजारों लोग स्टेशनों पर जमा हो जाते है और जय-जयकार करते है। महात्माजी के दर्शन कराने की खूब प्रार्थना करते है। मैं बापूजी के डिब्बे में ही रहता हू। बहुत बार मुझे ही उन्हे बापूजी के दर्शनो से वंचित करने का कठोर कार्य करना पड़ता है।

आज बापूजी के मौन का दिन है। यहा सिलहट में, नदी के किनारे, एक बीकानेरी मारवाडी ओसवाल सज्जन के घर बापू शांति से लिख रहे है। वहीं से यह पत्र मैं तुम्हें लिख रहा हू। यहा से चटगांव और बारीसाल होकर ४ तारीख की रात को या ५ को सवेरे कलकत्ता पहुंचने का कार्यक्रम है। मेरा चित्त खूब प्रसन्न रहता है। मन में किसी तरह की चिंता नहीं है।

मंदिर मे तो विदेशी कपडा नाम के लिए भी नही है। मुकुट चादी-सोने के बनवाने का विचार है। फिलहाल खादी के बना लिये है।

घर के लिए फर्नीचर की भी अडचन है। उसमे भी विचारो के माफिक फेर-फार हो रहा है। अलग एक कमरे में नया कपडा रखा है, उसमे घर का तो एक हजार से ज्यादा नही है, किन्तु मंदिर की हजारो रुपये की पोशाकें है। उसके बारे में जैसा सोचा जायगा, वैसा करेगे। अपने तो प्राण ही बापू के अर्पण है। दूसरी तो बात ही क्या ? मुझे तो स्वप्न में भी बापू ही दीखते है। सोकर उठती हू तो बापूजी की आज्ञानुसार खादी के कपडे पहने हुए परमात्मा से आशीर्वाद मागती हू कि बापूजी का आत्मबल बढे। उन्हे कार्य में सफलता हो। आपकी इच्छानुसार आपको तथा मुझे वह सद्बुद्धि प्रदान करें।

मुझे तो पूर्ण आशा है कि हमें कार्य मे सफलता जरूर मिलेगी। बाकी लोगो का तो उत्साह जितना सामने रहता है, उतना पीछे नही रहता। लेकिन समय आने पर ईश्वर आप ही शक्ति देगा।

बबई से कपडे भिजवाये थे, जिनमें कुछ का एक तथा कुछ के दोनो सूत मील के थे। ये कपड़े लोगो के विश्वास पर भिजवा दिये गए थे। किन्तु अपने लिए तो दोनो सूत हाथ के ही होने चाहिए, ऐसी इच्छा रहती है। आश्रम में तो ऐसा है ही। एक धोती-जोडा और मंदिर के प्रसाद के चने पुलगाववाले मुनीमजी के साथ आपके लिए भेजे है। धोती-जोडा वजन में बहुत ही हल्का है। उसके दोनो सूत हाथ के है। आप उन्हे पहनना। वैसे मेरे भी काम आ जायगा।

देश जाने के बारे में आपने पूछा है, सो वहा आपका ज्यादा रहना तो होगा नही। अकेली में भी नही रह सकूगी। बच्चो का साथ, पसली का दर्द, ठण्डा मुल्क। तकलीफ होती है। जाने की इच्छा यो थी कि आपके साथ स्त्रियो की एक-दो सभाए भी हो जाती। स्त्रियो में आपकी माजी भी प्रचार तो करती ही होगी। आप आनन्द के साथ कार्य करते रहिये। इधर आने का कार्यक्रम अपनी जरूरत के माफिक रखना। काम के साथ आराम की भी जरूरत है, कारण, ज्यादा मेहनत किसी-न-किसी रूप में फिर तकलीफ देती ही है।

आपकी इच्छा के माफिक तो मैं आपके साथ रहने मे ही बन सकती हू, अन्यथा कठिन है। आपको समय मिले तो समाचार देना। कुछ जल्दी नही है। मैं कुशल हू। आप निश्चिन्त रहिये। प्रेमानंद रखिये।

आपकी प्रेमालु,
कमला की मा

२५

कलकत्ता, १३-९-२१

प्रिय देवी,

सप्रेम वन्देमातरम्। तुम्हारे दो पत्र एक ता ५-९ का व दूसरा बिना तारीख का मिला। समाचार विदित हुए। पत्र पढकर आनन्द हुआ। तुम्हे पहले पत्र का जवाब शीघ्र देने का विचार था, परन्तु महात्माजी के यहा रहने और वकिग कमेटी में अधिक समय लगने के कारण पत्र नही लिख सका। तुम्हे पत्र लिखने मे बडा आनन्द और शान्ति मिलती है।

मदिर में प्राय सब स्वदेशी कपडा हो गया। मुकुट सोने-चादी के बनवाने का विचार लिखा सो ठीक। जहॉ बने, वहातक खादी के बना लिये जावे। जो विशेष फर्नीचर हो, उसे बगीचे के बगले मे रखवाया जा सकता है।

'मेरे तो प्राण ही बापू को अर्पण हैं, सपने मे भी बापू ही दीखते हैं'— तुम्हारे पत्र में यह पढकर मुझे बहुत ही सतोष और प्रसन्नता हुई। परमात्मा हमारी बुद्धि ऐसी ही बनाये रखे। मुझे विश्वास है, परमात्मा अवश्य हमें सफलता और शक्ति प्रदान करेगा।

तुम्हे बम्बई से जो कपडे भेजे थे, वे जहातक याद है, हाथ के सूत के तथा हाथ के बने हुए आध्र प्रदेश के हैं। नमूने के तौर पर तुम्हे भेजे थे कि इस तरह की बारीक खादी भी तैयार होने लग गई है। तुमने धोती-जोडा भेजा, सो पहुच गया। उसका उपयोग कर रहा हू। धोती-जोडा ठीक है। रेशम की माफिक लगता है।

पूज्य बापूजी आज मद्रास की तरफ जायगे। मुझे ९-१० रोज यहा ठहरने के लिए कहा है। आशा है, यहा रहने से कुछ सफलता मिल जाय। थोडी विश्राति लेते रहने का तुमने लिखा, सो जिस रोज कार्य ठीक हो

जाता है उस रोज विश्राति अपने आप ही मिल जाती है। बाकी अब फिक्र कम रहती है। प्राय. आनन्द से ही सारा समय व्यतीत होता है।

पत्र फिर विशेष अवकाश मिलने पर लिखने का विचार है। आज बापूजी जा रहे हैं, वहा जाना है। रात को २-२॥ बजे सोया था। सुबह ६ बजे स्नान करके तुम्हे पत्र लिखना शुरू किया है। कमला के हाथ से भी पत्र लिखवाया करना, जिससे उसकी आदत पड जाय।

तुम्हारा,
जमनालाल

२६

कलकत्ता,
भादवा सुदी, ११
(१७-९-२१)

प्रिय देवी,

सप्रेम वदेमातरम्। ता० १६-९ का लिखा हुआ तुम्हारा पत्र आज मिला। पढकर आनंद हुआ। तुमने लिखा कि पहले पत्र का जवाब देने में देर हुई जिससे चिंता हो गई थी, सो इस तरह चिंता होना ठीक नहीं है। कठिन परीक्षा का समय तो अब आनेवाला है। हम लोगों का जेल जाना बहुत जल्दी संभव हो सकता है। अगर इस तरह की छोटी-छोटी बातों से चिंता हुआ करेगी तो आगे असली ध्येय की प्राप्ति में देर लगेगी और बाधा पहुंचेगी। मन को सदैव शात और आनंद में रखने की पूरी चेष्टा करनी चाहिए। जब हम लोगों का परमात्मा पर पूरा विश्वास है तथा बापू का आशीर्वाद हमें प्राप्त है तो फिर हमें क्या चिंता होनी चाहिए? आशा है, पत्र में इतना खुलासेवार लिखने का आशय तुम समझ गई होगी। भविष्य में कभी किसी कारण चिंता पैदा हो जाय तो इस पत्र को स्मरण करके ध्यान रखना। परमात्मा जो कुछ करता है, ठीक ही करता है।

यहा विदेशी कपड़े तथा सूत के व्यापारियों मे विदेशी वस्त्र-बहिष्कार अच्छी सफलता मिल रही है। परमात्मा ने चाहा तो सोमवार तक पूरी मिल जावेगी। इसमें सदेह नहीं रहा।

मुहम्मद अली, शौकतअली तथा डा० किचलू को

गिरफ्तारी का समाचार मिला। यहा अभी तक पूरी शांति है। परमात्मा सब जगह शांति रखेगा तो हमारा स्वराज्य-प्राप्ति का उद्देश्य शीघ्र सफल होगा।

कलकत्ते में जो कार्य होता है, समाचार-पत्रों में उसका हाल पढ लिया करती होगी। यहा मुझे अजमेर, करांची, अमृतसर, भागलपुर आदि गावो में आने के लिए तार-पत्र आ रहे है। यहा का कार्य समाप्त होने पर २-४ रोज में ही बापू की आज्ञा होगी तो वहा जाने का विचार है, अथवा वर्धा आकर फिर कहा जाना है, यह निश्चय किया जायगा।

चि० राधाकिसन खूब हिम्मत और प्रेम के साथ देश-सेवा का कार्य कर रहा है। उसका पत्र पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसे बधाई का तार और पत्र दिया है। इस तरह की लगन के सब घरवाले हो जाय तो और भी आनद बढ़े।

कल यहापर विदेशी कपड़े का बहिष्कार करनेवाले ३८ स्वयंसेवक प्रसन्नतापूर्वक जेल में जाने के लिए गिरफ्तार हुए हैं। कल ही जिन मजदूरो को विदेशी कपड़ा नहीं उठाने के कारण सरकार ने दूसरा अपराध लगाकर सात रोज के लिए जेल भेजा था, वे छूटकर आये थे। उनका बहुत बडा स्वागत किया गया।

पत्र जहातक बने शुद्ध और साफ अक्षरो में लिखने का अभ्यास करना चाहिए। यहा का और सब हाल श्री सत्यदेवजी से पूछ लेना।

तुम्हारा,
जमनालाल

२७

कानपुर जाते हुए (रेल में),
१२-१०-२१ (विजयादशमी)

प्रिय देवी,

सप्रेम वन्देमातरम्। पत्र तुमको बबई से नही लिख सका। अजमेर जाना बिलकुल निश्चित हो चुका था, परन्तु कानपुर से कई तार आये। इससे महात्माजी ने पहले कानपुर जाने की आज्ञा दी और यहा आना पडा। कानपुर दो रोज ठहरकर अजमेर जाने का विचार है। वहा से

ता० १८-१९ तक सीकर पहुचना होगा, ऐसा लगता है। फिर पंजाब और सिंध-हैदराबाद जाने का विचार है।

आज विजयादशमी है। आज के दिन हमारे धर्मयुद्ध की विजय हुई थी। इसलिए परमात्मा से प्रार्थना है कि हमारे इस पवित्र धर्मयुद्ध में भी वह हमें शीघ्र सफलता प्रदान करे। मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि हमारी विजय अवश्य होगी। अब तो स्वदेशी पर ही पूरा जोर देना है। रात-दिन स्वदेशी का खूब प्रचार हो, विदेशी कपड़ा एकदम बंद हो जाय, इस तरह का उद्योग करना है।

तुम्हे मालूम हुआ ही होगा कि बबई में करीब ४५ सज्जनों ने सही करके सरकार को ललकारा है कि अली-बधु वगैरा पर जो अपराध लगाया है, वह अपराध हम भी करते है और वैसा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। अब देखें सरकार क्या करती है? अगर न्याय करना चाहती है तो सही करनेवाले इन सबोको पकड़ना चाहिए, नही तो अली-भाइयो पर से यह धारा उठा लेनी चाहिए। अगर तुम बबई में उस रोज होती तो तुम्हारी भी सही हो जाती। जब श्री सरोजिनी नायडू और अनसूया बहन ने सही की तब मुझे तुम्हारी बडी याद आई। अब तो खुली लड़ाई छिड़ चुकी है। परमात्मा हम सबको धैर्य और हिम्मत बनाये रखे, यही प्रार्थना है।

नीद खूब शांति से आती है। जिस दिन कुछ कार्य नही होता, उस दिन अलबत्ता विचार हो जाता है। परन्तु अब तो ऐसे मौके कम ही आते है।

दशहरे का सोना-पत्र इसी पत्र को समझ लेना है। बच्चो को और सारे कुटुब को खूब प्यार के साथ असली सिद्धान्त और ध्येय पर लाने की चेष्टा करती रहना। पत्र पढ़ने में तुम्हे कष्ट होगा, क्योंकि चलती गाड़ी में लिखा है।

तुम्हारा,
जमनालाल

२८ :

तिलक स्कूल आफ पोलिटिक्स, लाहौर,
दीपावली, कार्तिक बदी ३०, स० १९७८
(३०-१०-२१)

वंदेमातरम्। दशहरे के बाद आजतक तुमको पत्र नहीं लिख

सका, कारण, इस दौरे में अवकाश कम मिला। कराची से अभी रात को ९॥ के करीब यहां लाहौर पू० लाला लाजपतरायजी के घर पर पहुंचा हूं। आज की यह दीपावली की रात, इस पवित्र घर में बिताई जायगी। यहां कल रहकर ता० १ को अमृतसर और ३ को दिल्ली जाने का विचार है। वहां से, संभव है बंबई होकर वर्धा आना हो। अगर पू० बापूजी दूसरी आज्ञा देंगे तो वैसा करूंगा। स्वास्थ्य खूब अच्छा है। शेखावाटी का दौरा जल्दी-जल्दी में ठीक ही हो गया। स्वदेशी का अच्छा प्रचार हो जायगा। बीकानेर राज्य में तो सभा वगैरा राज्यवालों ने नहीं होने दी। वहां की कार्रवाई तो हास्यजनक थी। हम लोगों के लिए बीकानेर-राज के बड़े-से-बड़े पुलिस अफसरों को खूब परिश्रम करना पड़ा। अगर तुम साथ होती तो दृश्य देखने योग्य ही था। मुसाफिरी में खूब अच्छा अनुभव मिल रहा है। जोधपुर में दो महात्माओं से भेंट हुई। योग्य थे। कराची में मौलाना शौकतअली, मुहम्मदअली और शंकराचार्य से भेंट हुई तथा उनका मुकदमा भी देखा। ये लोग जेल में बड़े आनंद में हैं। २-३ जनों का तो वजन काफी बढ़ गया है।

स्वदेशी का कार्य ठीक हो रहा है।

तुम्हारा,
जमनालाल

२९

वर्धा, २५-११-२१

श्रीयुत प्राणनाथ,

सप्रेम नमस्कार। पत्र आपका दुकान में आया। हकीकत मालूम हुई और दो-चार दिन बंबई ठहरोगे और जरूरत पड़ने पर बाहर भी जाना पड़े यह लिखा सो आजकल बड़े जोखम के दिन हैं। गाड़ी, मोटर में अथवा पैदल संभालकर चलना चाहिए। कलकत्तेवाले केसरदेवजी जैसे भी फंस गये। उसमें क्या फायदा? काम करते जाना, समय-बे-समय बहुत होशियारी से बचते जाना, इसीमें बहादुरी है। थोड़ा-सा काम किया और प्राण दे दिये उसमें कुछ तारीफ नहीं। आप समझदार हैं, परंतु सभी बातों में चूकोगे नहीं ऐसा आपको और मुझे दोनों को नहीं मानना चाहिए। समझदार

वक्त प्रार्थना मे जो बातें कही थी, सो मैंने भी बराबर सुनी । कोई १५ मिनिट पहले जाकर उनके पास बैठ गई थी । मैंने दो बात याद रक्खी । एक तो उन्होंने कहा—यह नहीं मान लेना चाहिए कि हमारे मन का मैल धुल गया है । जैसे-जैसे धुलता है वैसे-वैसे ज्यादा-ज्यादा दीखता भी जाता है । इसलिए धोते ही जाना चाहिए । कहातक धोयेंगे, ऐसा सोचकर उदासीन नहीं होना चाहिए और यदि उदासीनता हो तो वह आनन्दमयी ही हो, चितायुक्त नहीं ।

दूसरी यह कि 'सत्य में ब्रह्म है किन्तु वही दीखता नहीं', इसलिए विश्वास नहीं आता । उपाय यह है कि इसको उल्टा करो याने करके देखो, तब तो विश्वास आयगा ही कि सत्य में ब्रह्म है, कारण सत्य तो प्रत्यक्ष दीखता है ।

दोनों बातों से समाधान मिला । गोमतीबेन के पास जो कुछ पठन-पाठन होगा, सुनने जाया करूंगी । गोमतीबेन ने कहा है कि काम के कारण वह लिख नहीं पायेंगी । मुझे लिखने को कहा है । मौन चालू है । अच्छी हूँ ।

खादी बेचने के लिए गाव की स्त्रिया पहली तारीख को गई थी । अच्छी बिक्री हुई । ता० २ को हम सब गये थे । १५० स्त्रियों का जलूस निकाला था । चार-चार स्त्रियों की दो-दो लाइनें बनी थीं । गाती हुई हम सब चली जा रही थी— "कायदा नो भंग करीशू रे, अमे स्वराज्य लईशू ।"[1]

जुलूस पहले से अच्छा था । कोई पीछे नहीं फिरता था । जुलूस में स्त्रिया बडी निडर और खुश दिखाई देती थी । ता० ३ को फिर गाना गाते, ताली बजाते, जुलूस निकालेंगी । अगर मिला तो आगे-आगे चलने के लिए बाजा भी किराये पर कर लिया जायगा । अब देखें क्या होता है ? सरलादेवी के पति आये थे । बंबई भेजा है । महात्माजी से मिलकर आवेंगे सरलादेवी ता० ८ तक जायगी । उन्होंने आपको नागपुर चिट्ठी दी थी । पहुची या नहीं ? पूछा है ।

आप वर्धा जायं तब लिख दीजियेगा, हम भी आ जायगे । अब हमारा यहा ज्यादा रहने का विचार नहीं है । लेकिन आपका तो वर्धा रहना होगा न !

---

[1] हम क़ानून तोड़ेंगे और स्वराज्य लेंगे ।

था। इस बारे मे मने महात्माजी से पूछा था। उन्होने भी कहा कि ऐसे मौके पर तुम्हारा नाम रखा जा सकता है। खैर, हाल में तो यह मौका नही है, जब आयेगा तब देखा जायेगा।

हा, एक बात लिखनी रह गई। ता. १८ को सुबह में तथा कोर्ट में कई लोग रोये। प्रेम और वियोग के कारण मेरी आखो में आसू भर आये थे। मैंने उन्हे बाहर जाकर पोंछ डाला। बापू खूब हँसते थे। कई लोग खूब हिम्मत रखे हुए थे।

अब मेरा कार्यक्रम इस प्रकार रहेगा—

ता० २१ से २६ तक बंबई।

ता० २७ को खडवा में सुदरलालजी से मिलना।

आत्यंतिक नाश मोक्ष है। जिसके अहंकार का सर्वथा नाश हुआ है, वह मूर्तिमन्त सत्य बन जाता है। उसे ब्रह्म कहने में भी कोई बाधा नहीं हो सकती। इसीलिए परमेश्वर का प्यारा नाम तो दासानुदास है।

स्त्री, पुत्र, मित्र परिग्रह सबकुछ सत्य के अधीन रहना चाहिए। सत्य की शोध करते हुए इन सबका त्याग करने को तत्पर रहें तो ही सत्याग्रही हुआ जा सकता है।

इस धर्म का पालन अपेक्षाकृत सहज हो जाय, इस हेतु से मैं इस प्रवृत्ति में पड़ा हूं, और तुम्हारे समान लोगों को होमने में भी नहीं झिझकता। इसका बाह्य स्वरूप हिंद स्वराज्य है। उसका सच्चा स्वरूप तो उस-उस व्यक्ति का स्वराज्य है। अभी एक भी ऐसा शुद्ध सत्याग्रही उत्पन्न नहीं हुआ है। इसी कारण यह देर हो रही है। किन्तु इसमें घबराने की तो कोई बात ही नहीं। इससे तो यही सिद्ध होता है कि हमें और भी अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

तुम पांचवें पुत्र तो बने ही हो। किन्तु मैं योग्य पिता बनने का प्रयत्न कर रहा हूं। दत्तक लेनेवाले का दायित्व कोई साधारण नहीं है। ईश्वर मेरी सहायता करे और मैं इसी जन्म में उसके योग्य बनूं।

शुभेच्छुक,
बापू के आशीर्वाद

ता० २८ को इंदौर महासभा के लिए जाना।

ता० १ तक वहा रहकर पीछे बबई या वर्धा आना।

अब खादी का कार्य जोर से करना है। इसलिए बबई विशेष रहना पडेगा। शायद तुम लोगो को भी बबई रहना पडे। यहा आश्रम में सब प्रसन्न है। बा अपना कार्य नियमित रूप से और धैर्य से करती है। सरलादेवी आज जा रही है। तुम्हे याद करती है।

तुम्हारा,
जमनालाल

पुनश्च—हाल में ही जो 'आश्रम भजनावली' छपी है, वह तुम्हारे लिए भेजता हू। इसे पढकर तुम्हे खूब लाभ मिलना सभव है। सभी आवश्यक बाते एक जगह है। कुछ कोरे पन्ने है, उनमें कुछ लिखना मत। कुछ अच्छे भजन मिलेगे तो उनमे लिखेंगे।

१३३

वर्धा, २३-३-२२

श्रीयुत प्राणनाथ,

चिट्ठी आपकी आई। समाचार मालूम हुआ। पू० महात्माजी के मुकदमे की हकीकत सुनकर दुख और आनद दोनो हुआ। आपका प्रोग्राम देखा। ता० १ तक आना होगा और सो भी 'शायद'। बबई-वर्धा का नक्की नही। खैर, ईश्वर की मरजी। मेरी इच्छा थी कि धूप मे कम फिरते और थोडा आराम मिलता तो अच्छा होता। परन्तु समय ऐसा आया, क्या करे? आपके पास छाता भी नही। आपका खादी का छाता यहा तो नही है। वहा हो तो ले लेना।

आपका कार्यक्रम ठीक मालूम हो जावे तो भुसावल स्टेशन पर नानू को भेज देवे, मुसाफिरी मे काम आ जायगा। नानू की तबियत ठीक हो गई है। आप गये तब आपके मन मे उसके बारे मे दुख हुआ। परन्तु मै समझ गई कि आपके गये बाद इसको सभालना मेरा कर्त्तव्य है। मुसाफिरी के कारण उसके शरीर में गरमी बहुत रहती है। इसलिए पुराने आंवले वगैरा देना अच्छा समझा और बिना दवाई के उसे आराम हो गया।

कोर्ट का दृश्य अद्भुत था। ऐसा मालूम होता था जैसे जज तथा उसके साथी ही दोषी हैं तथा बापू प्रेम से उनको दोष से मुक्त होने का उपदेश कर रहे हैं। जज आदि अंग्रेज थे। फिर भी उनपर खूब असर हुआ। १८ मार्च का दिन हमेशा याद रखने योग्य है। वह दिन हमारे भविष्य के इतिहास में बिजली की तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता अगर तुम आ जाते। खैर कोई बात नहीं। बापू ने मुझे खूब जोर से पीठ ठोककर आशीर्वाद दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेंगे। जिम्मेदारी खूब बढ़ गई है। अब कार्य की दृष्टि से जेल जाने की बिल्कुल जरूरत नहीं मालूम होती। हां, शांति तथा विश्राम के लिए जाने की इच्छा होना संभव है। परन्तु इसे रोकना होगा। कार्य करते हुए ऐसा मौका आ गया तो आनंद की बात है। जान-बूझकर नहीं जाना है। बंबई में तथा यहां मेरे गिरफ्तार होने की चर्चा बहुत जोर से थी। परन्तु उस चर्चा में कम-से-कम फिलहाल तो कोई दम नहीं है। अगर मुझे गिरफ्तार होना ही पड़े तो उस हालत में 'हिन्दी-नवजीवन' में प्रकाशक की हैसियत से मेरी जगह तुम्हारा नाम रक्खा जाय, ऐसा मेरा विचार हुआ

पानी का उपयोग भी हिंसा है। हिंसामय जगत में अहिंसामय बनकर रहना है। यह तो सत्य पर दृढ़ रहने से ही हो सकता है। इसलिए मैं तो सत्य में से अहिंसा को फलित कर सकता हूं। सत्य में से प्रेम की प्राप्ति होती है। सत्य में से मृदुता मिलती है। सत्यवादी सत्याग्रही को एकदम नम्र होना चाहिए। जैसे-जैसे उसका सत्य बढ़ता है, वैसे ही वह नम्र बनता जायगा। प्रति क्षण मैं इसका अनुभव कर रहा हूं। इस समय सत्य का मुझे जितना ख्याल है, उतना एक वर्ष पहले न था, और इस समय मैं अपनी अल्पता को जितना अनुभव कर रहा हूं, उतना एक साल पहले नहीं कर पाता था।

मेरी दृष्टि में, 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' इस कथन का चमत्कार दिनों-दिन बढ़ता जाता है। इसलिए हमें हमेशा धीरज रखना चाहिए। धैर्य पालन से हमारे अंदर की कठोरता चली जायगी। कठोरता के न रहने पर हममें सहिष्णुता बढ़ेगी। अपने दोष हमें पहाड़ जितने बड़े प्रतीत होंगे, और संसार के राई से। शरीर की स्थिति अहंकार को लेकर है। शरीर का

निवेदन

जमनालाल सेवा ट्रस्ट-ग्रन्थमाला का यह सातवा खण्ड है। इससे पहले 'विनोबा के पत्र' नाम का छठा खण्ड आपकी सेवा में पहुंच चुका है। इस माला में प्रस्तुत ग्रंथ पत्र-व्यवहार-कडी की यह चौथी पुस्तक है। इससे पहले इस कडी में देश के राजनैतिक नेताओ से, देशी रियासतो के कार्यकर्ताओं से तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओ से हुआ पिताजी का पत्र-व्यवहार तीन खण्डो में निकल चुका है।

इस पुस्तक में पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल बजाज) और माताजी (श्रीमती जानकीदेवी बजाज) के बीच हुआ पत्र-व्यवहार सकलित किया गया है। पहले तीन भागो से यह पत्र-व्यवहार एकदम भिन्न प्रकार का है। यह केवल एक पति-पत्नी के बीच का पत्र-व्यवहार नही है, बल्कि इन पत्रो में माताजी और पिताजी के जीवन के विभिन्न पहलुओ का दर्शन भी होता है।

यह पत्र-व्यवहार सन् १९११ से प्रारम्भ होता है, जब पिताजी की अवस्था २० वर्ष की और माताजी की अवस्था १६ वर्ष की थी। माताजी मामूली लिख-पढ लेती थी (माताजी के शुरू के कुछ पत्र तो मारवाड़ी भाषा में ही लिखे गये थे।) और पिताजी की शिक्षा भी बहुत ही साधारण हुई थी, लेकिन व्यवहार-ज्ञान की दोनो में कमी नही थी।

पिताजी का जीवन एक साधक व योगी का रहा जिसमें गाधीजी की आज्ञा का सूक्ष्मता के साथ पालन करते हुए उनकी मदद से अपनी और अपने निकट के लोगों की आध्यात्मिक व नैतिक उन्नति करते रहने का सतत प्रयत्न चालू रहता था। ऐसे व्यक्ति की पत्नी होकर उनके साथ क़दम से क़दम मिलाकर चलने में कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ सकता है, यह तो अनुभवी लोग ही जान सकते हैं। यद्यपि माताजी की शैक्षणिक व राजनैतिक पृष्ठभूमि एकदम जुदा थी, फिर भी उन्होंने बड़ी सफलता के साथ पिताजी के सत्प्रयत्न में अखीर तक साथ दिया। इसमें माताजी की स्पष्टवादिता, बुद्धिशीलता तथा तत्त्वनिष्ठा और पिताजी की साधक वृत्ति,

कोर्ट का दृश्य अद्भुत था। ऐसा मालूम होता था जैसे जज तथा उसके साथी ही दोषी है तथा बापू प्रेम से उनको दोष से मुक्त होने का उपदेश कर रहे हैं। जज आदि अंग्रेज थे। फिर भी उनपर खूब असर हुआ। १८ मार्च का दिन हमेशा याद रखने योग्य है। यह दिन हमारे भविष्य के इतिहास में बिजली की तरह चमकता रहेगा। अच्छा होता, अगर तुम आ जाती। खैर, कोई बात नहीं। बापू ने मुझे खूब जोर से पीठ ठोककर आशीर्वाद दिया। अब मुझे पूरा विश्वास है कि हम लोग अपनी उन्नति अवश्य कर सकेंगे। जिम्मेदारी खूब बढ़ गई है। अब कार्य की दृष्टि से जेल जाने की बिल्कुल जरूरत नहीं मालूम होती। हा, शांति तथा विश्राम के लिए जाने की इच्छा होना संभव है। परन्तु इसे रोकना होगा। कार्य करते हुए वैसा मौका आ गया तो आनंद की बात है। जान-बूझकर नहीं जाना है। बंबई में तथा यहा मेरे गिरफ्तार होने की चर्चा बहुत जोर से थी। परन्तु उस चर्चा में कम-से-कम फिलहाल तो कोई दम नहीं है। अगर मुझे गिरफ्तार होना ही पड़े तो उस हालत में 'हिन्दी-नवजीवन' में प्रकाशक की हैसियत से मेरी जगह तुम्हारा नाम रक्खा जाय, ऐसा मेरा विचार हुआ

पानी का उपयोग भी हिंसा है। हिंसामय जगत में अहिंसामय बनकर रहना है। यह तो सत्य पर दृढ़ रहने से ही हो सकता है। इसलिए मैं तो सत्य में से अहिंसा को फलित कर सकता हूं। सत्य में से प्रेम की प्राप्ति होती है। सत्य में से मृदुता मिलती है। सत्यवादी सत्याग्रही को एकदम नम्र होना चाहिए। जैसे-जैसे उसका सत्य बढ़ता है, वैसे ही वह नम्र बनता जायगा। प्रति क्षण मैं इसका अनुभव कर रहा हूं। इस समय सत्य का मुझे जितना ख्याल है, उतना एक वर्ष पहले न था, और इस समय मैं अपनी अल्पता को जितना अनुभव कर रहा हूं, उतना एक साल पहले नहीं कर पाता था।

मेरी दृष्टि में, 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' इस वचन का चमत्कार दिनोंदिन बढ़ता जाता है। इसलिए हमें हमेशा धीरज रखना चाहिए। धैर्य पालन से हमारे अंदर की कठोरता चली जायगी। कठोरता के न रहने पर हममें सहिष्णुता बढ़ेगी। अपने दोष हमें पहाड़ जितने बड़े प्रतीत होंगे, और संसार के राई से। शरीर की स्थिति अहंकार को लेकर है। शरीर का

ता० २८ को इंदौर महासभा के लिए जाना ।
ता० १ तक वहां रहकर पीछे बंबई या वर्धा आना ।

अब खादी का कार्य जोर से चलता है । इसलिए बंबई विशेष रहना पड़ेगा । शायद तुम लोगों को भी बंबई रहना पड़े । यहां आश्रम में सब प्रसन्न है । बा अपना कार्य नियमित रूप से और धैर्य से करती है । सरस्वतीदेवी आज जा रही हैं । तुम्हें याद करती हैं ।

तुम्हारा,
जमनालाल

पुनश्च—डाक में ही जो 'आश्रम भजनावली' छपी है, वह तुम्हारे लिए भेजता हूं । इसे पढ़कर तुम्हें खूब लाभ मिलना संभव है । सभी आवश्यक वाले एक जगह हैं । कुछ कोरे पन्ने हैं, उनमें कुछ लिखना मत । कुछ अच्छे भजन मिलें तो उनमें लिखना।

(५३)

वर्धा, २३-३-२२

श्रीयुत प्राणनाथ,

चिट्ठी आपकी आई । समाचार मालूम हुआ । पू० महात्माजी के मुकदमे की हकीकत सुनकर दु:ख और आनंद दोनों हुआ । आपका प्रोग्राम देखा । ता० १ तक आना होगा और सो भी 'शायद' । बंबई-वर्धा का नक्की नहीं । खैर, ईश्वर की मरजी । मेरी इच्छा थी कि धूप में कम फिरते और थोड़ा आराम मिलता तो अच्छा होता । परन्तु समय ऐसा आया, क्या करें ? आपके पास छाता भी नहीं । आपका खादी का छाता यहां तो नहीं है । वहां हो तो ले लेना ।

आपका कार्यक्रम ठीक मालूम हो जावे तो भुसावल स्टेशन पर नानू को भेज देवें, मुसाफिरी में काम आ जायगा । नानू की तबियत ठीक हो गई है । आप गये तब आपके मन में उसके बारे में दु:ख हुआ । परन्तु मैं समझ गई कि आपके गये बाद इसको संभालना मेरा कर्तव्य है । मुसाफिरी के कारण उसके शरीर में गरमी बहुत रहती है । इसलिए पुरान आंवले वगैरा देना अच्छा समझा और बिना दवाई के उसे आराम हो गया

भुसावल स्टेशन पर दो कुर्ते आपके भेजेंगे। संतरे का शरबत काशी बाई से घर पर बनवाया था। आज एक शीशी भेजते हैं, एक नानू के साथ भेज देंगे। शरीर की संभाल पूरी रखना। तबीयत ठीक हो तभी काम कर सकोगे। धूप से बचना। गये थे उस रोज तो मन को बहुत दुःख हुआ था। अब तो ठीक है। परन्तु एक जगह रहकर ज्यादा काम हो, ऐसा करना चाहिए।

संतरे का शरबत पानी में मिलाकर लेना। संतरे भी भेजे हैं। संतरे खाने में बहुत देर लगती है, पर शरबत तो आधा मिनट में तैयार, पानी में डाला और पी लिया। अपने हाथ से डालना चाहिए, दूसरे से मांगा-मागी में तो कई खटपट हैं।

मास्टर की पढ़ाई शुरू है।

आपकी हितेच्छु,
जानकीदेवी

: ३४ :

बंबई,
चैत सुदी १२, सं० १९७९
(९-४-२२)

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। पत्र तुम्हारा इधर नहीं मिला। क्या तुम सब बंबई नहीं रह सकोगे? अब तो यहीं पर ज्यादा काम हो सकता है। सब तरह के काम करने के साधन यहापर ज्यादा है। तुम विचार कर देखना। आजकल मन थोडा व्यग्र रहता है। कार्य का जो भार पूज्य बापू तथा वर्किंग कमेटी ने दिया है, वह जब व्यवस्थापूर्वक होने लगेगा, तभी शांति मिलेगी। तुम शांति से अपना कर्तव्य करती रहना। बापू को कैद की सजा हुई, उस दिन से मन में ऐसी इच्छा थी कि हो सके वहांतक चर्खा थोडी देर तो अवश्य काता जाना चाहिए। परन्तु कई कारणों से यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। इससे भी मन में थोड़ी अशांति रहती है। यहां घूमने का कार्य ज्यादा रहता है। तुम तो कम-से-कम एक घंटा चर्खा कातने का हर रोज प्रयत्न किया करो।

अभी अगर मैं दूसरी जगह जाऊं तो जो कार्य शुरू हुआ है, उसमें थोड़ी हानि पहुंचना संभव है। परन्तु एक बार वर्धा आकर फिर ता० २० के लिए कलकत्ता जाना आवश्यक है। मैं बहुत करके ता० १५ को सुबह वर्धा पहुंच जाऊंगा। पूज्य काकाजी[१] का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। तुम संभाल कर लिया करो। जिस तरह से इन्हें आराम पहुंचे, वैसी व्यवस्था रखो।

बापू के जेल में गये बाद कार्य की जवाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परंतु जाते समय बापू जो दिन अपने हाथ का लिखा हुआ उपदेश दे गये, उससे बड़ी शांति मिलती है और जिम्मेदारी का भान होता है।

अब तुम्हें कम-से-कम फालतू गहने तो बेचकर वे रुपये खादी में लगा देने चाहिए। जो गहना बेचना हो सो समय मिले तो अलग निकालकर रख छोड़ना।

इंदौर में महासभा[२] अच्छी हो गई। स्त्रियां खूब आई थीं। प्रार्थना रोज हुआ करती होगी। जहांतक बन पड़ता है, आगे-पीछे प्रार्थना करने का ध्यान मैं भी रखता हूं। भाई देवदास गांधी और जमनादास यहींपर हैं। रामदास भी आये थे। कल ही वापस गये हैं। इन लोगों के पास रहने से शांति मिलती है।

बच्चों को प्यार। अबकी बार अहमदाबाद से अपना मोटर ले आता हूं। वर्धा आते समय साथ लाने का विचार है। बच्चों की पढ़ाई ठीक चल रही होगी। तुम पू० विनोबाजी से मिलती ही होगी।

पूज्य मांजी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा,
जमनालाल

१५

वर्धा (१०-६-२२)

श्रीयुत प्राणनाथ

सप्रेम प्रणाम। पत्र आपका मिला। पढ़ने से पहले [illegible]
[illegible] तो जरूर ही होता है। कारण एक तो [illegible]

---

१ जमनालालजी के जनक श्री कनीरामजी।

२ [illegible] महासभा का अधिवेशन।

भुसावल स्टेशन पर दो कुर्ते आपके भेजेंगे। संतरे का शरबत काशी बाई से घर पर बनवाया था। आज एक शीशी भेजते हैं, एक नानू के साथ भेज देंगे। शरीर की संभाल पूरी रखना। तबीयत ठीक हो तभी काम कर सकोगे। धूप से बचना। गये थे उस रोज तो मन को बहुत दुःख हुआ था। अब तो ठीक है। परन्तु एक जगह रहकर ज्यादा काम हो, ऐसा करना चाहिए।

संतरे का शरबत पानी में मिलाकर लेना। संतरे भी भेजे हैं। संतरे खाने में बहुत देर लगती है, पर शरबत तो आधा मिनट में तैयार, पानी में डाला और पी लिया। अपने हाथ से डालना चाहिए, दूसरे से मांगा-मांगी में तो कई खटपट है।

मास्टर की पढ़ाई शुरू है।

आपकी हितेच्छु,
जानकीदेवी

: ३४ :

बंबई,
चैत सुदी १२, सं० १९७९
(९-४-२२)

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। पत्र तुम्हारा इधर नहीं मिला। क्या तुम सब बंबई नहीं रह सकोगे? अब तो यहीं पर ज्यादा काम हो सकता है। सब तरह के काम करने के साधन यहांपर ज्यादा हैं। तुम विचार कर देखना। आजकल मन थोड़ा व्यग्र रहता है। कार्य का जो भार पूज्य बापू तथा वर्किंग कमेटी ने दिया है, वह जब व्यवस्थापूर्वक होने लगेगा, तभी शांति मिलेगी। तुम शांति से अपना कर्तव्य करती रहना। बापू को कैद की सजा हुई, उस दिन से मन में ऐसी इच्छा थी कि हो सके वहांतक चर्खा थोड़ी देर तो अवश्य काता जाना चाहिए। परन्तु कई कारणों से यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। इससे भी मन में थोड़ी अशांति रहती है। यहां घूमने का कार्य ज्यादा रहता है। तुम तो कम-से-कम एक घंटा चर्खा कातने का हर रोज प्रयत्न किया करो।

अभी अगर मैं दूसरी जगह जाऊं तो जो कार्य शुरू हुआ है, उसमें थोड़ी हानि पहुंचना संभव है। परन्तु एक बार वर्धा आकर फिर ता० २० के लिए कलकत्ता जाना आवश्यक है। मैं बहुत करके ता० १५ को सुबह वर्धा पहुंच जाऊंगा। पूज्य बावाजी[१] का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है। तुम संभाल कर लिया करो। जिस तरह से इन्हें आराम पहुंचे, वैसी व्यवस्था रखो।

बापू के जेल में गये बाद कार्य की जवाबदारी ज्यादा मालूम होती है। परंतु जाते समय बापू जो देन अपने हाथ का लिखा हुआ उपदेश दे गये, उसमें बड़ी शांति मिलती है और जिम्मेदारी का भान होता है।

अब तुम्हें कम-से-कम फालतू गहने तो बेचकर वे रुपये खादी में लगा देने चाहिए। जो गहना बेचना हो सो समय मिले तो अलग निकालकर रख छोड़ना।

इंदौर में महासभा[२] अच्छी हो गई। स्त्रियां खूब आई थीं। प्रार्थना रोज हुआ करती होगी। जहांतक बन पड़ता है, आगे-पीछे प्रार्थना करने का ध्यान मैं भी रखता हूं। भाई देवदास गांधी और जमनादास यहींपर हैं। रामदास भी आये थे। कल ही वापस गये हैं। इन लोगों के पास रहने से शांति मिलती है।

बच्चों को प्यार। अबकी बार अहमदाबाद से अपना फोटो ले आया हूं। वर्धा आते समय साथ लाने का विचार है। बच्चों की पढ़ाई ठीक चल रही होगी। तुम पू० विनोबाजी से मिलती ही होगी।

पूज्य माजी को प्रणाम कहना।

तुम्हारा,
जमनालाल

· ३५ ·

वर्धा, (१०-४-२२)

श्रीयुत प्राणनाथ,

सप्रेम प्रणाम। पत्र आपका मिला। पढ़ने से पहले तथा पीछे मन व्यग्र तो जरूर ही होता है। कारण, एक तो कृष्ण के वियोग में जो हालत

---

[१] जमनालालजी के जनक श्री कनीरामजी।

[२] अग्रवाल महासभा का अधिवेशन।

गोपियो की थी, सो मांजी, काकाजी तथा मेरी हो रही है। आने के नाम से भी शांति नही मिलती, क्योकि जाना पहले दीखता है। ज्यादा जवाबदारी देखकर यही होता है। ईश्वर कैसे बेड़ा पार करेगा, परन्तु आगे के विचारों से जरा शांति मिलती है कि स्वराज्य मिले या न मिले, ऐसा समय आने से मनुष्य-जन्म के कर्त्तव्य का तो पालन हो गया। जैसे कृष्ण ने अर्जुन से कहा था—'जीते तो कीर्ति मिलेगी, मरे तो मोक्ष।'

परतु अब एक विचार है कि एक जगह रहकर काम करें। बापू के हाथ का पत्र देखने से शांति मिलती है। आपने सूत कातने का लिखा, सो आपके बदले जहातक होगा मै कातूगी,। आपका काम दूसरा है। आपसे सूत कातना नही होगा।

बाबू, ओम, दादाजी अभी तो सब ठीक है। दादाजी कच्चाई लाते है। मै उनके संतोष के माफिक व्यवस्था रखती हूं। मैंने विचार किया है कि दूसरो के आशीर्वाद के बदले माता-पिता का ही हार्दिक आशीर्वाद मिले तो कितना अच्छा !

बबई शौक के लिए तो आने का विचार नही है? आपका वहा रहना निश्चित हो तो मै विचार करूं।

जेवर मैंने छाटे है। सब नही निकालेगें। कुछ राधाकिसन के ब्याह के बारते है, कुछ अभी मोती के बनाये, सो नये है। वे नेवटियों को कमला के लिए मोल दे देंगे। गढाई नही लेंगे। दो-चार घर में रखेंगे। बहुत-से-बहुत १५ हजार का निकलेगा। सो मूल खादी के काम में न लगाकर ब्याज भले ही धरमादे मे लगा दो। खादी के काम में भी मूल जाने का डर है। आगें आपकी मरजी।

और खादी का काम करो तो ५-४ आदमियों का साथ जरूर रखना, नही तो आप कहातक देखोगे, आपके पीछे काम बहुत है।

पत्र माजी को बंचवा दूगी। प्रार्थना शाम की तो हो जाती है। सवेरे कभी चूकती है। अभी दो रोज से तो सेठीजी भी आ बैठते है और कहते है कि घर-घर को आश्रम बना दो। आप किसी प्रकार की चिंता मत करना। आपको थोड़ा आराम मिलता तो ठीक था। आपकी हितेच्छु,

जानकी

: ३६ :

बंबई, २२-७-२२

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम् । तुम्हे पत्र लिखने का विचार करता रहा, परन्तु लिख नही सका । कल ही से थोडा अवकाश मिला है । यहा आये बाद तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा रोज किया करता हू । आशा है, इस पत्र का जवाब शीघ्र भेजोगी । मेरा स्वास्थ्य ठीक है । यहा आजकल बरसात बहुत है । मैं दूकान पर ही रहता हू । बंगले में प मोतीलालजी (नेहरू) के घर के लोग रहते हैं । उनकी सब व्यवस्था अपनी ओर से हो रही है । आज मोतीलालजी के लडके जवाहरलालजी की पत्नी कमलाबहन का आपरेशन होनेवाला है । आपरेशन मामूली है ।

बच्चो की पढाई, खासकर कमला और प्रहलाद की, बराबर हो, इसका ध्यान रखना । प्रहलाद को खूब प्यार करना । वह तुम्हे हृदय से मा समझने लगे तब समझना चाहिए कि तुम्हारा हृदय पूरी तरह पवित्र और प्रेममय हो गया है । हृदय की परीक्षा तो और भी हो सकती है । वह तो तुम्हारे साथ ही है । खासकर शाति की मा पर असर डालना ।

तुम्हारे लिए आज चि राधाकिसन के साथ 'प्रेमाश्रम'[१] किताब भेज रहा हू । तुम इसे अवश्य विचार के साथ पढ लेना । यह तुम्हे 'टाम काका की कुटिया' से भी ज्यादा पसद आयेगी । बडे अच्छे ढग से लिखी है । कई बातें जीवन में लेने योग्य है । तुम इसे पढना । फिर चि गगाविसन को पढने देना । औरो से भी पढवाना । अध्ययन तो तुम्हारा चलता ही होगा ।

श्री किशोरलालभाई (मशरूवाला) वर्धा गये थे । एक रोज आश्रम में ठहरे । तुम्हें पता भी नही लगा । उन्हें घर लाकर १-२ रोज रखना चाहिए था । भोजन कराना था । खैर, इस बार तो तुम्हे मालूम नही हुआ । आगे के लिए ध्यान रखना । आश्रम में या दूकान पर ऐसे व्यक्ति आयें तो अवश्य सत्सग का लाभ लेना चाहिए । मैने कल उनके यहा ही भोजन किया । वह

---

१ प्रेमचंदजी का प्रसिद्ध उपन्यास

दर्शाना है। आज अहमदाबाद जायेंगे। मेरा विचार भी वर्धा आने का है। शायद जल्दी ही आता हूं।

बच्चों को प्यार।

तुम्हारा,
जमनालाल

: ३७ :

बंबई, ९-१०-२२

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। तुम्हें मालूम ही है कि मैं वर्धा ८ या ९ ता० को पहुंचनेवाला था। परन्तु यहां एक बड़े रुई-व्यापारी का काम बिगड़ गया, जिससे लोगों के लाखों रुपये रह गये। अपनी दूकान में तो जोखिम नहीं है, परन्तु चिरंजीलालजी की दूकान में अंदाजन ५० हजार रुपये उसमें रह गये। इसकी तजवीज आपको ही करनी पड़ेगी। और भी बहुत-सी गड़बड़ है। इसलिए मुझे यहां आना पड़ा। ईश्वर सब ठीक करेगा।

अभी ५-७ रोज दूकान के काम के लिए मुझे यहां ठहरना पड़ेगा। मदालसा व ओम् की नाराजी कम होगी। बच्चों को राजी रखना। किसी तरह चिंता मत करना।

तुम्हारा,
जमनालाल

पुनश्च—पूज्य बापूजी बच्चों की व तुम्हारी याद करते थे। तुमपर उनका बहुत प्रेम और श्रद्धा है, ऐसा उनके कहने से मालूम होता था। उनका स्वास्थ्य ठीक है।

: ३८ :

बंबई, १३-८-२३

प्रिय देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर संतोष हुआ। तुम्हें पूज्य बापू के उपदेश के अनुसार अपने दोष ही अधिक देखने चाहिए। ज्यों-ज्यों अंतःकरण शुद्ध होता जायगा दूसरों के दोष देखने की आदत जायगी। मुझे पूरा विश्वास है।

न, सहनशीलता एव प्रेम पूरी तरह उभरकर पाठको के सामने आता है। ी भी बात को अपनाने के बाद माताजी उसके पीछे पूरी लगन से लग ी थी, परिणाम फिर चाहे कुछ भी क्यों न हो, उसकी उन्हे परवा नही ती थी। यद्यपि माताजी पर पति-भक्ति का इतना असर था कि अधिकतर ते तो उनकी तर्क-बुद्धि मे आसानी से उतर जाती थी; लेकिन इसके बावजूद ा बाते उनकी तर्क-बुद्धि में नही उतरती थी, उन्हे वे आसानी से ग्रहण नही रती थी। दोनो के विचारो की इस मधुर मुठभेड़ की झलक इन पत्रो में कई स्थानो पर पाठको को दिखाई देती है।

इस सग्रह मे वही पत्र दिये जा सके हैं, जो आजादी की लड़ाई के दिनो की उथल-पुथल से बच पाये। प्राप्य पत्रो में से प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण पत्र ले लिये गये हैं। व्यक्तिगत विषय की वजह से पत्रो को छोड़ा नही है। माताजी की भी राय रही कि पत्र छापने ही हो तो सभी तरह के छपने चाहिए। इसलिए इस पुस्तक मे कई पत्र एकदम व्यक्तिगत भावो को प्रदर्शित करते है तो भी उन्हे छाप दिया गया है।

वास्तव मे पिताजी का सारा जीवन ही इतना सार्वजनिक हो गया था कि उसमें अपनी पत्नी के सदर्भ मे भी कुछ व्यक्तिगत अथवा गोपनीय नहीं रह गया था। अत निजी होते हुए भी इन पत्रो का सार्वजनिक महत्त्व है।

हमारा विश्वास है कि घरेलू तथा सामाजिक समस्याओ में दिलचस्पी रखनेवाले पाठको को तो ये पत्र उपयोगी होगे ही, साथ ही राजनीति के, विशेषकर गाधी-युग के स्वतंत्रता-सग्राम के इतिहास के, विद्यार्थियों के लिए भी ये लाभदायक होगे।

इन पत्रो की पृष्ठभूमि माताजी ने स्वय लिख दी, इससे इनकी भूमिका समझने में पाठको को मदद मिलेगी।

इन पत्रों की पाडुलिपि तैयार करने में हमें सर्वश्री रतनलाल जोशी, मदनलाल जैन तथा मुकुल उपाध्याय की जो मदद मिली है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

—सपादक

'सप्ताह' (भागवत) पढ़नेवाला ठीक मिल जाय तो अपने मंदिर में या घर पर बैठाकर भी तुम सुन सकती हो। मैं आज पू. जाजूजी को लेकर साबरमती-आश्रम जा रहा हूं। वहां आश्रम 'यंग इंडिया', 'नवजीवन', 'हिन्दी-नवजीवन' बुनाईशाला (जो हमारे खादी-विभाग के नीचे चल रही है) आदि के लिए मकान वगैरा की व्यवस्था करनी है व उनका कार्य देखना है। पूज्य बापू ने जेल से जो सूत कातकर भेजा है उसका भी प्रबंध करना है। उसकी खूब कीमत आवेगी। हमें वहां २-३ रोज लगेंगे। वहां से आकर ३१ ता. तक वर्धा पहुंचने का विचार है। वहां की तरफ ५-१० रोज घूमकर कलकत्ता की तरफ जाना पड़ेगा।

प. मोतीलालजी के पत्रवाला के लिए मुझे यहां रहने की जरूरत नहीं है। उनके लिए प्रबंध कर दिया जायगा।

क्या अबके सोमवती (अमावस) को तुमने चर्खे काते?

तुम्हारे पत्र से कितनी चर्चा मालूम होती है। उसे पूरा उपदेश देकर सांख्य-ज्ञान बराबर समझना।

तुम्हारा,
जमनालाल

३९

पूना,
आश्विन वदी १२,
(७-१०-२३)

श्री गो० देवी,

सप्रेम वंदेमातरम्। आज तार दिया सो पहुंच गया होगा। मुझे जोर का बुखार कई दिनों तक आया। बुखार पित्त के कारण हो गया था। अबकी बार पूज्य दादाजी का श्राद्ध चिंचवड़ के आश्रम में जाकर किया। उस दिन जीमने में अंदाज ३॥ बज गये थे। पहले दिन भी भोजन नहीं किया था। दूध, फल लिये थे। बहुत करके इसी कारण से बुखार हुआ होगा। सभा-सोसाइटियों के कारण बंबई में भी शांति बराबर नहीं मिली थी। बापूजी की जन्म-गांठ के लिए २-३ दिन के लिए यहां आया था। ५-६ दिन में दसहरे तक वर्धा आने का विचार है। वहां आकर पीछे थोड़े दिन जाजूजी के पास रहूंगे। तभी शांति मिल सकेगी।

इस वक्त श्री रामनारायणजी व चि. रामनिवास की माताजी न प्रेम के साथ हमारी खूब सेवा-खातिर का इंतजाम कर रखा है। निवास की माजी के विचारों में खूब परिवर्तन होता जाता है। एक दिन जरूर इनसे देश को बहुत लाभ पहुंचेगा।

छोटा बाबू तुम्हारे मन-माफिक होगा। अब तुम्हारी आशा पूरी हो गई। तुम्हारी याद तो खूब आती रहती है। बाकी अब तुम्हारी फिकर करने की जरूरत नही रही। तुम खुद अपना तथा दूसरो का सब इंतजाम कर सकोगी, ऐसा विश्वास हो गया है। जलवे के वक्त तुम्हारी इच्छा हो उस मुताबिक करना। दान वगैरा देना हो तो गरीब सत्पात्रो को ही खादी बाटना ठीक रहेगा। रु ११०००) जलवे की मिती को तुम्हारे जमा हो जायगे। तुमको अपना आगे का समय ज्यादा परमार्थ में ही लगाना पडेगा। परमात्मा ने किया तो सब ठीक हो जायगा। बाबू को, कमला को, राजी रखना। तुम अपनी खूब सम्भाल रखना।

पू काकाजी व मा को कह देना कि मेरी फिकर नही करे। इस तरह कभी-कभी बुखार वगैरा आना तो मामूली बात है।

जमनालाल का वदेमातरम्

: ४० :

ओगल, १०-१-२४

प्रिय देवी,

सप्रेम वदेमातरम्। कोकनाडा-काग्रेस ने रचनात्मक कार्य, खास-कर खादी के कार्य को खूब महत्व दिया है। खादी-बोर्ड को विशेष अधिकार भी दिया है। पूज्य राजगोपालाचारी, मगनलालभाई गाधी, शंकरलाल बेकर आदि की सलाह से खादी-बोर्ड का काम एकदम शुरू करना पड़ा है। मैं इस बोर्ड का सभापति हू। इस कारण मुझे भी साथ मे घूमना पड़ता है। दक्षिण भारत मे अदाजन एक मास घूमना पड़ेगा। यहा खादी-प्रचार का कार्य खूब हो सकता है। कई गावो को देखने का मौका लगा, तो मालूम हुआ कि यहा सूत कातनेवाली स्त्रिया और बुननेवाले जुलाहो की काफी अच्छी संख्या है। इन्हे बराबर रूई देकर इनसे सूत, कपड़ा लेने व बेचने

की अच्छी व्यवस्था हो जाय, तो पालन करने की काफी आय पैदा कर सकता है। यहां घूमने से पूज्य बापूजी द्वारा खादी को महत्व देने का कारण पूरी तरह समझ में आया। अब तो गांव चर्खा चले बिना शांति नहीं मिलती। मद्रास में चर्खा चालू रखने की व्यवस्था करता है। हिन्दुस्तानी का भी प्रचार इस प्रांत में अच्छा हो रहा है।

इस बार की कांग्रेस ठीक हुई। प्रबंध बहुत ही उत्तम था। तुम्हारी गैरहाजिरी कई बार याद आया करती थी। सब बड़े-छोटे नेता प्रतिनिधि एक ही मंडप में हाजिरी में रहते थे। मोटरगाड़ी की जरूरत नहीं पड़ती थी। स्टेशन भी वहींपर बना दिया गया था। आखिरी दिन तमाम नेता-प्रतिनिधियों का, हिन्दू, मुसलमान, ब्राह्मण अन्त्यज सबका—एक ही पंगत में बैठकर भोजन हुआ। पंगत बहुत बड़ी और देखने लायक थी।

अबकी बार बंबई पहुंचा हूं। ५-६ परिचित मित्रों की मृत्यु का एक साथ समाचार मिला। इससे यही मन में आता है कि समय व्यर्थ न गंवाया जाय। जितना सेवा-कार्य बन सके कर लेना ही परम कर्तव्य है। बाकी सारी चिंता-फिक्र छोड़कर अब तो खासतौर पर खादी-प्रचार और हिन्दुस्तानी-प्रचार का ही काम करने का विचार है। इससे करोड़ों देश-भाइयों की सेवा करने का अवसर मिलेगा। ये दोनों कार्य ऐसे हैं, जिनमें किसी भी तरह की शंका व संदेह की गुंजाइश नहीं। आशा है, तुम भी इन दोनों कार्यों में खूब सहायता करोगी।

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक होगा। बालक सब ठीक होंगे। प्राय बच्चों का सब भार तुम्हारे ही ऊपर डाल देना पड़ता है। मन में इस बात का विचार तो आता है, परन्तु दूसरा संतोषकारक उपाय दिखाई नहीं देता।

तुम्हे थोड़ा भी समय मिले तो नियमपूर्वक कातना जरूर शुरू कर देना। आश्रम में प्रार्थना करने या गीता समझने में थोड़ा समय लगाना चाहिए। अब हम लोगों को निश्चित जीवन बिताना होगा। कमजोरियां खूब याद आया करती हैं। परमात्मा की कृपा और तुम्हारे तप की मदद से, आशा है कि एक दिन मन को पूरा संतोष मिल सकेगा। तुम्हारे लिए मेरे हृदय में भक्ति व पूजा का भाव रहता है, परंतु मेरी ओर से व्यवहार में वह पूरी तरह प्रकट नहीं हो पाता है। यह देखकर कई बार दुःख और

यहा से रात को एक रोज के लिए श्रीरामेश्वरजी जाना निश्चित हुआ है। तुम्हारे बिना यहा जाने से मन में विचार तो होता है, परन्तु एक बार हो आना ही निश्चय किया है। वहापर भी खद्दर का थोडा प्रचार होना सभव है। कांग्रेस-कमेटी कायम हो गई है। इस मुसाफिरी में से २४ ता० को फिर मद्रास पहुचेगे। वहा से मैं अकेला बबई होकर वर्धा आने का विचार कर रहा हू। श्री राजाजी, शकरलालभाई महाराष्ट्र प्रात में घूमकर ७-८ रोज में, मेरे वर्धा पहुचने के बाद, वहा आयेंगे और बाद में मुझे इनके साथ बिहार, पजाब आदि जगह जाना पडेगा।

पूज्य बापूजी का आपरेशन तो ठीक हो गया। एक बडी भारी घाटी में से बचाव हुआ। अब तो ऐसा मालूम होता है कि शायद सरकार उन्हे शीघ्र छोड दे। देश और विलायत की हालत दिन-ब-दिन खराब होती जाती है। सरकार भविष्य का विचार करेगी तो छोडने में ही उसे एक प्रकार से लाभ है। परन्तु बापूजी अगर हम लोगो के, याने देश की जनता के, जोर से छूटें तो उसका विशेष प्रभाव पडेगा। खैर, जो होगा ठीक ही होगा।

अब अपने घर मिल का कपडा भी न आने पावे, इसका ख्याल रखना। चि० गगाबिसन को भी लिखा है कि चि० लक्ष्मण के विवाह में शुद्ध खादी के सिवा दूसरे किसी भी कपडे का उपयोग होना अनुचित होगा, यह ख्याल रखना।

छोटा बाबू (राम) राजी होगा। कमलनयन ठीक होगा। पत्र दो तो बबई देना।

जमनालाल का वदेमातरम्

पुनश्च—पू० राजाजी के साथ रहने से बडी शाति मिलती है। चर्खे और खद्दर के ही प्राय स्वप्न आया करते है।

: ६२ :

दिल्ली, आसोज ब० ९, स० १९८१
(२१-९-२४)

प्रिय देवी,

यहां पहुचने की सूचना तार और पत्र द्वारा भेज चुका हू।

मुझ दुख व स्मरण बना रहता है। तुम्हारे साथ बातचीत करते समय जितना प्रेम हृदय में रहता है, वह मै प्रकट नही कर सकता। इस त्रुटि का मुझे पता है। परन्तु मै तुम्हे इतना ही विश्वास दिलाना चाहता हू कि बहुत अशो मे मैं तुमको अपने-आपसे ज्यादा पवित्र समझता हू। तुम्हारे हृदय में उदारता व प्रेम अधिक बढ़ते हुए देखने की मेरी इच्छा रहती है। आशा है, आश्रम-जीवन से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष लाभ तुम्हे अवश्य मिलेगा, जिसमे हम लोगो के भावी जीवन में सुख की वृद्धि होगी। मुझमें जो टोकने की आदत पडी हुई है, उसका दुखदायक उपयोग बोलचाल में होता है। आशा है, इसे तुम क्षमा करोगी। असल में मेरी यह इच्छा रहती है कि तुम मुझसे अधिक उदारता, प्रेम व सत्यता अपने जीवन में प्राप्त करो।

कमला के विवाह के लिए फतेहपुर लिख दिया गया है कि मेरे विचार तो उन्हे मालूम ही हैं। इतने पर भी उनकी इच्छा हो तो वे जिस महूर्त पर चाहेंगे विवाह कर दिया जायगा।

(यह पत्र अधूरा ही मिला है।)

४४

बबई, माह ब० १२, स १९८१
(२१-१-२५)

श्री प्रिय देवी,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। कमल की पढ़ाई के बारे में समाचार लिखा, सो पढकर सतोष हुआ।

तुमने हल्दी का सेवन किया, पर इसपर पथ्य बराबर विधिपूर्वक पालने का खयाल रखना, जिससे पूरा फायदा हो। मेरा स्वास्थ्य इस समय बहुत ही ठीक है।

चिरजीव मदालसा का पत्र मिला। पढ़कर खुशी हुई। इसे खूब पढ़ाने की इच्छा है, सो खूब प्यार से पढ़ाने का ध्यान रखना। अगर यह आजन्म ब्रह्मचर्य से रहकर स्त्री-जाति की सेवा करने लायक बन जाय तो यह हमारे कुल का भूषण होगी। इसे अभीसे भविष्य की दृष्टि रखकर तैयार करना।

मेरा विचार यहा से शनिवार को रवाना होकर इतवार को सामगाव

और सोमवार को वर्धा जाने का है। यहां से ८-१० ता० तक साबरमती जाने का है। पाच-सात रोज वहां रहना भी चाहता हूं।

चिरंजीव कमला को जितने गुण जब प्रेम के साथ तुम दे सको, देने का समय है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४५ :

सीकर, ३०-३-२५

प्रिय देवी,

मैं फतेहपुर से कल यहा आया। यहा के राजा व प्रजा में जकात आदि के मामलों में मतभेद हो रहा है। उसे सुलझाने में दो रोज लगेंगे, ऐसा दिखता है।

महासभा इस वर्ष बहुत सफलतापूर्वक हो गई। बहुत लोग जमा हुए थे। अच्छे-अच्छे लोग आये थे। प्रबंध बड़ा सुन्दर था।

चि० कमला का विवाह आगामी वर्ष चैत सुदी में होने की बात है। अगर आगामी वर्ष से पहले कोई श्रेष्ठ मुहूर्त निकलेगा तो बात अलग है। बहुत करके चैत में ही होगा।

मेरा विचार जयपुर, अजमेर होकर यू० पी० बनारस आदि स्थानों में भाई शंकरलाल बेंकर के साथ जाने का है। आश्रम ता० २० के लगभग आना होगा। ऐसा मालूम होता है।

पूज्य जाजूजी सीकर, फतेहपुर रहकर बीकानेर गये।

बच्चों को प्यार से रखना। चि० शांति को सभा का हाल कह देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ४६ :

वर्धा, २-७-२५

प्रिय देवी,

पत्र मिला। मैं यहा आकर नागपुर, जबलपुर गया था। कल वापस आया हूं। चि० मोतीलाल आर्वीवाले (राधा के पति) की आज सुबह

पृष्ठभूमि

इन पत्रों के बारे में क्या लिखू ! नौ वर्ष की उम्र मे जमनालालजी से विवाह हुआ। कच्ची उम्र में ही अपने पीहर जावरा को छोड़कर अपरिचितो के बीच रहने वर्धा आई। जावरा मे तो मैं खुली थी, आजाद थी, इधर-उधर खेलती-कूदती थी। लेकिन यहा तो घूघट में ही बैठे रहना पड़ता। ऐसा लगता, किसी जेल में छोड़ दी गई हू। वर्धा में पल-पल भारी लगता। धार्मिक सस्कार मुझे बचपन में मा से मिले थे और ये सस्कार उम्र के साथ बढ़ते गए। जो भी किताब पढ़ती, उसे भगवान की वाणी समझकर उसकी सब बातो का पालन करने का प्रयत्न करती, जैसे पति या बड़ो के बाद भोजन करना, पति की जूठी थाली मे भोजन करना, पति के अगूठे को धोकर पीना आदि।

जमनालालजी भी धार्मिक प्रवृत्ति के थे। यह वृत्ति उन्हें दादी सदीबाईजी से विरासत में मिली थी। यद्यपि घर में धन तो भरपूर था, लेकिन वे उसके मोह से अलिप्त ही रहे। उनका जन्म सीकर मे कनीरामजी के यहा हुआ था। पाच वर्ष की उम्र मे ही वर्धा मे बच्छराजजी के यहा गोद आए। एक बार दादा थोड़े पर नाराज हो गए। जमनालालजी ने बच्छराजजी के लिए लिखकर पत्र छोड़ दिया कि मुझे आपके धन से मोह नहीं है और वह साधु होने के विचार से घर त्याग कर चले गये। बाद मे बच्छराजजी के बहुत समझाने पर वह वापस आने को तैयार हुए।

विवाह के आठ-दस वर्ष बाद तक बिलकुल परदे में ही रही। पत्र लिखने का सवाल ही कहा आता उस समय ! जमनालालजी कहीं बाहर जाते तो दूकान पर पत्र आ जाता था और वहीं से मुझे समाचार मिलते थे। कुछ समाचार उन्हें देने होते तो दूकान के द्वारा ही भिजवाती। उस समय की मर्यादा ही कुछ ऐसी थी, यहा तक कि मुनीम-गुमाश्तों के सामने बच्चों को भी गोद में नहीं लेते थे।

एक बार जमनालालजी कलकत्ता गये थे, वहा साइकिल चलाते हुए गिर पड़े। घुटनों में चोट आई, दो महीने के करीब खाट पर पड़े रहे। तब जरूर पत्र-व्यवहार चला। उसके अलावा कोई जरिया भी तो नहीं था उनके हाल-चाल जानने का। लेकिन उस पत्र-व्यवहार में स्वास्थ्य-सबंधी उल्लेख ही रहते थे, और कुछ नहीं।

नागपुर में मृत्यु हो गई। इलाज वगैरा तो नागपुर जाने के बाद बहुत हुआ। परतु बीमारी बहुत बढ गई थी। चिंता की बात तो हुई, परतु यह करने से कोई लाभ नही।

चि० मदालसा आनद के साथ शारदा-मदिर में रहती हो तो वहा छोड देना। दो-चार रोज शाता व कमला के पास आ-जा सके, इसका प्रबंध कर देना, नहीं तो तुम्हारे साथ ले आना। तुम्हे अब एक बार पहले वर्धा आना पड़ेगा। यहा कुछ रोज रहकर बाद में जावरा जा सकोगी। तुम्हे ठीक लगे तो उमा को भी साथ ले आना। पर मेरा तो ख्याल है कि उमा का मन लग जायगा। मन तो मदालसा का भी लग जायगा। परन्तु अभी इतना जोर देना ठीक नहीं होगा। चि० रामेश्वरप्रसाद को भी कह देना कि अगर उमा, मदालसा शारदा-मन्दिर में रहे तो वह भी २-४ रोज में घूमते-फिरते देख आया करेगा, जिसमें तुम्हें सतोष हो और वहा के लोगो की राय हो उस प्रकार करना और एक बार यहा जल्दी आ जाना। मेरा यहा से १४ ता० को कलकत्ता जाना सभव है। तुम्हारे यहा आने से पूज्य काकाजी, माजी को भी सतोष हो जायगा।

चि० शाता व कमला राजी-खुशी होंगी। चि० शाता का घर आदि का प्रबध हो गया होगा। सब हाल लिखने को कहना। पढाई आदि का सामान जो यहा जरूरी हो वही साथ में लाना। बाकी वहापर छोड देना। अगर शाता के लिए आश्रम में घर का प्रबध नही हुआ तो अपना घर उनके हवाले कर आना। भूलना नही।

जमनालाल का वदेमातरम्

: ४७ :

साबरमती-आश्रम, भादवा सु० ७
(२६-८-२५)

प्रिय देवी,

मैं यहा इतवार को सुबह पहुचा। चि० शाति, कमला, ओम बहुत राजी है। चि० कमला तो बहुत समझदार, सुशील तथा गंभीर मालूम होती है। चि० ओम का मन शारदा-मदिर में लग गया। वहा रहने से भविष्य में इसकी भली प्रकार उन्नति होगी, ऐसा मालूम होता है। दीपावली की

छुट्टियों में ओम को वर्धा बुलवा लेंगे। इन बच्चो की ओर से तुम चिंता नही रखना।

मैं आज रात को यहा से रवाना होकर एक रोज रास्ते में आबू पहाड़ का दृश्य देखता हुआ शनिवार ता. २९ को सुबह अजमेर पहुंच जाने का विचार रखता हू। मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। राजपूताना से ता० २२ को सीधे पटना कमेटी के लिए जाना पड़ेगा। उसके थोड़े रोज बाद वर्धा आना सभव है।

पूज्य काकाजी के पास प्रायः तुम थोडी देर बैठा करती होगी। उनका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। चि० मदालसा को धोत्रे पढ़ाते होंगे। यदि नही तो इनके पास करीब एक घंटा रोज सुबह पढाने का प्रबंध करना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

४८ .

पटना, भादवा सुदी ५, स० १९८२
(२३-९-२५)

प्रिय देवी,

तुम्हारे दो पत्र मिले। पढ़कर सतोष हुआ। तुमने तुम्हारे विचार या जो शका थी वह बापूजी को कह दी, यह जानकर अधिक खुशी हुई। मेरी फिलहाल पू० बापूजी से घरेलू मामले के बारे में बात नहीं हो पाई है। कारण, वह बहुत काम में लगे हुए हैं। बात होने पर तुम्हे भी मालूम होगा ही।

कुमारी मणिबहन का वर्धा आना कठिन है। फिलहाल तो वह पढ़ा रही है। बाद में भी वह वर्धा रहना पसंद नही करेगी। उसका स्वभाव तेज है। अब चि० कमला का विवाह हो वहांतक उसे तुमने अपने पास रखने का लिखा सो ठीक है। वर्धा रहकर भी पढाई की व्यवस्था हो सकेगी। जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वैसा ही प्रबंध कर दिया जायगा। चि० दाता बंबई रहना पसद करेगी या वर्धा, यह उसकी मर्जी पर ही छोड़ना होगा। उसकी हार्दिक इच्छा वर्धा रहने की होगी तो वर्धा रह सकती है, नहीं तो बंबई। जैसी उसकी इच्छा हो।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ४९

मलनाचक (बिहार),
विजयादशमी (२७-९-२५)

प्रिय देवी,

पत्र तुम्हारे मिले थे। जवाब में पत्र लिखा था, सो मिला होगा। पूज्य बापूजी तुम्हारे बारे में बात करते थे। तुम्हारी बातचीत का उनपर बहुत ही अच्छा असर हुआ, ऐसा दिखाई देता है। तुमसे वह बहुत आशा रखते हैं।

चि० कमला और ओम, वर्धा आ गई होंगी। मेरा भागलपुर होकर बीकानेर जाने का विचार हो रहा है। बीकानेर ता० ४ को पहुंचना होगा। वहां से चुरू, कोटा आदि होकर बबई होते हुए ता० २० तक दीपावली पर वर्धा पहुंचने का विचार है। जावरा में एक दिन ठहरना हुआ था। चि० कृष्णा को १०० रुपये हाथ खर्च के लिए दिये थे। तुम्हें मालूम रहे, इसलिए लिख दिया है।

गोटा पटने में तो बढ़िया नहीं होता है तथा सूत शुद्ध नहीं बनता। बनारस में देकर बनाया जावे तो शुद्ध बन सकता है। तुम्हें जिस प्रकार का कपड़ा चाहिए, उसकी फहरिस्त बनाकर तैयार रखना। मेरे वहा आने पर बनारस लिख दिया जायगा। चि० कमला का विवाह बबई में करने के बारे में पूज्य बापूजी की इच्छा मालूम हुई। इस बारे में और विचार करना पड़ेगा।

पूज्य काकाजी व मा को प्रणाम कहना। चि० रामगोपाल के यहा बालक हुआ होगा। लिखना।

बीकानेर से कोई सामान मगाना हो तो लिख भेजना।

जमनालाल का वदेमातरम्

. ५० .

कोटा, १३-१०-२५

प्रिय देवी,

पत्र तुम्हारा नहीं मिला। मैं जोधपुर, जयपुर, सीकर जाकर यहा आया हू। इधर राजा-महाराजाओं से मिलकर बात करने में

छुट्टियों में ओम को वर्धा बुलवा लेंगे। इन बच्चो की ओर से तुम चिंता नही रखना।

मैं आज रात को यहा से रवाना होकर एक रोज रास्ते में आबू पहाड का दृश्य देखता हुआ शनिवार ता. २९ को सुबह अजमेर पहुच जाने का विचार रखता हूं। मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। राजपूताना से ता० २२ को सीधे पटना कमेटी के लिए जाना पडेगा। उसके थोडे रोज बाद वर्धा आना सभव है।

पूज्य काकाजी के पास प्राय तुम थोडी देर बैठा करती होगी। उनका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। चि० मदालसा को धोत्रे पढाते होंगे। यदि नही तो इनके पास करीब एक घंटा रोज सुबह पढाने का प्रबंध करना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

४८

पटना, भादवा सुदी ५, स० १९८२
(२३-९-२५)

प्रिय देवी,

तुम्हारे दो पत्र मिले। पढकर संतोष हुआ। तुमने तुम्हारे विचार या जो शंका थी वह बापूजी को कह दी, यह जानकर अधिक खुशी हुई। मेरी फिलहाल पू० बापूजी से घरेलू मामले के बारे में बात नही हो पाई है। कारण, वह बहुत काम में लगे हुए हैं। बात होने पर तुम्हें भी मालूम होगा ही।

कुमारी मणिबहन का वर्धा आना कठिन है। फिलहाल तो वह पढ़ रही है। बाद में भी वह वर्धा रहना पसद नही करेगी। उसका स्वभाव तेज है। अब चि० कमला का विवाह हो वहातक उसे तुमने अपने पास रखने का लिखा सो ठीक है। वर्धा रहकर भी पढ़ाई की व्यवस्था हो सकेगी। जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वैसा ही प्रबंध कर दिया जायगा। चि० शांता बंबई रहना पसद करेगी या वर्धा, यह उसकी मर्जी पर ही छोड़ना होगा। उसकी हार्दिक इच्छा वर्धा रहने की होगी तो वर्धा रह सकती है, नहीं तो बंबई। जैसी उसकी इच्छा हो।

जमनालाल बजाज का वंदेमातरम्

: ४९

मल्काचक (बिहार),
विजयादशमी (२७-९-२५)

प्रिय देवी,

पत्र तुम्हारे मिले थे। जवाब में पत्र लिखा था, सो मिला होगा। पूज्य बापूजी तुम्हारे बारे में बात करते थे। तुम्हारी बातचीत का उनपर बहुत ही अच्छा असर हुआ, ऐसा दिखाई देता है। तुमसे वह बहुत आशा रखते हैं।

चि० कमला और ओम, वर्धा आ गई होगी। मेरा भागलपुर होकर बीकानेर जाने का विचार हो रहा है। बीकानेर ता० ४ को पहुंचना होगा। वहा से चुरू, कोटा आदि होकर बबई होते हुए ता० २० तक दीपावली पर वर्धा पहुंचने का विचार है। जावरा में एक दिन ठहरना हुआ था। चि० कृष्णा को १०० रुपये हाथ खर्च के लिए दिये थे। तुम्हे मालूम रहे, इसलिए लिख दिया है।

गोटा पटने में तो बढिया नहीं होता है तथा सूत शुद्ध नही बनता। बनारस में देकर बनाया जावे तो शुद्ध बन सकता है। तुम्हे जिस प्रकार का कपडा चाहिए, उसकी फहरिस्त बनाकर तैयार रखना। मेरे वहा आने पर बनारस लिख दिया जायगा। चि० कमला का विवाह बबई में करने के बारे में पूज्य बापूजी की इच्छा मालूम हुई। इस बारे में और विचार करना पडेगा।

पूज्य काकाजी व मा को प्रणाम कहना। चि० रामगोपाल के यहा बालक हुआ होगा। लिखना।

बीकानेर से कोई सामान मगाना हो तो लिख भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५०

कोटा, १३-१०-२५

प्रिय देवी,

पत्र तुम्हारा नहीं मिला। मैं जोधपुर, जयपुर, सीकर जाकर यहा आया हू। इधर राजा-महाराजाओं से मिलकर बात करने से

खादी का काम राजपूताना में खूब हो सकता है, ऐसा दिखाई देता है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। आज यहां से अजमेर जाकर वहा से उदयपुर राणाजी से मिलने जाने का विचार है। आशा है, तुम और बालक राजी-खुशी होंगे। पू० काकाजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। मेरे साथ भाई मणिलालजी कोठारी और बनारसीप्रसाद झुनझुनवाला आदि हैं। किसी प्रकार की चिंता मत करना। चि० हरिकिशन का क्या हाल है? पत्र का जवाब शीघ्र दे सको तो पोस्ट मास्टर, उदयपुर के पते से भेजना, नहीं तो फिर कांग्रेस-कमेटी, मुरादपुर (पटना) के ठिकाने से भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५१ :

बबई, दीपावली (३०-११-२५)

प्रिय देवी,

आज मैं यहा कुशलपूर्वक पहुच गया। मेरा वर्धा जल्दी आने का विचार तो था और है भी; परन्तु ५-७ रोज इधर लगेंगे, ऐसा दिखता है। पू० बापूजी ता० २० को यहा आवेंगे और ता० २१ को चले जावेंगे। बाद में मुझे दो रोज के लिए पूना जाना पड़ेगा। श्री रामनारायणजी तथा चि० रामनिवास की माता का स्वास्थ्य ठीक नही है, ऐसा सुना है। श्री बैजनाथजी रुइया का देहान्त हो गया। इसलिए भी मिलना है तथा इनसे खद्दर के कार्य में महायता लेनी है। मेरा भी ३-४ रोज यहां कार्य हैं। [illegible] की है। शायद [illegible] काकाजी [illegible] वगैरा की क्या इच्छा है, लिखना, ताकि बात करने म [illegible]। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। राजपूताना में ठीक सफलता मिली ऐसा समझना, अनुचित नही होगा। वर्धा पहुचने का निश्चित समय पीछे लिखूगा। बच्चे सब अच्छे होंगे।

शायद चि० शाति मेरे साथ वर्धा आवे। पू० काकाजी व मां को दीपावली का प्रणाम कहना। चि० हरिकिशन कहा है, उसकी तबियत कैसी है?

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५२ :

बंबई, (१०-१-२६)

प्रिय जानकीदेवी,

पत्र तुम्हारा मिला। मैं रात पूना से वापस आया। चि० कमला के विवाह के बारे में चि० मणि बहन का पत्र मिला। वर्धा में विवाह होता तो खुशी होती, अगर दोनों ओर से सिद्धांत के माफिक विवाह होने में पूरी सुविधा होती। वह नहीं है। सामनेवालों को वर्धा में इस प्रकार विवाह करने में बहुत-सी बाधाएं हैं। इससे आश्रम का ही नक्की करना उचित है।

कुछ रोज बाद साबरमती जाने का मेरा विचार है। तब और खुलासा बातें पू० बापूजी से कर ली जायगी। पू० बापूजी ने पू० काका साहब आदि को पहले से ही कमला का विवाह आश्रम में करने का विचार लिख दिया है। मुझे यह पूना में मालूम हुआ।

कमला का मन जिन-जिन गहने-दागीनों पर हो, वे अवश्य उसे दे दिये जायं। इसमें मेरी पूर्ण सम्मति है। परन्तु मेरी समझ यह है कि गहनों पर जितना ज्यादा तुम उसका मन समझती हो, उतना शायद नहीं है। गहने नहीं मिलते, इसलिए वह पढ़ाई पर मन नहीं लगाती यह बात मेरे विचार से सही नहीं है। मेरी समझ से एक तो उसके आस-पास का वातावरण बहुत पुराने ढंग का है, दूसरे उसकी याददाश्त थोड़ी कमजोर है इसलिए उससे याद करना आदि नहीं बनता। उसे ठीक तरह से समझाकर पढ़ाया जाय तो लाभ हो सकता है। अब तो पढ़ाई का भार मणिबहन पर छोड़ दिया है उसे ठीक लगे उसके मुताबिक किया जाय।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५३ :

बंबई, (१०-१-२६)

प्रिय देवी,

मैं आज साबरमती जाकर आया। पू० बापूजी को १०४ डिग्री ज्वर हो गया था। उनका वजन तो हाल में ९७५ रतल रह गया है। इसलिए बहुत ख्याल था कि दूसरी जगह बदली जाय या अन्य इन्तजाम किया जाय। विचार करने पर डाक्टरों की राय हुई कि अभी दूसरी जगह ले जाने की जरूरत नहीं।

खादी का काम राजपूताना में शुरू हो सकता है, ऐसा दिखाई देता है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। आज यहां से अजमेर जाकर वहां से उदयपुर महाराणाजी से मिलने जाने का विचार है। आशा है, तुम और बालक सानंद-खुशी होंगे। पू० बापूजी का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। मेरे साथ भाई मणिलालजी कोठारी और [illegible] आदि हैं। किसी प्रकार की चिंता मत करना। चि० हरिकिशन का क्या हाल है? पत्र का जवाब शीघ्र दे सको तो पोस्ट मास्टर, उदयपुर के पते से भेजना, नहीं तो फिर कांग्रेस-कमेटी, मुजफ्फरपुर (पटना) के ठिकाने से भेजना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

· ५१ ·

बंबई, दीवाली (१०-११-२५)

प्रिय देवी,

आज मैं यहां कुशलपूर्वक पहुंच गया। मेरा वर्धा जल्दी आने का विचार तो था और है भी; परन्तु ५-७ रोज इधर लगेंगे, ऐसा दिखता है। पू० बापूजी ता० २० को यहां आवेंगे और ता० २१ को चले जावेंगे। बाद में मुझे दो रोज के लिए पूना जाना पड़ेगा। श्री रामनारायणजी तथा चि० रामनिवास की माता का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, ऐसा सुना है। श्री बैजनाथजी　　देहान्त हो गया। इसलिए भी मिलना है तथा इनसे शहर के कार्य में लेनी है। मेरा भी ३-४ रोज यहां कार्य है।

पूज्य बापूजी की इच्छा कमला का विवाह बंबई में　　श्री केशवदेवजी नेवटिया भी बंबई पसंद करें। अब　　वगैरा की क्या इच्छा है, लिखना, ताकि बात करने　　स्वास्थ्य ठीक है। राजपूताना में ठीक सफलता　　नहीं होगा। वर्धा पहुचने का निश्चित　　अच्छे होंगे।

शायद चि० शांति मेरे साथ　　का प्रणाम कहना। चि० हरि

दिखाई देती है। किस बात से होगी, समझ में नही आती। वर्धा झंझट का घर तो है ही, पर चेहरे पर असर तो कुछ मेरे ही कारण कुछ कर न सके हो इस रुकावट (के विचार) से हो तो भले ही हो। अथवा मीटिंगो से होगी। बीमारी बुखार वगैरा तो है नही। खाने-पीने का तो आपको ज्यादा असर होता ही नही। वर्धा में भोजन तो अनुकूल ही मिला होगा। खैर, कृष्णदासजी को कुछ न लिखें। मुझे विशेष चिंता नहीं है।

आपकी चिंता मिटना पहली बात है। आपको घर की तरफ की जो चिंता है तो वह एकदम मिटा दी जायगी और बाहर की हो तब तो ऐसे ही चलेगा। पर सिर पर बोझ नहीं रहना चाहिए।

माजी, काकाजी यहा आ जाय तो भी अच्छा है। जगह तो बहुत हो गई है। उनको लिखकर देखना। बच्चे बराबर पढने जाते हैं। आप प्रसन्न रहना। मुझे विशेष विचार तो नहीं है। सिर्फ ज्यादा घूमने से एक जगह रह नही सकते है, यह विचार आ जाता है। हरिभाऊजी वगैरा को आपके साथ जरा घूमने में मजा आता ह, इसलिए बार-बार राजपूताना बुलाते हैं। और आप जबान देकर बिक जाते हैं।

कल बापूजी की जयती (चर्खा बारस) है। गये वर्ष, कहते है, जयती के बाद बीमारी बढी थी। कदाचित इस बार भी बुखार जोर करे। ५-६ जनो को आ गया है। आशा है ज्यादा जोर तो न होगा। मीराबहन को अभी यहा न आने दें तो ठीक।

मैं अपने वर्ग (क्लास में) पढने आई हू। मदालसा कहती है कि ओम् सोई है, उसका शरीर गरम है। शायद धूप में घूमने से बुखार आ गया हो। घर जाकर देखूगी। बुखार होगा तो एक दो-रोज में चला जायगा। आप अपनी तबीयत के हाल लिखना। यह पत्र पहुंचे तबतक आपने कोई पत्र न भेजा हो तो अपनी तबीयत की खबर तार से दीजिये।

कमला की मा

: ५५ :

वर्धा, ६-११-२६

प्रिय देवी,

ता० ३-११ का सबका मिलकर लिखा हुआ पत्र मिला। कल दीपावली

गरमी में भले ले जाया जाय। आश्रम में ही आराम से रह सकें, थोड़ा आराम लेते रहे तो जल्दी वजन बढ़ जायगा और एक हाथ में जो दर्द रहता है, वह भी कम हो जायेगा। पूज्य बापू ने दवा लेना और आराम करना स्वीकार कर लिया है। परमात्मा ने किया तो जल्दी ठीक हो जायंगे। बाकी आश्रम में सब ठीक है।

गोमतीबहन ने करीब १५ दिन के उपवास किये थे, सो बहुत कमजोर हो गई है। नाथजी महाराज वहींपर है। अब थोड़ा फल लेना शुरू किया है। ८-१० रोज में चलने-फिरने लग जाने की आशा है। उपवास, बीमारी के कारण, बापू ने कराये थे।

चि० कमला के विवाह के बारे में बातचीत के लिए श्री केशवदेवजी यहा आ गए थे। पूज्य बापू की बीमारी तथा मित्रो के आग्रह के कारण इस प्रश्न पर फिर विचार करना जरूरी हो गया था कि विवाह आश्रम में किया जाय या बबई या वर्धा में। श्री केवशदेवजी ने तो कह दिया था कि अब विवाह आश्रम में ही करना उचित होगा। तो भी पू० बापूजी के विचार फिर से जानना जरूरी था। उन्होने तो कहा है कि सब तरह का विचार करते हुए मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना ठीक मालूम होता है। फिर भी चि० रामेश्वरप्रसाद की इच्छा भी देख लो। वह भी वही आगया था। उसने कहा कि मुझे तो आश्रम में ही विवाह करना अधिक पसंद है। उसने आश्रम मे विवाह करने के जो कारण बतलाये, उससे पूज्य बापूजी को व मुझे बहुत ही संतोष हुआ। अब विवाह आश्रम में होना निश्चित हो गया है। मेरा बुधवार तक वर्धा आना होगा, । वहा आने पर और विचार कर लिया जायगा।

चि० मणिबहन को कह देना कि बापू की ओर से पत्र न आने से चिंता न करे।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५४ :

साबरमती, आसोज वदी ११ (२-१०-२६)

प्राणदा,

पत्र पहले आये थे। कृष्णदासजी से कुछ खबर पाई है। आपने मना तो कर दिया था, मगर फिर भी उन्होने इतना कहा कि आपके चेहरे पर थकावट

फिर गाधीजी आये हमारे जीवन में—तूफान की तरह। जमनालालजी उन्हें अपने पिता के रूप में ग्रहण किया और आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनके विचारों के अनुसार अपने को ढालने का प्रयत्न करने लगे। गाधीजी के विचारों का जमनालालजी पर गहरा असर पड़ा। अब वह अक्सर बाहर रहने लगे—बापू की रचनात्मक प्रवृत्तियों में पूरा हिस्सा लेते। तब पत्रों का यह सिलसिला शुरू हुआ। उन्होंने मेरा जीवन अपने विचारों के अनुसार ढालना शुरू किया। लेकिन वह अपने विचार मे समझाकर ही गले उतारते थे। जो बात अच्छी होती थी, उस ओर इशारा-भर कर देते थे। लेकिन मुझपर पति-भक्ति का तो रग चढा हुआ था। उनका पत्र मेरे लिए वेद-वाक्य जैसा होता था। इस सिलसिले में उनके एक पत्र का ध्यान आता है, जिसने मेरे जीवन को नया मोड दिया। जमनालालजी बापू के साथ दौरे में थे। वही से उन्होंने मुझे पत्र लिखा कि बापू का आदेश है कि गहने त्याग दो। उन्होंने लिखा—"बापू ने आज के भाषण में कहा कि सोना कलि का रूप है। दूसरो मे ईर्ष्या पैदा करता है, चोर का मन चोरी करने का होता है, शरीर पर मैल जमता है, नाक-कान मे दुर्गन्ध आती है, ब्याज का नुकसान होता है।"

ये बाते वह रूबरू कहते तो शायद कुछ बहस हो जाती। लेकिन उनका पत्र तो मेरी जन्म-पत्री। बस, चिट्ठी मेरे सामने थी और मै एक-एक गहना उतारकर सामने तख्त पर रखती जा रही थी, यहा तक कि पैर की चादी की कडी भी उनकी इच्छा होने के कारण हिम्मत रखे उतारकर रख दी। मारवाडी समाज में प्रथा के अनुसार यह कडी मरने पर ही खोली जाती थी। गरीब-से-गरीब के पैर में भी कडी तो रहती ही थी।

शुरू में गाधीजी के विचार बहुत क्रान्तिकारी लगे। लेकिन ज्यो-ज्यो समझ बढी, मुझपर उनका असर होने लगा। जमनालालजी के पत्रो का ... १९२१ मे मैने उन्हें लिखा, "अपने इस परिवर्तन मे ब ... में भी तो प्राण ही बापू वे ... बापू ही दीखते है। ... आत्मबल ... आशीर्वाद मागती हू कि बापूजी का आपको तथा मुझे वह सद्बुद्धि प्रदान करे। हो। आपकी इच्छानुसार

जमनालालजी के जीवन में सादगी, पवित्र आचरण और उच्च संस्कारो का बहुत महत्त्व था। हमारे बच्चे भी इन्ही सस्कारो मे पले, इसका वह बहुत ध्यान रखते थे। उनके लगभग सब पत्रो में इस बात का उल्लेख रहता था, और मै भी उनके आदेश के अनुसार ही बच्चो को उचित वाता-

दिखाई देती है। किस बात से होगी, समझ में नही आती। वर्धा झझट का घर तो है ही, पर चेहरे पर असर तो कुछ मेरे ही कारण कुछ कर न सके हो इस रुकावट (के विचार) से हो तो भले ही हो। अथवा मीटिंगों से होगी। बीमारी बुखार वगैरा तो है नही। खाने-पीने का तो आपको ज्यादा असर होता ही नही। वर्धा में भोजन तो अनुकूल ही मिला होगा। खैर, कृष्णदासजी को कुछ न लिखें। मुझे विशेष चिंता नही है।

आपकी चिंता मिटना पहली बात है। आपको घर की तरफ की जो चिंता है तो वह एकदम मिटा दी जायगी और बाहर को हो तब तो ऐसे ही चलेगा। पर सिर पर बोझ नही रहना चाहिए।

माजी, काकाजी यहा आ जाय तो भी अच्छा है। जगह तो बहुत हो गई है। उनको लिखकर देखना। बच्चे बराबर पढने जाते है। आप प्रसन्न रहना। मुझे विशेष विचार तो नही है। सिर्फ ज्यादा घूमने से एक जगह रह नही सकते है, यह विचार आ जाता है। हरिभाऊजी वगैरा को आपके साथ जरा घूमने में मजा आता है, इसलिए बार-बार राजपूताना बुलाते है। और आप जबान देकर बिक जाते है।

कल बापूजी की जयती (चर्खा बारस) है। गये वर्ष, कहते है, जयती के बाद बीमारी बढी थी। कदाचित इस बार भी बुखार जोर करे। ५-६ जनो को आ गया है। आशा है ज्यादा जोर तो न होगा। मीराबहन को अभी यहा न आने दें तो ठीक।

मै अपने वर्ग (क्लास मे) पढने आई हू। मदालसा कहती है कि ओम् सोई है, उसका शरीर गरम है। शायद धूप मे घूमने से बुखार आ गया हो। घर जाकर देखूगी। बुखार होगा तो एक दो-रोज में चला जायगा। आप अपनी तबीयत के हाल लिखना। यह पत्र पहुचे तबतक आपने कोई पत्र न भेजा हो तो अपनी तबीयत की खबर तार से दीजिये।

कमला की मा

: ५५ :

वर्धा, ६-११-२६

प्रिय देवी,

ता० ३-११ का सबका मिलकर लिखा हुआ पत्र मिला। कल दीपावली

हां गई। चि० कमलनयन ने पगड़ी बांधकर बड़े ठाट-बाट से पूजा की। मुझे
तो दूसरे काम में अधिक समय लगाना पड़ा। आश्रम में सभा थी।
आशा है, तुम पू० बापूजी के उपदेश तथा सत्संग से अधिक उदार तथा
ध्येयपूर्ण जीवन बिताने का निश्चय करके यहां आओगी। अब सच बात तो
यह है कि तुमसे मुझे अपने और घर के सुधार-परिवर्तन में पूरी सहायता
मिलनी चाहिए। अब थोड़े वर्ष मानसिक सुधारों की बागडोर तुम अपने
हाथ में ले सको तो मुझे कितना सुख और संतोष मिले। तुम चाहो तो पूज्य
बापूजी व विनोबा की सहायता से अपने जीवन को और घर को ठीक कर
सकती हो। मेरी कमजोरी भी दूर कर सकती हो। परन्तु यह बात तब ही हो
सकती है जब तुममें आत्मविश्वास पैदा हो और तुम आदर्श प्राप्ति का भार
अपने ऊपर लो। मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ५६ :

साबरमती, १५-११-२६

प्राणेश्वर,

दीपमालिका की पूजन बापू ने कराई सो ठीक। आपको काम था, सो
आपको तो छिप जाने पर भी लोग छोड़ेंगे नहीं।
आपने लिखा कि बापूजी की संगत से उदार तथा ध्येयपूर्ण जीवन
बिताने का निश्चय करके आओगी, सो उदारता में तो मैं जानती हूं थोड़ा
फरक तो जरूर पड़ेगा। कारण, यहां पैसों की छूट न होने पर भी जरूरत होने
पर राजाओं से ज्यादा उदारता देखकर बार-बार विचार आया करता है।
जीवन भर का निश्चय करना खेल थोड़े ही है, वह तो मुश्किल से होगा।
जैसे-जैसे ज्ञान होगा, त्याग हो जायगा। त्याग से ज्ञान नहीं होगा। मैं देखती
हूं और अनुभवी विद्वानों की सलाह ली तो यही मिला कि इच्छा के विरुद्ध
करने से बेलाबेन को अभी तक शांति नहीं हुई। इतनी समझदारी से रहती
है, खुद समझदार भी है, परन्तु जबरन शांति रखनी पड़ने पर ताराबेन व
बेलाबेन को हिस्टीरिया की बीमारी होगई। और इन बातों का असर
पुरुषों को भी अशांत करता होगा। बाकी मेरे लिए यह बात तो नहीं है।
आपने लिखा कि घर का परिवर्तन होना चाहिए, सो मेरी पूरी इच्छा

है। परन्तु एक बरस आप घर पर रहकर एक बार पटरी बैठा दो। कारण यह है कि आज तक तो मैंने घर का भार कभी उठाया नहीं और अब हिम्मत कम तो कुछ स्वार्थ हो तभी कष्ट उठाया जाय। स्वार्थ यही कि घर के आदमी से ही घर कहलाता है। दूसरी बातें तो फिर आप से ही हो जाती है। आपकी कमजोरी तो मैं सभालने की चेष्टा करूं हिम्मत भी रखूं लेकिन कमजोरी तो मुझमें भी है। आपके साथ रहने से जोखिम भी मालूम होती है। बाकी ब्रह्मचर्य के बारे में आपकी जो पालन करने की इच्छा है, वह मेरे लिए भी यह आत्मा से प्रसन्न-सा हो गया है। घर के बारे में बापूजी को अपनी स्पष्ट इच्छा बता दूंगी। आप चिन्ता न करिये।

मुझे आपके खाने-पीने से अशान्ति रहती है। यदि आप घर का बना घी और हाथ का पिसा आटा खाने का भी नियम ले लो तो पूरी शान्ति हो जाय। परन्तु आप तो मुसाफरी खाते हो। फिर से बाहर आवें तब भी उसका दोष नहीं समझते। इसमें सरलपन के सिवाय दूसरी विशेषता मुझे नहीं दीखती।

आपने लिखा कि तुम्हें आत्म-विश्वास होना चाहिए सो उस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती। कारण कि आत्म-विश्वास हुआ तो 'आत्मवत् सर्व-भूतेषु' होने में क्या देर है।

खैर, आपके पत्र से मुझे शान्ति मिली और मेरा विचार आपकी इच्छानुसार करने का है। घर का भार तो हरेक स्त्री उठाती है और अब उठाये बिना जो दूसरे भी काम हम जमाना चाहते हैं सो वैसा होना कठिन है। अपने घर का रंग कुछ निराला ही था। आपको भी इसका अनुभव तो हुआ ही है। अब आप ही ठीक हो जावेगा। आपने आदर्शपन का भार लेने को लिखा सो इसे मन में रख के चले तो हो सकता है।

कमला की मा

· ५७ ·

(इस पत्र का शुरू का पृष्ठ नहीं मिला है।)

साबरमती, (दिसंबर, १९२६)

बापूजी की लिखावट थी कि ४ बजे की प्रार्थना सार्वजनिक है उसमें सबको आना चाहिए। चाहें तो समय बदलने का अधिकार सबको है। स्त्रियों में ज्यादा मत ५ बजे का हुआ। राधाबहन वगैरा का ६ बजे का हुआ।

ज्यादा ४॥ बजे का है, सो ठीक है। मैंने तो ४॥ बजे का ही पसंद किया व जाना शुरू कर दिया है। ४॥ बजे की प्रार्थना के लिए उठना सहज है। पांच बजे के बाद ज्यादा आलस्य आता है। आदत न होने से शरीर दुखने लगता है। ४॥ बजे एक दफा उठ जाने के बाद आनन्द आता है। गंगाबहन, वेला-बहन के साथ स्टेशन तक घूमकर आ जाते है।

आपकी तबीयत की एक रात को बहुत चिंता रही। पर आंसू तो किसको दिखावें यहां। दुनिया में अपना आदमी एक अजब चीज है। उसकी आशा दूसरा कौन पूरी कर सके ?

चाहे जो हो, आपको सब तरह का आराम मिलना जरूरी है। आराम लेने का विचार करने का सोचते तो बहुत हैं, परन्तु आपको पूरा आराम मिल नही पाता। दूसरी जगह घर की-सी स्वतन्त्रता और अपनापन कहीं नही मिलता। और घर मे मनचाही निश्चितता नही मिल पाती। अपने दूर बैठे जैसा विचार करते है, पास आने पर व्यवहार उससे उल्टा हो जाता है। लेकिन अबकी बार आपके आश्रम में आने पर आपकी इच्छानुसार सब बाते करने का निश्चय किया है। और आप हमें क्या दुख देते हैं ? बिना समझे-विचारे कुछ करने को थोड़े ही कहते है। लेकिन किसीने कहा था कि यह तो पांच-सात वर्ष का शनिश्चर है। अब यह उतरने आ गया मालूम होता है। यों तो इन बातो को मानती तो मैं भी नही हू, लेकिन आपकी तकलीफो को देखकर कुछ ख्याल होने लगता है।

आपने नासिक और पूना जाने का इरादा लिखा सो ठीक है। पूना की हवा ज्यादा अच्छी होगी। बाकी घनश्यामदासजी के साथ जहां भी जावें सब अच्छा ही है। दिमाग को आराम तो तभी मिले जब निश्चय करके एक मास आश्रम में ही रहो। और किसी जगह आराम नही मिलेगा। बाकी अभी तो उनके साथ का ही विचार रखो, यहां आओगे जब देख लेंगे।

कमला की मां

: ५८ :

साबरमती, १७-८-२७

प्राणेश,

आपके दो कार्ड आये। मुझे बुखार आपके जाने के बाद से नहीं आया।

कुनैन की एक गोली लेकर नीम के पत्तो का रस नमक डालकर रोज सवेरे पीती हू। बच्चो के फोड़े सूख गये। वर्ग मे जाते हैं। आप वर्धा कितने दिन रहनेवाले हैं? कमलनयन की चिट्ठी आई थी। अब आप स्वरू मिल ही लोगे। आपने कहा था कि कमलनयन को दो बरस मेरे हाथ मे दे दो, पीछे देखना। सो मुझे जैसा लिखोगे, या कहोगे, वैसा मजूर है।

नौकरो की तरफ की शिकायत अब नही आवेगी। एक बात से निवृत्त हो गये। और भी सब बातें ध्यान मे तो जमी ही हुई हैं, अमल में लाने के वक्त तो कोई-न-कोई बहाना कमजोरी के कारण आ ही जाता है। खर्च का बधन करो तो पहले मेरा करना, आपका तो किया हुआ ही है।

चर्खा कातने के वक्त की आपकी बैठक तो बहुत ही अच्छी प्रयोग लायक सीधी होती है, यह मैं कहना भूल गई और सामने बडाई करने से तो अपनी बात मानो चली जाती है। अब एक जगह रहोगे तब बापूजी से कहकर पटटे का प्रयोग कराना है। ४-६ महीने मे बहुत फायदा होगा। आजकल शरीर सुडौल तो लगने लगा है, तेज जायगा तो कहा जायगा?

कमला की मा

५९

अहमदाबाद

(जवाब दिया, २७-८-२७ को)

प्राणेश,

अष्टमी का लिखा पत्र मिला। कमलनयन के बारे में सतोष है। परन्तु काशीबहन कहती है कि विनोबा पर पूज्य भाव तो है, पर विनोबा की खुराक में तत्व नही है। प्रभुदास जबसे विनोबा के पास रहा तबसे उसकी जो तबियत बिगडी है तो अब कितना परिश्रम और खर्च करके भी क्या पहले जैसी बननेवाली है। आप आओ जब काशीबहन से मिल लेना। कुछ जल्दी तो है नही। बस इस बात का विश्वास कोई करा दे कि तबीयत के बारे में कभी पछतावा न करना पड़े। फिर तो मैं कहती हू कि पाच वर्ष भी उससे मिलने की इच्छा न करूं। पर काशीबहन का कहना है कि गुलाब और बोरडी

रोज में जाकर आया, मेरे पास वहां का सर्टिफिकेट व मेडल है। गुलाबचंद-जी ने कहा कि मैं भी साइकल पर तो जा सकता हू। तब वह बोला कि मेरा मन तो इस साल भी था, परन्तु अब तो एक साल खादी का काम ही सीखना है। ये बातें, राष्ट्रीय सप्ताह का सूत बुनने के लिए देने गई थी तब अचानक हो गई।

बदरीनारायण जाने की इच्छा तो इस कारण होती है कि आप यात्रा के कारण तो जाओगे नही और आपके सग के बिना जाना मैं पसद न करू। इसलिए काकाजी के कारण सबका ही जाना हो जायगा। आया मौका नहीं गंवाना चाहिए और बालको को भी ऐसी कठिन मुसाफिरी पीछे कौन कराये ? बापूजी से तो मैंने नही पूछा। खास समय लेंगे तो पीछे ही पूछा जायगा। मालूम होता है संग मोटा होगा। बाकी आप सोच लेंगे। मुझे कोई आपत्ति नही है, आपको जिसमे आनन्द है, उसीमें मुझे भी आनन्द है। इस समय अकेले रहने में बहुत-सा अनुभव मिला है। अपनी पिछली भूलो पर भी पश्चात्ताप होता है। आप मुझे पत्र दें, उसमें कमला की मा लिखा करे।

कमला की मां

६२

साबरमती,
(जवाब दिया, २-५-२८ को)

पूज्यश्री,

मगनलालभाई के देहात का दु ख तो सबको लगा है। संतोषबहन, राधा-बहन का आदर्श देखकर तो आश्चर्य होता है। काकाजी के साथ बदरीनारायण जाने के बारे में तो बापूजी जैसा कह देंगे सो तो करोगे ही। पर आपके बारे में डाक्टरों की सलाह ले लेनी चाहिए। खास तो आप जो जवान-जवान हैं, उनके बारे में पूछ लेना चाहिए, कारण कि बूढ़े कभी-कभी सहन भी कर जाते हैं। वैसे तो मैं जानती हू कि आपको अभी बड़ी छिवर भी शांति लेना मुश्किल है। इस कारण यात्रा से कदाचित फायदा हो पहुंचेगा। जितना समझते हैं, उतना ज्यादा विचार करते हैं। वैसे विचार करना अच्छा तो है ही।

और वहां जाना तो काकाजी के आग्रह पर ही है। अपनी तो खास इच्छा

अब है भी नही। कमलनयन को ले जाने का मन था, पर वह मन नही चलाता हो तो फिर छोड देना ठीक है। मैंने तो उसको लिखा ही नहीं, पर उसको मालूम होगा। मालूम होने पर भी वह इच्छा न करे तो वह जाने। मुख्य रूप से आपको शांति व आराम मिले तो फिर कोई विचार करने की जरूरत नही है। बापूजी से तो मैंने कहा था कि 'अगर यहा अथवा कही भी आपको (उनको) जरूरत दीखे तो कहदें।' यह जरूरी नही कि यात्रा पर जाना ही चाहिए। बापूजी कहते थे कि 'जरूरत नही है, वरना तो मैं कहता ही।' सो अब जाना हो तो काम की फिक्र छोड़ दें। यहा बालकों के खाने का इतजाम तो रसोडे में मजे से हो जायगा। यात्रा पर नही जाना हुआ तो कही जाने की जरूरत नही है। आप डाक्टर को दिखाकर लिखना।

बच्चो की व्यवस्था मे आप ही कर लूगी, आप विचार न करें।

कमला की मा

: ६३ :

साबरमती,
(जवाब दिया, ११-७-२८ को)

श्रीयुत,

पत्र नही, कार्ड आज मिला। गुलाबबाई के पास जाने का विचार किया था। तार आया था कि तुरत आओ। पर हमे मालूम नही था कि कबका आपरेशन है व उनका पता क्या है। आज तार आया है तब पता चला कि आपरेशन हो गया। अब यहा बुलाना हो तो आप लिख देना। मेरे न जाने से गुलाबबाई को बुरा लगा होगा, पर पहले से खबर न होने से मैं क्या करती।

यहा रसोड़े मे खाने-पीने का तो ठीक चलता है। मैंने तो चातुर्मास-भर रसोड़े मे खाने का निश्चय किया है और सचमुच कुएं का पानी भी घी समझ-कर पीती हू। अपना वजन भी इसीसे बढ़ाऊंगी, यह भी निश्चय किया है। आखिर में होगा क्या, यह ईश्वर जाने। बच्चों को छोड़कर जाने की सलाह बापूजी के सिवाय और कोई नही देता है। आपको अनुभव लेना हो तो लें।

कल सुबह बहनो की प्रार्थना में व तीन बजे पुरुषों की सभा में रसोड़ा एक करना तो सबसे कबूल करा लिया है। बाकी किस तरह से हँसाते-खेला

कराया, सो तो दोनों सभा में मैं हाजिर थी। इस वक्त सीखने को तो खूब मिलता है और यह दो-चार मास का प्रवास तो जरूर ही देखने लायक है। पूरी जिंदगी का सवाल तो ईश्वर जाने।

मेरे पत्र नहीं देने से आपके मन में विचार आना संभव है। लेकिन राजी-खुशी के समाचार तो कोई-न-कोई लिख ही देता है। कमलनयन का पत्र था कि उसे मियादी बुखार आ गया था, अब ठीक है। मुझे तो जब रामेश्वरजी ने लिखा तब मालूम हुआ। बाकी मैं तो यही अच्छा समझती हूं कि बीमारी की खबर नहीं आनी चाहिए। या तो ठीक हो जाय या मर जाय, तब ही खबर देना अच्छा है।

कमला की मा

६८

कोचीन स्टेट, (मलाबार)
१०-२-२९

प्रिय जानकी,

चि० कमला का नाम का तुम्हारा पत्र कल यहां मिला। उसे मदुरा में ज्वर आ गया। इसलिए उसे वहांपर ही श्री हरिहर शर्मा के साथ वहां के डाक्टर व पू० राजाजी के कहने से छोड़ दिया है। श्री शर्मा सेवा व प्रेम से बहुत ही सज्जन समझे जाते हैं। तुम चिंता नहीं करना। तुम्हारा पत्र उसके पास आज भिजवा देता हूं। उसकी रामेश्वरम् भी जाने की बहुत इच्छा है, सो तबियत बिल्कुल ठीक हो जाने पर उसे रामेश्वरम् भी दिखा दिया जायगा। कन्या-कुमारी देखने की भी उसकी इच्छा है। वह दूसरी बार तुम लोगों के साथ दिखा देंगे। चि० मदालसा के दांत का इलाज बराबर हो गया होगा। चि० कमला बहुत राजी होगी।

हिन्दी-प्रचार का कार्य ठीक चल रहा है। अगर तुम इस मुसाफिरी में मेरे साथ आती तो तुम्हें एक दूसरी दुनिया देखने का भी अनुभव होता। खैर, फिर सही। बरमा में नहीं जाऊंगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

पुनश्च—तुम व कमला मिलकर, पूर्ण हकीकत का पत्र, 'बेंगलोर खादी कार्यालय', फोर्ट, के पते से अवश्य भिजवा देना।